प्राचीन-गुर्जर-काव्यसंग्रहः



PRÂCHÎNA GURJARA-KÂVYASANGRAHA

PART I

EDITED
BY
THE LATE MR. C. D. DALAL, M. A.,
SANSKRIT LIBRARIAN, CENTRAL LIBRARY,
BARODA.

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF
HIS HIGHNESS THE MAHARAJA GAEKWAD OF BARODA.

CENTRAL LIBRARY
BARODA.
1920.

Published by Janardan Sakharam Kudalkar, M. A., LL. B., Curator of State Libraries, Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Manilal Itcharam Desai, at
The Gujarati Printing Press, No. 8, Sassoon Buildings, Circle, Fort, Bombay.

Price Rs 2-4-0

FOREWORD.

Owing to the untimely death of Mr C D Dalal, M.A , the editor, this work is published for the present without its Intorduction and Notes We are also aware that owing to the great pressure of other work that Mr Dalal had on his hands at the time he was editing this work, he could not correct the several mistakes that have crept in the text

Scholars of old Gujarati are only a few in number and those few are not free or prepared to undertake to complete this work just at present Hence this First Part of the work containing only the Text is sent out to the public with a promise that it will be followed soon with a Second Part which will contain a critical Introduction and Notes written by the veteran old Gujarati scholar Mr Keshav Harshad Dhruva, B A , of Ahmedabad.

10-4-20

J S KUDALKAR
Curator of State Libraries.

प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रहः



अनुक्रमणिका.

पद्यसंग्रहः

गद्यसंग्रहः

APPENDICES.



प्राचीनगूर्जरकाव्यसङ्ग्रहः

प्रथमो भागः



रेवंतगिरिरासु



परमेसरतित्थेसरह पयपंकय पणमेवि ।
भणिसु रासु रेवंतगिरे अंबिकदिवि सुमरेवि ॥ १ ॥
गामागरपुरवणगहणसरिसरवरि सुपएसु ।
देवभूमि दिसि पच्छिमह मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥
जिणु तहिं मंडलमंडणउ मरगयमउडमहंतु ।
निम्मलसामलसिहरभरे रेहइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥
तसु सिरि सामिउ सामलउ सोहगसुंदरसारु ।
जाइवनिम्मलकुलतिलउ निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥
तसु मुहदंसणु दसदिसि वि देसदेसंतरु संघ ।
आवइ भावरसालमणउ हलि रंगतरंग ॥ ५ ॥
पोरुयाडकुलमंडणउ नंदणु आसाराय ।
वस्तुपाल वरमंति तहिं तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥
गुरजरधरधुरि धवलकि वीरधवलदेवराजि ।..
बिहु बंधवि अवयारियउ स्रमू दूसममाझि ॥ ७ ॥
नायलगच्छह मंडणउ विजयसेणसूरिराउ ।
उवएसिहिं बिहु नरपवरे धम्मि धरिउ दिढु भाउ ॥ ८ ॥
तेजपालि गिरनारतले तेजलपुरु नियनामि ।
कारिउ गढमढपवपवरु मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु आसारायविहारु ।
निम्मिउ नामिहि निजजणणि कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥
तहि नयरह पूरवदिसिहि उग्रसेणगढदुग्गु ।
आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥
वाहिरिगढ दाहिणदिसिहि चउरियवेहिविसालु ।
लाडुकलहहियओरडीय तहि पसुठाइकरालु ॥ १२ ॥
तहि नयरह उत्तरदिसिहि सालथंभसंभार ।
मंडण महिमंडल सयल मंडप दसह उसार ॥ १३ ॥
जोइउ जोइउ भवियण पेमि गिरिहि दुयारि ।
दामोदरु हरि पंचमउ सुवन्नरेहनइपारि ॥ १४ ॥
अगुण अंजण अंविलीय अंवाडय अंकुल्लु ।
उंबरु अंवरु आमलीय अगरु असोय अहल्लु ॥ १५ ॥
करवर करपट करुणतर करवंदी करवीर ।
कुडा कडाह कयंव कड करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥
वेयल्लु वंजल्लु वउल वडो वेडस वरण विडंग ।
वासंती वीरिणि विरह वंसियालि वण वंग ॥ १७ ॥
सीसमि सिंवलि सिरसमि सिंधुवारि सिरखंड ।
सरल सार साहार सप साग्रु सिग्रु सिणदंड ॥ १८ ॥
पल्लवफुल्लफलुल्लसिय रेहइ ताहि वणराइ ।
तहि उज्जिलतलि धम्मियह उल्लट्ट अंगि न माइ ॥ १९ ॥
वोलावी संघहतणीय कालमेघंतरपंथि ।
मेल्हविय तहिं दिढ घणीघ वस्तपाल वरमंति ॥ २० ॥

(प्रथमं कडवम्)

दुविहि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु ।
कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।
तेण संठाविओ सुरठदंडाहिवो ।
अंबओ सिरे सिरिमालकुलसंभवो ।
पाज सुविसाल तिणि नठिय ।
अंतरे धवल पुणु परव भराविय ॥ १ ॥



धनु सु धवलह भाउ जिणि पाग पयासिय ।
बारविसोत्तरवरसे जसु जसि दिसि वासिय ।
जिम जिम चडइं तडि कडणि गिरनारह ।
तिम तिम ऊडइं जण भवणसंसारह ।
जिम जिम सेउजलु अगि पालाट ए ।
तिम तिम कलिमलु सयलु ओहट्ट ए ॥ २ ॥
जिम जिम वायइ वाउ तहि निज्झरसीयलु ।
तिम तिम भवदुहदाहो तक्खणि तुट्टइ ।
निचलु कोइलकलयलो मोरकेकारवो ।
सुंमए महुयरमहुरुगुंजारवो ।
पाज चडंतह सावयालोयणी ।
लापारासु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥
जलदजालचवाले नीझरणि रमाउलु ।
रेहइ उज्जिलसिहरु अलिकज्जलसामलु ।
वहलवुहुधातुरसभेडणी ।
जत्थ उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।
जत्थ दिप्पंति दिवो सही सुंदरा ।
गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥
जाइ कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहि संकुलु ।
दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडलु ।
मिलियनवलवलिदलकुसुमझलहालिया ।
ललियसुरमहिवलयचलणतलतालिया ।
गलियथलकमलमयरंदजलकोमला ।
विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमला ॥ ५ ॥
मणहरघणवणगहणे रसिरहसिअ किंनरा ।---
गेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।
जत्थ सिरिनेमिजिणु अच्छप अच्छरा ।
असुरसुरउरगकिंनरयविज्जाहरा ।
मउडमणिकिरणपिंजरियगिरिसेहरा ।
हरसि आवंति वहुभत्तिभरनिब्भरा ॥ ६ ॥

सामियनेमिकुमारपयपंकयलंबिउ ।
धरधूल वि जिण धन्न मन पूरइ वंछिउ ।
जो भव कोडाकोडि .... ।
अन्नु सोवन्नु घणु दाणु जउ दिन्नए ।
सेयउ जडकम्मघणगंठि जउ तिन्नए ।
तउ उज्जितसिहरु पाविज्जए ॥ ७ ॥
जम्मणु जोव जीविय तसु तहिं कयत्थू ।
जे नर उज्जितसिहरु पेक्खइ घरतित्थू ।
आसि गुरजरधरय जेण अमरेसरु ।
सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसरु ।
हणवि सोरठु तिणि राउ षंगारउ ।
ठविउ साजणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥
अहिणवु नेमिजिणिंद तिणि भवणु कराविउ ।
निम्मलु चंदरु बिंबे नियनाउं लिहाविउ ।
थोरविक्कंभवायंभरमाउलं ।
ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।
मंडपु दंडघणु तुंगतरतोरणं ।
धवलिय वज्जिरुणझुणिरिकिंकिणिघणं ।
इक्कारसपसहीउ पंचासीय वच्छरि ।
नेमिभुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥
मालयमंडलगुहमुहमंडणु ।
भावडसाहु दालिधुखंडणु ।
आमलसारसोवन्नु तिणि कारिउ ।
किरि गयणंगण सूरु अवयारिउ ।
अवरसिहरवरकलस झलहलइ मणोहर ।
नेमिभुवणि तिणि दिट्ठ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

(द्वितीयं कडवम्)

दिसि उत्तर कसमीरदेसु नेमिहिं उम्माहिय ।
अजिउ रतन दुइ बंध गरुय संघाहिव आविय ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिवि ति न्हवणु करंतह ।
गलिउ लेवमु नेमिबिंबु जलधार पडंतह ॥ २ ॥
संघाहिवु संवेण सहिउ नियमणि संतविउ ।
हा हा धिगु धिगु मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥
सामियसामलधीरचरण मह सरणि भवंतरि ।
इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥
एकवीसि उपवासि तासु अंबिकदिवि आविय ।
पभणइ स पसन्न देवि जय जय सद्दाविय ॥ ५ ॥
उट्ठेविणु सिरिनेमिबिंबु तुलिउ तुरंतउ ।
पच्छलु मन जोएसि वच्छ तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥
णइ वि अंवि''''''कंचण''वलाणइ ।
'''''विंबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥
पढमभवणि देहलिहि देउ छुडि पुडि आरोविउ ।
संघाहिवि हरिसेण तम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥
ठिउ निचलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो ।
कुसुमवुट्ठि मिल्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥
वइसाहीपुंनिमह पुंनवतिण जिणु थप्पिउ ।
पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरु कप्पिउ ॥ १० ॥
न्हवणविलेवतणीय वंछ भवियणजण पूरिय ।
संघाहिव सिरिअजितुरतनु नियदेसि पराइय ॥ ११ ॥
सयलवित्ति कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।
झलहलंति मणिविंवकंति अंविकुरुं आइय ॥ १२ ॥
समुद्दविजयसिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु ।
जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥
राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु ।
पुनवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुसुंदरु ॥ १४ ॥
वस्तपालि वरमंति भूयणु कारिउ रिसहेसरु ।
अट्ठावयसंमेयसिहरवरमंडपुमणहरु ॥ १५ ॥
कउडिजकु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ ।
धम्मिय सिरु धूणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु ।
कल्याणउ तउ तुंगु भुयणु लंघिउगयणंगणु ॥ १७ ॥
दीसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीझरणउमालो ।
इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥ १८ ॥
अइरावणगयरायपायमुद्दासमटंकिउ ।
दिठ्ठु गयंदमु कुंड विमलनिज्झरसमलंकिउ ॥ १९ ॥
गयणगंग जं सयलतित्थअवयारु भणिज्जइ ।
पक्खालिवि तहि अंगु दुक्ख जलअंजलि दिज्जइ ॥ २० ॥
सिंदुवारमंदारकुरवककुंदिहि सुंदरु ।
जाइजूइसयवत्तिविच्छिफलेहि निरंतरु ॥ २१ ॥
दिठ्ठ य छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु ।
नेमिजिणेसरदिक्खनाणनिव्वाणह ठामु ॥ २२ ॥

(तृतीयं कडवम्)

गिरिगरुयासिहरि चडेवि अंबजंवाहिं वंबालिउं ए ।
संमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीठु रम्माउलं ए ॥ १ ॥
वज्जइ ए तालकंसाल वज्जइ मदल गुहिरसर ।
रंगिहिं नचइ वाल पेखिवि अंबिकमुहकमलु ॥ २ ॥
सुभकरु ए ठविउ उच्छंगि विभकरो नंदणु पासिक ए ।
सोहइ ए ऊजिलसिंगि सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ३ ॥
दावइ ए दुक्खहं भंगु पूरइ ए वंछिउ भवियजण ।
रक्खइ ए चउविहु संघु सामिणि सीहसिंघासणी ए ॥ ४ ॥
दस दिसि ए नेमिकुमारि आरोही अवलोइउं ए ।
दीजई ए तहि गिरनारि गयणंगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥
पहिलइ ए सांबकुमारु बीजइ सिहरि पज्जून पुण ।
पणमई ए पामइं पारु भवियण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥
ठामि ठामि रयणसोवन्न बिंब जिणेसर तहिं ठविय ।
पणमइ ए ते नर धन जे न कलिकालि मलमयलिया ए ॥ ७ ॥
जं फलु ए सिहरसमेयअट्ठावयनंदीसरिहिं ।
तं फलु ए भवि पामेइ पेखेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥

गहगण ए माहि जिम भाणु पव्वयमाहि जिम मेरुगिरि ।
त्रिहु भुयणे तेम पहाणु तित्थंमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥
धवलधय चमर भिंगार आरत्ति मंगलपईव ।
तिलय मउड कुंडल हार मेघाडंवर जावियं ए ॥ १० ॥
दियहिं नर जो पवर चंद्रोय नेमिजिणेसरवरभुयणि ।
इह भवि ए भुंजवि भोय सो तित्थेसरसिरि लहइ ए ॥ ११ ॥
चउविहु ए संघु करेइ जो आवइ उज्जितगिरे ।
दिविस बहू रागु करेइ सो मुंचइ चउगइगमणि ॥ १२ ॥
अठविह ए जय करंति अठाई जो तहिं करइ ए ।
अठविह ए करम हणंति सो अठभवि सिज्झइ ए ॥ १३ ॥
अंविल ए जो उपवास एगासण नीवी करइं ए ।
तसु मणि ए अछइं आस इहभव परभव विवहपरे ॥ १४ ॥
पेमिहि मुणिजण अन्नह दाणु धम्मियवच्छलु करइं ए ।
तसु कही नहीं उपमाणु परभाति सरण तिणउ ॥ १५ ॥
आवइ ए जे न उज्जिति घर धरइ धंधोलिया ए ।
आविहो ए हीयह न जंति निप्फलु जीविउ सासुतणउं ॥ १६ ॥
जीविउ ए सो जि परि धन्नु तासु संमच्छर निच्छणु ए ।
सो परि ए मासु परि धन्नु वलि हीजइ नहि वासर ए ॥ १७ ॥
जहिं जिणु ए उज्जिलठामि सोहगसुंदरु सामलु ए ।
दीसइ ए तिहुणसामि नयणसंलूणउं नेमिजिणु ॥ १८ ॥
नीझरण चमर ढलंति मेघाडंवर सिरि धरीइं ।
तित्थह एसउ रेवंदि सिंहासणि जयइ नेमिजिणु ॥ १९ ॥
रंगिहि ए रमइ जो रासु सिरिविजयसेणिसूँरि निम्मविउ ए ।
नेमिजिणु तूसइ तासु अंविक पूरइ मणि रली ए ॥ २० ॥

(चतुर्थ कडवम्)

॥ समत्तु रेवंतगिरिरासु ॥

नेमिनाथचतुष्पदिका

सोहगसुंदरु घणलायन्नु सुमरवि सामिउ सामलवन्नु ।
सखि पति राजल चडि उत्तरिय बारमास सुणि जिम वज्जरिय ॥ १ ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ॥ आंकिणी ॥
श्रावणि सरवणि कडुयं मेहु गज्जइ विरहिरि झिज्जइ देहु ।
विज्जु झबक्कइ रक्खसि जेव नेमिहि विणु सहि सहियइ केम ॥ २ ॥
सखी भणइ सामिणि मन झूरि दुज्जणतणा म वंछित पूरि ।
गयउ नेमि तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ ॥ ३ ॥
बोलइ राजल तउ इहु वयणु नत्थी नेमिसमं वररयणु ।
धरइ तेजु गहगण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥ ४ ॥
भाद्रवि भरिया सर पिक्खेवि सकरुण रोअइ राजलदेवि ।
हा एकलडी मइ निरधार किम ऊवेखिसि करुणासार ॥ ५ ॥
भणइ सखी राजल मन रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।
सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कड डेरा हुंति ॥ ६ ॥
साचउं सखि वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामलकंति ।
घण वरिसंतइ सर फुट्टंति सायरु पुण घणुओहट टुलिंति ॥ ७ ॥
आसोमासह अंसुप्रवाह राजल मिल्हइ विणु नमिनाह ।
दहइ चंदु चंदणहिमसीउ विणु भत्तारह सउ वि वरीउ ॥ ८ ॥
सखि नवि खीना नेमिहिरेसि मन आपणपउं तउं खय नेसि ।
जिणि दिक्खाडिउ पहिलउं छेहु न गणिउ अट्ठभवंतरनेहु ॥ ९ ॥
नेमि दयालू सखि निरदोसु कीजइ उग्रसिणऊपरि रोसु ।
पसुयभराविउ मूकउ वाडु मुझु प्रियसरिसउ कियउ विहाडु ॥ १० ॥
कत्तिग क्षित्तिग ऊगइ संझ रजमति झिझिउ हुइ अतिझंझ ।
राति दिवसु अछइ विलवंत वलि वलि दय करि दयकरि कंत ॥ ११ ॥
नेमितणी सखि मूकि न आस कायरु भग्गउ सो घरवास ।
इमइ इमी सनेहल नारि जाइ कोइ छंदवि गिरनारि ॥ १२ ॥
कायरु किम सखि नेमिजिणंदु जिणि रिणि जित्तउ लखु नरिंदु ।
फुरइ सासु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउं नेमिहि आस ॥ १३ ॥

मगसिरि मग्गु पलोअइ बाल इणपरि पभणइ नयणविसाल ।
जो मइ मेलइ नेमिकुमार तसुणी वेल वहुउ सविवार ॥ १४ ॥
एहु कदाग्रहु तउ सखि मिल्हि करिसि काइ तिणि नेमिहि हिल्हि ।
मंडि चडाविउ जो किर मालि हे हे कु करइ टोहणकालि ॥ १५ ॥
अठभव सेविउ सखि मइ नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।
अवगन्नेसइ जइ मइ सामि लग्गी अछिसु तोइ तसु नामि ॥ १६ ॥
पोसि रोस सवि छंडिवि नाह राग्वि राखि मइ मयणह पाह ।
पडइ सीउ नवि रयणि विहाइ लहिय छिद्द मवि दुक्ख अमाइ ॥ १७ ॥
नेमि नेमि तू करती मुद्धि जुव्वणु जाइ न जाणिसि सुद्धि ।
पुरिसरयणभरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु ॥ १८ ॥
भोली तउ सखि खरी गमारि वरि अच्छंतइ नेमिकुमारि ।
अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नडइ गइवरु लहिउ कु रासभि चडइ ॥ १९ ॥
माहमासि माचइ हिमरासि देवि भणइ मइ प्रिय लइ पासि ।
तइ विणु सामिय दहइ तुसारु नवनवमारिहि मारइ मारु ॥ २० ॥
इहु सखि रोइसि सहु अरन्नि हत्थि कि जामइ धरणउ कन्नि ।
तउ न पती जिसि माहरी माइ सिद्धिरमणिरत्तउ नमि जाइ ॥ २१ ॥
कंति वसंतइ हियडामाहि याति पहीजउं किमह लसाइ ।
सिद्धि जाइ तउ काइत बीह सरसी जाउ त उग्रसेणधीय ॥ २२ ॥
फागुण वागुणि पन्न पडंति राजलदुक्खि कि तरु रोयंति ।
गब्भि गलिवि हउं काइ न मूय भणइ विहंगल धारणिधूय ॥ २३ ॥
अजिउ भणिउ करि सखि विम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पास ।
अनु सखि मोदक जउ नवि हुंति छुहिय सुहाली कि न रुचंनि ॥ २४ ॥
भणइ पासि जइ वहिलउ होइ नेमिहि पासि तनलउ न कोइ ।
जइ सखि वरउं त सामल धीरु घणविणु पियइ कि चातकु नीर ॥ २५ ॥
चैत्रमासि वणसइ पंगुरइ वणि वणि कोयल टहका करइ ।
पंचवाण करि धनुप धरेवि वेझइ मांडी राजलदेवि ॥ २६ ॥
जुइ सखि मानउ मासु वसंतु इणि खिलिज्जइ जइ हुइ कंतु ।
रमियइ नव नव करि सिणगारु लिज्जइ जीवियजुव्वणसारु ॥ २७ ॥
सुणि सखि मानिउ मुज्झु परिणयणु नवि ऊवरि थिउ वंभवयणु ।
जइ पडियइ सुपइ नेमि जीविय जुव्वणु जलणि जलेमि ॥ २८ ॥

वइसाहह विहसिय वणराइ मयणमित्तु मलयानिलु वाइ ।
फुट्टि रि हियडा माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्खिउ कंतु ॥ २९ ॥
सखी दुक्क वीसरिवा भणइ संभलि भमरउ किम रुणझुणइ ।
दीस पंच थिरु जोव्वणु होइ खाउ पियउ विलसउ सहु कोइ ॥ ३० ॥
रमणि पसंसइ राजल कन्न जीह कंतु वसि ते पर धन्न ।
जसु प्रिउ न करइ किमइ मुहाडि सा हउं इक्क ज भुंडनिलाडि ॥ ३१ ॥
जिट्ठ विरहु जिम तप्पइ सुरु घणविओगि सुसियं नइपूरु ।
पिक्खिउ फुल्लिउ चंपइविल्लि राजल मूछी नेहगहिल्लि ॥ ३२ ॥
मूछी राणी हा सखि धाउं पडियउ खंडइ जेवडु घाउ ।
हरिय मूछ चंदणपवणेहिं सखि आसासइ प्रियवयणेहिं ॥ ३३ ॥
भणइ देवि विरती संसार पडिखि पडिखि मइ जादवसार ।
नियपडिवन्नउं प्रभु संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि ॥ ३४ ॥
आसाढह दिट्ठु हियउं करेवि गज्जु विज्जु सवि अवगन्नेवि ।
भणइ वयणु उग्रसेणह जाय करिसु धम्मु सेविसु प्रियपाय ॥ ३५ ॥
मिलिउ सखी राजल पभणंति चिणय जेम नमिरिय खञ्जंति ।
अउगी अच्छि सखि झखि मन आल तपु दोहिल्लउ तउं सुकुमाल॥३६॥
अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु सखि सुख न धाइ ।
हिव प्रिय सरिसउं जीविय मरणु इण भवि परभवि निमि जु सरणु॥३७॥
अधिकु मासु सवि मासहि फिरइ छहरितुकेरा गुण अणुहरइ ।
मिलिवा प्रिय ऊवाहुलि हूय सउ मुकलाविउ उग्रसेणधूय ॥ ३८ ॥
पंच सखीसइ जसु परिवारि प्रिय ऊमाही गइ गिरिनारि ।
सखीसहित राजल गुणरासि लेइ दिक्ख परमेसरपासि ॥ ३९ ॥
निम्मल केवलनाणु लहेवि सिद्धी सामिणि राजलदेवि ।
रयणसिंहसूरि पणमवि पाय बारइ मास भणिया मइ भाय ॥ ४० ॥
नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ।

इति श्रीविनयचन्द्रसूरिकृतनेमिनाथचतुष्पदिका: ॥



उवएसमालकहाणयछप्पय

छप्पयछंद

विजय नरिंद जिणिंदवीरहत्थिहिं वय लेविणु ।
धम्मदासगणि नामि गामि नयरिहिं विहरइ पुणु ।
नियपुत्तह रणसीहराय पडिवोहणसारिहिं ।
करइ एस उवएसमालजिणवयणवियारिहिं ।
सयपंचच्यालगाहारयणमणिकरंड महियलि मुणउ ।
सुद्धभावि सुद्ध सिद्धंतसम सवि सुसाहु सावय सुणउ ॥ १ ॥
रिसहनाह निरहार वरिस विहरिउ अपमत्तउ ।
वद्धमाण छम्मास करइ तप गुणहि निरुत्तउ ।
अवर वि जिणवर दिक्ख लेवि तव तवइ सुनिम्मल ।
तिणि कारणि उपदेशमाल धुरि तप किय बहुफल ।
नियसत्तिसारि अणुसारि इणि तपआदर अहनिसि करउ ।
भो भविय भावि जम्मणमरणदुहसमुद्द दुत्तर तरउ ॥ २ ॥
सव्व साहु तुम्हि सुणउ गणउ जग अप्पसमाणउ ।
कोह कह वि परिहरउ धरउ समरस सपराणउ ।
तिहुयणगुरु सिरिवीर धीर पण धम्मधुरंधर ।
दासपेसदुव्वयण सहइ घणदुसह निरंतर ।
नरतिरियदेवउवसग्ग बहु जह जगगुरु जिणवर खमइ ।
तिम खमउ खंति अग्गलि करी जेम्म रिउदलबल नमइ ॥ ३ ॥
सव्व सुणइ जिणवयण नयणउल्हासिहिं गोयम ।
जाणइ जइ वि सुयत्थ तह वि पुच्छइ पहु कहु किम ।
भद्दकचित्त पवित्त पढम गणहर सुयनाणी ।
न करइ गव्व अपुव्व करवि मनि मन्नइ वाणी ।
छंडीइ मान ज्ञानहतणउ विणउ अंगि इम आणीइ ।
गुरुभत्ति कह वि नवि मिल्हीइ ग्रंथकोडि जइ जाणीइ ॥ ४ ॥
दहिवाहणनिवधूय वीरजिणपढमपवत्तणि ।
चंदनवाल विसाल गुणिहिं गज्जइ गुहिरप्पणि ।

अहनिसि रायकुंयारिसहस सेवइं पय भत्तिहिं ।
जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहिं ।
दिणदिक्खिय देक्खिय आवतु द्रमक साधु सा ऊठि करी ।
अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५ ॥
वाणारसिनयरीनरिंद नामिहिं संवाहण ।
पुर अंतेउर पवर अवर हय गय बहु साहण ।
कन्नासहस सुक्ख अछइ पुण पुत्त न इक्कय ।
राय पत्त पंचत्त लच्छि लिवइ रिउ ढुक्कय ।
नेमित्तिवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्टिहिं चविउ ।
तिणि अंगवीरि अरि त्रासुवी रज्जबंध सहु राहविउ ॥ ६ ॥
कियसिंगारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।
पाणी पडी मुंद्रडी सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।
अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।
भरहेसर वरझाण न्‌ग केवल संपत्तउ ।
गउ चक्कवट्टि विसयारसिहिं रमइ रंगि जणु इम गणइ ।
तसु अप्पकज्ज अप्पिहिं सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥
सेणिय करइ पसंस दुमुहदुव्वयणि निवारइ ।
रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।
सिरककज्जि सिरि हत्थ घल्लि संजम संभालइ ।
मनिहिं बद्ध बहु पाप आप आपिहिं पक्खालइ ।
गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।
तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥
भरहसरिसु बल झुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।
कुण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।
इह ऊपानं नाण माण धरि वच्छर रहियु ।
सहइ भुक्ख बहु दुक्ख तह वि न हु केवल लहियु ।
नियबहिनिबंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जव परिहरइ ।
रिसहेसरनंदणबाहुबलि सयल कज्ज तक्खणि सरइ ॥ ९ ॥
कहिय इंदि अतिरूप सुणिय सुर बंभणवेसिहिं ।
पुहवि पत्त मज्जणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणगार सणंकुमार नरनाह निरंतरु ।
हक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु।
खणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम ग्गहिउ ।
सयसत्त वरिस चारित्तधर सहइ रोग लद्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥
करइ रज्ज कंपिल्लनयरि छक्खंडनरेसर ।
जाइसमरणि जाणि पुव्वभववंधव मुणिवर ।
वोहइ बहु उवएस सहसि पुण तोइ न वुज्झइ ।
भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारस मुज्झइ ।
सो वंभदत्त बंभणि किउ अंध अधिक पातग करी ।
संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरगि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥
सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय निवइ उदाइय ।
पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय ।
खत्तियपुत्त जाणि तिणि देसह कड्ढिउ ।
उज्जेणि पज्जोयराय ओलगइ अणिड्ढिउ ।
इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस बार व्रत धारयुं ।
तिणि दुट्ठि तह वि अवसर लहवि निव उदाइ निसि मारयु ॥१२॥
चंपापुरि सुंनार नारिसयपंचह सामी ।
सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी ।
तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ ।
पढम भज्ज नररूपि विप्पकुलि सो पुण नारीउ ।
सयपंच भज्ज जे चोर तस घरणि इक्कु सा नारि हुय ।
पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विप्पधूय ॥ १३ ॥
कोसंवी ससि सूर वीर वंदइ सविमाणय ।
मिग्गवइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ ।
निसि एकल्ली जाइ पाइ लग्गेवि ग्वमावइ ।
पडिवज्जइ नियदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ ।
सुहभावि शुद्ध केवल भयु भुजग विनाणिहि जाणियउ ।
जिम पवत्तणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥१४॥
जंबूकुमर विलासभवणि पडिवोहइ भज्जह ।
प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परधणकज्जह ।

कणयनवाणुंकोडि छोडि व्रत वंछइ सुहमणि ।
तं पिक्खवि तसु वयणि सयल पडिवुज्झइ तक्खणि ।
सगवीसअधिकसयपंचसिउं रायगिहि संजम लयउ ।
सो दूसमि पंचमगणहरह सीस चरिमकेवलि भयउ ॥ १५ ॥
सुंसुमरागिहिं रत्त पत्त रायगिहिनयरिहिं ।
दास चिलाइपुत्त जुत्त धणघरि बहुचोरिहिं ।
कुंयरि करीय करि नट्ठ दुट्ठ अडविहिं अणुसरिउ ।
वाहर पत्तउ पुट्ठि सिट्ठि पुत्तिहिं परिवरिउ ।
सो रिक्खि दिक्खि त्रिहु अक्खरिहिं खग्गसीस छंडइ करम ।
कीडियहं कट्ठि अढइ दिवसि सहरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥
जायवपुत्त जिणिंदसीस ढंढण गुणजुग्गह ।
अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।
वारवई छम्मास भमइ गुणि रमइ समिद्धउ ।
भुक्ख दुक्ख बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।
मोदक्खसीहकेसरसहिय कर्म कूटि केवल कलिउ ।
संपत्त सिद्धि संपत्ति सुह तपतरू इम पुप्फिय फलिउ ॥ १७ ॥
हुंति जि पंडियपवर अवरदुव्वयणि न कुप्पइ ।
खंदगसूरिसुसीस जेम आपार न लुप्पइ ।
२ पालयकयउवसग्ग लग्ग मण तीहं सज्झाणिहिं ।
जंत्रिहिं जीविय चत्त पत्त सवि सिद्धह ठाणिहिं ।
सो अग्गिदद्ध नरगिहिं गयउ यादव भव भमिसिइ घणउ ।
भो भविय भावि इम कोह अरि खंतिखग्गि हेलां हणउ ॥ १८ ॥
पुज्जइ सुरवर पाय राय नितु नमइं निरग्गल ।
तपि सिज्झइं नवनिद्धि सिद्धि सवि सरइं समग्गल ।
तपह लेस हरिएसबलह जिम जगि जस होवइ ।
न कुलधम न प्पसिद्धि रिद्धि नवि तसु कुइ जोवइ ।
तिंदुय जक्ख पयतलि लुलइ बहुबंभण वोहिय बलिहिं ।
कोसलियधुयपरिणीनि जीय भजीय सुद्धि अच्छिपकुलिहिं ॥ १९ ॥
एसु माहुआचारसार जइ लोभि न बुड्डइ ।
वयरसामि संपत्त नयरि पाडल सम तुट्टइ ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिट्ठिकुमारी ।
कणयकोडिसंजुत्त पत्त सासइं वरनारी ।
गुरुरयणवयणपडिबोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि ।
जिम तेणि मुक्क तिम मुक्कीइ रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥
नंदिसेण दोहग्गनडिउ निद्धणबंभणसुय ।
भवविरत्त चारित्त गहवि तव तवइ अचब्भुय ।
वेयावच्चपसंस इंदकियकसिहिं पहुत्तउ ।
बंधिय अंति नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।
दसचउरसारनरखयरधूयसहसबहुत्तरिरमणिवर ।
सोहग्गसार वसुदेव हुय हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥
पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं ।
गयसुकुमाल मसाणि रहिउ कासगि जिणवयणिहिं ।
बंभणि बंधवि पालि सीसि वइसानर दिद्धउ ।
सिरह सरिस दुकम्म दहवि मुणि तक्खणि सिद्धउ ।
तस दुट्ठदुरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय गमह ।
जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥
थूलभद्द गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ ।
चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगइनिरत्तउ ।
पुव्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।
जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।
खरखग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन ।
जे सीलभाव दुद्धर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥
तवसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अयमन्निय ।
थूलभद्दमुणिसरिसु करिसु तव इम मनि मन्निय ।
अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंबल भणि चल्लइ ।
सहवि अवत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्हइ ।
चंपेवि खालि पडिबोहिउ सुगुरुपासि पत्तउ भणइ ।
निंदीइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥
गुणिअणसरिसउं गव्व म करि मूरख मच्छरि वसि ।
न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गहइ गयमरकसि ।

सुहडभणी संभूतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।
तसु सीसिहिं पुण थूलभद्दमुणिवरगुण खिंसिय ।
तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणतणइ ।
अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि रुणझणइ ॥२५॥
म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।
पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।
वाहुसुवाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।
तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।
परजम्मि बंभिसुंदरि सुभूय महि महिला महियलि सुणउ ।
सिरिरिसहभरहवाहुवलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुन्नहतणउ ॥ २६ ॥
अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्खण ।
इण कारणि बहुकट्ठ अप्पफल कहइ वियक्खण ।
छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अन्नानिहिं ।
पारण पुण इकवीसवारजलधोइयधानिहिं ।
सो तामलि रिसि एरिस तपी मास दुन्नि अणसणि सरिउ ।
ऊपन्न इंद्र ईसाणि तिणि मुक्खमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥
कंवलरयणविनाणि जाणि जग उत्तमचंगिम ।
नरवरपिक्खणि जाइ माइ पुत्तह पभणइ इम ।
आवि इक्क खण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।
लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।
न क्रयाणउं कुइ एउ सामि तुम्ह सालिभद्द य वयण सुणि ।
भववासविरत्त चरित्त लिइ छंडि सुक्ख सहु कणयमणि ॥ २८ ॥
अयवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि पसिद्धउ ।
नलिणीगुलमविचार सुणवि तक्खणि पडिबुद्धउ ।
अज्जसुहत्थिमुणिंदहत्थि वय लेवि मसाणिहिं ।
कासगि रहिउ सीयालि खद्ध मण लग्गु विमाणिहिं ।
सुहझाणि ठाणि तिणि सुर हुओ रमणि बत्तिसे व्रत लिउ ।
तसु नंदणि तिणि थानकि पछइ महाकालदेउल किउ ॥ २९ ॥
रायगिहि मेयज्ज भज्जनववर विवहारिउ ।
पुव्वमित्त सुरि बोहि दिक्ख दुक्खिहिं लेवारिउ ।

विहरंतउ तिहिं पत्त हुड्डसोनारह मंदिरि ।
क्रौंचि कणय जव खद्ध वद्ध वद्धउ तिणि तस सिरि ।
दृढघाइ दिट्ठि दुइ नीकलीय ढलिय धरणि निचलु भयउ ।
तस पंखिप्राण रक्षा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥
धणगिरिघरणिसुनंदउयरि जायउ जाईसर ।
छम्मासिउ पिउपासि वयर संपत्तउ वयधर ।
तस समीवि मुणिकज्जि गुरिहिं वायण अणुजाणीय ।
धन्न सीहगिरिसीस जेहिं मन्निय इय वाणीय ।
जे माणगण मनि परिहरी सुगुरुवयण इम सद्दहइ ।
ते सुद्ध साधु सुकुलीण सविगुणनिहाण गुरुपटि लहइं ॥ ३१ ॥
संगमसूरि गिलाण वासि संजमविहिं रक्खइ ।
धम्मच्छलि तस सीस दत्त गुरुदोस निरिक्खइ ।
खित्तविहार सविज्ज पिंड अंगुलि दिप्पंतिय ।
नित्यवास नितु सरसु असणु दीवय मणि चिंतिय ।
मन्नंतउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।
घोरंधयार घण सद्द करि सम्मदिट्ठि सुर सिक्खवइ ॥ ३२ ॥
वद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहिं आवइं ।
गोसालउ चउसाल आप तित्थयर भणावइ ।
मंखलिपुत्तसरूव कहइ पहु पुच्छिउ सीमिहिं ।
जिणवरसंमुह मुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।
तं पिक्खि सुगुरुपरिभव असह सुनक्खत्त मुनि विन्चि थयउ ।
तिणि तेजि दड्ढ आराधना करवि सग्गि अच्चुति गयउ ॥ ३३ ॥
नाहियवादि नरिंद नयरि सेतंबी पएसी ।
पाससीस विहरंत पत्त तहिं गणहर केसी ।
नरयगमणि इकचित्त सुगुरुवयणिहिं पडिबोहिउ ।
सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं सोहिउं ।
लहुकालि काल करि सु जि सरिउ सूरिआभसुविमाणि सुर ।
इम दुरियदुक्ख दूरिहिं हणी सयल सुक्ख साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥
तुरमिणिपुरीनरिंद दत्त बंभणकुलि बहुबल ।
माउलकालिगसूरिपासि पुच्छइ जन्नह फल ।

अंगपीड अंगमिय सुगुरु सच्चं चिय जंपइ ।
जागि जीववधि नरय सुणवि सु जि कोपइं कंपइ ।
अहिनाण जाण सत्तमदिवसि मलप्रवेश मुहि तुझतणइ ।
दक्खिन्न दुट्ठभय परिहरिय धम्मवयण मुणि इम भणइ ॥ ३५ ॥
आसि मरीइ मुणिंद भरहसुय नियवय छंडइ ।
कियपरिवायगवेस रिसहपहुसरिस त हिंडइ ।
पडिवोहइ वहुलोय दिक्ख जिणपासि लिवारइ ।
अन्नदिवसि अतिकुटिल कपिल तसु वयण विचारइ ।
तसु शिष्यकाजि फुड नवि कहइ इत्थ उत्थि वहु धम्म छइ ।
भव कोडिसागर भमिउ हुउ वीरजिण तउ पछइ ॥ ३६ ॥
कन्हमरणि वलभद्द तवइ तव तुंगियगिरिसिरि ।
जाइ सरण इक हरिण रहइ अहनिसि रिषिपरिसरि ।
कट्ठकज्जि रहकार पत्त वनि साख कपावइ ।
जिमणवेल जाणेवि लेवि मुणि मृग तहिं आवइ ।
ओ दियइ दान ओ सुद्धतप ओ विहुगुण मनि चिंतवइ ।
सिरि पडइ डाल समकाल त्रिहुं वंभलोय सुरगति हवइ ॥ ३७ ॥
पूरणसिद्धि विभेलगामि लिइ तापसदिक्खा ।
दोण खयरजलथलचरह अप्प चिहुभागिहिं भिक्खा ।
वारवरिस वहुकट्ठ छट्ठतप करइ दयाविण ।
पायालिहिं चमरिंद चमरचंचाहिव हुय तिण ।
अभिमाणि सग्गि सोहम्मि गयउ वज्रदंड पिक्खवि पुलिउ ।
सिरिवीरनाहपयतलि रहिउ तउ सयल वि धंधलु टलिउ ॥ ३८ ॥
सुसुमारपुररोहि कहइ निव सउणसमीहओ ।
वारत्तयरिपि भीयवालप्रति भणइ म वीहउ ।
इयवयणह वलि धंधमारि पज्जोय सु जित्तउ ।
नेमित्तिउ भणि हसइ राउ रिसिपासि पहुत्तउ ।
इम गिहिपसंग सुट्टयमुणिह थोडउ अइमालिन्नकर ।
परिहरइं दूरि इण कारणिहिं सव्वसंग चारित्तधर ॥ ३९ ॥
चंदवडिंस नरिंद नयरि साकेइ सुसावय ।
निश्चिइं नियआवासि सुद्ध सामाइय ठावय ।

दीवअवधि कासग्ग करिय निचल हुइ पालइ ।
दासी पुण दीवेल घल्लि चउपहर उजालइ ।
पूरिय प्रतिज्ञ प्रहउग्गमणि परम प्रीति पामिउ पवर ।
सुकुमालअंग सुहझाणमण सग्गलोइ संपन्न सुर ॥ ४० ॥
सावय सागरचंद रहिउ कासग्गि महावनि ।
कमलामेलाहरणवैर नभसेन धरइ मनि ।
घल्लइ सिरि अंगार तह वि सो झाणनिरत्तउ ।
पोसहवय दृढ पालि टालि दुह सग्गि पहुत्तउ ।
जइ हुंति दुसह उवसग्ग सहइ स गिहत्थ सुकुमालतणु ।
ता अइदुद्धरचारित्तधर साहु केम न सहंति पुण ॥ ४१ ॥
चंपापुर अढारकोडिधणवइ कोडुंबिय ।
पोसह करि कासग्गि रहिउ निसि भुज आलंबिय ।
इंद्रप्रसंस असद्दहंत अमरेहिं परिक्खिय ।
मत्तगइंदभुयंगघोररक्खसभय दक्खिय ।
न हु चलिउ मेरुचूलाअचल कामदेव गिहवइ सुथिर ।
पहुवीर पयासिउ प्रहसमइ सीसवग्गअग्गलि सुविर ॥ ४२ ॥
रायग्गिहि इक रंक अछइ अइदुक्खिउ अग्गइ ।
उज्जाणी जण जत्त पत्त तहिं भिक्ख सु मग्गइ ।
अलहंतउ अइरोसि दोसि नियकम्मिहिं नडिउ ।
चूरिसु लोग समग्ग एम चिंतिय गिरि चडिउ ।
ढोलेइ टोल परवततणा गडघडाट सुणि नट्ठ सहु ।
पापाणि तेणि सो चंपिऊ नरयदुक्ख पामिऊ दुसहु ॥ ४३ ॥
वद्धमाण वय लिद्ध जाव वीजऊ वरसालऊ ।
मुंट तुंड मंडेवि पुंठि विलगऊ गोसालऊ ।
जिणवयणिहिं विधि जाणी तेजलेश्या तपि साधी ।
तह अट्ठंगनिमित्त कह वि विज्ञा तिण लाधी ।
उम्मग्गचारि अनरथभरिउ गुरुद्रोही गरविहिं नडिउ ।
मंखलिसुय मोघ किलेस करि दुहसायरि दुत्तरि पडिउ ॥ ४४ ॥
दृढपहारि वड चोर जाइ कुसथलिमिउं चोरिहिं ।
गोरकज्जि धावंत विप्प मारिउ निणि घोरिहिं ।

वंभणभज्ज सगब्भ हणिय बालक फुरकंतउ ।
पिक्खवि भववेरग्गि लेइ संजम दिप्पंतउ ।
संभरणअवधि छंडिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।
अक्कोस वंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दहि ॥ ४५ ॥
वीरसेणसेवक्क सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।
कालसेनरिउराय जेण विहुबांहिहिं वद्धउ ।
तिणि गुणि संखनरिंदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।
वेरग्गिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्तउ ।
पचारिय पूरव बाहुवल कालसेनि कुट्टाविउ ।
सव्वट्ठसिद्धि सुरवर सरिउ कोह कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥
सावत्थीनिवकणयकेतुसुय खंदग नामिहिं ।
दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।
व्रत लिद्धइ तस ताय नेहि सिरि छत्त धरावइ ।
तह वि अवद्धउ वंधुपासि कंनीपुरि आवइ ।
तस बहिन सुनंदा रायघरि मग्गि जंतु तिणि दिट्ठ मुणि ।
नरवरि अलीकशंका धरिय हरिय प्राण तस तिणि रयणि ॥ ४७ ॥
दीरघसिउं रइरत्तचित्त चुलुणी मयणातुरि ।
वंभदत्तनियपुत्तदहण दक्खइ लक्खाहरि ।
वरधन मंत्रि सुरंगसंगि रक्खिउ परपंचिहिं ।
फिरिय फिरिय महिमज्झि रज्ज पुण लहइ सुसंचिहिं ।
इह कस्स कोइ न हु वल्लहउ भवसरूप नडपिक्खणउं ।
मुहियां जि मूढ मोहिय भणइ हणइ कज्ज पर तहतणउ ॥ ४८ ॥
तेयलिपुरि निव कणयकेतु पउमावइ राणी ।
मंत्री तेयलिपुत्त भज्ज तस पुट्टिल नाणी ।
जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावइ ।
राणी मंत्रि कहेवि एक सुय छन्न रहावइ ।
नरनाह पत्त पंचत्त सु जि कुंयर राय महतइ कियउ ।
महतउ पुण पुट्टिलसुरवयणि पडिवुद्धउ केवलि थियउ ॥ ४९ ॥
रज्जलोभ मनि धरवि भरह पहुत्तउ समरंगणि ।
बाहुवलिहिं तहिं दिट्ठिमुट्ठिमुज्झिहि जित्तउ रणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह भाइसिरि मिल्हइ ।
धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सासयसुह ठिल्लइ ।
इम चिंत्ति चिंति संजम सवल बाहुब्बलि कासगि रहिउ ।
भरहेसर पत्त अवज्झपुरि भायनेह कित्तिम कहिउ ॥ ५० ॥
भज्जा विसयविकारिभारि पइमारणि चल्लइ ।
सूरियकंत कलत्त भत्तभीतरि विस घल्लइ ।
रायपएसि सुधम्म रम्म पोसहव्वय पारिय ।
करइ पारणउं जाव ताव तक्खणि विसि धारिय ।
सुहझाणि ठाणि निअ आणि मण सग्गलोइ संपन्न सुर ।
दुक्कमचारि सा नारि पुण भमइ भूरि भव भीडभर ॥ ५१ ॥
वीरवयणि जाणेवि नरय सेणिय चिंतइ मनि ।
कोणिय रज्ज ठवेसु लेसु संजम जाई वनि ।
हल्लविहल्लहं हार गुरुयगयवरसिउ दिद्धउ ।
कूड करी कोणिक्कि रायसेणिय तव वद्धउ ।
नियताय कट्ठपंजरि धरी खाण पाण बे राहवइ ।
सयपंच घाय दिणि दिणि दियइ पुत्तनेह एरिस हवइ ॥ ५२ ॥
वणियपुत्त चाणिक्क कवड बहुबुद्धि वियाणइ ।
चंद्गुत्तसाहिज्जकज्जि पव्वयनिव आणइ ।
तससरिसी अतिप्रीति करीय अरिकंटय टालिय ।
नंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उद्दालिय ।
विसकन्न जाणि परिणाविउ सो चि मित्त जमपुरि लयउ ।
नियकज्ज करवि विहडिउ पछइ मित्तनेह एरिस भयउ ॥ ५३ ॥
परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुयअंगुब्भम ।
कत्तविरिय नरनाह हणइ मासोसुय दुद्दम ।
अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।
खत्तियवंस असेस फरसुझालिहिं निणि दहियउ ।
निवघरणि नट्ठ पच्छन्न ठिय तस सुभूम सुय चक्कवइ ।
निद्दलइ वंस वंभणतणउ निययनेह एरिस हवइ ॥ ५४ ॥
अज्जमहागिरिसूरि भूरिभवपावनिवारण ।
गिइ जिणकप्पि करंति तस्स तुलणा अइदारुण ।

कुलघरनियसुहसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।
अपडिवद्धविहारसार संजमगुणमंडिय ।
सावयघरि अज्जसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरषिहिं करिय ।
अइआदर दिखि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥
सेणियधारणिपुत्त मेह भज्जइ विमुक्किय ।
वीरपासि वय लिद्ध बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।
पुव्वजम्म परिकहिय पुण वि थिर किद्धउ वीरिहिं ।
बहुजइजणसंवद्द सहइं अइदुसह सरीरिहिं ।
सो रायवंसअवयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।
चापरइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥
चेडयधूयसुजिट्ठसुद्धमहासइअंगुब्भम ।
विज्जाहरपेढालपुत्तु विज्जावलदुद्दम ।
खायगसम्मद्दिट्ठि अंग इग्यारंइ जाणइ ।
तह वि विसयरसरंगि अंगि अतिदूपण आणइ ।
उज्जेणि उमावेसावसिहि करवि कूड हेला हणिउ ।
सो सच्चइ सचइं नरय गय विसयदोस एरिस भणिउ ॥ ५७ ॥
वारवईपुरि पत्त नेमिपहु केवलनाणी ।
दसदसारनरनाह कन्ह निसुणइ जिणवाणी ।
सहसअढार मुणिंदचंद विधिवंदणि वंदइ ।
नरयभूमि चिहुदुक्कक निम्मूल निकंदइ ।
तित्थयरगुत्त बंधइ सुदढ असुहकम्म हेला हरइ ।
पूजाप्रणामवंदणविणय सगुणसाहुसंगति करइ ॥ ५८ ॥
चंडरुद्द गुरु रुद्दरोसि रीसाल विदित्तउ ।
उज्जेणीउज्जाणि सगुणसीसिहिंसिउं पत्तउ ।
नयपरणीत कुमार हसिय पभणइ दिउ दिक्ख ।
सूरि सीस तस चंपि वेस लुंचिय दिय सिक्खा ।
सो सीसभावि संजम लियइ मग्गि लग्गि गुरु सिर धरी ।
निम सहइ पाप दुव्वयण जिम लहइ वेउ केवलसिरि ॥ ५९ ॥
गयकलभे परिचरिउ सूयर सुमिणइ मुणि दिट्ठउ ।
तिणि अहिनाणि सुसीससहिय पुण कुगुरु अणिट्ठउ ।

निसि चंपइ अंगार सूगचिण मन्नइ प्राणिउ ।
तव अंगारयमद्द सूरि अभविय इम जाणिउ ।
ते सीस सवे निवपुत्त हूय सूरि करह वक्करभरिउ ।
तिहिं देखि सयंवरि आवते पुव्वजम्म तक्कणि सरिउ ॥ ६० ॥
पुप्फचइसुय पुप्फचूल भइणी तह भज्जा ।
सुमिणि नरयदुह देखी पुप्फचुला वयसज्जा ।
अन्नियसुयगुरुकज्जि खीणजंघावल जाणी ।
आणंती सा भत्तपाण हुय केवलनाणी ।
पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।
तव दुद्वदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥
सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंवणि ।
के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।
जिणि कारणि पुव्वंमि जम्मि थावरतरुभीतरि ।
वोरिसंगि वहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।
सुहभावि पावि परिमुक्कमण सरलसार संतोसमय ।
जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निव्वाणि गय ॥ ६२ ॥
लद्धि पत्त पत्ते य वुद्ध सुहसिद्धि समाणइ ।
अच्छेरयसमतुल्ल बुल्ल किवि ते मनि आणइ ।
निहिसंपत्ति स चित्ति धरवि विवसाय ति छंडइ ।
सामग्गी परिहरिय करिय पातग निय दंडइ ।
करकंडुदुमुहनमिनग्गइ चिहुचरित्त चिंतिय सुपरि ।
धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय मुक्क माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥
ससगभसगनिवपुत्तवहिणि सुकुमालिय कुमरी ।
चंपापुरि चारित्त लेइ रूपिहिं किर अमरी ।
फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणी ।
रक्खइ वंधव वेउ लेइ तिणि अणसण समणी ।
वहुदिवसि तापि तपि मूरछामुइय जाणि वनि परठवी ।
ओसहविसेसि सु जि सज्ज करि सत्थवाहि गेहिणि ठवी ॥ ६४ ॥
सु वहुसीसपरिवारसार मिव्हंनविदित्तउ ।
महुरापुरि सिरिमंगुसूरि रसणिंदिइं जित्तउ ।

नयरखालि उप्पन्न जक्ख बहु दुक्ख निहालइ ।
सुचिह्नियजणपडिबोहकज्जि नियजीह दिखालइ ।
जिप्पह मुणिंद रसणिंदियह अणजित्ताइ गरिसु हुउ ।
जग्गह जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्रां सुउ ॥ ६५ ॥
गिरिसुय ग्रहिउ पुलिंदि पुप्फसुय तवसी सेवइ ।
सुयडा अडवीमज्झि अछइ पक्कोदर बेवइ ।
इक्क भणइ लिउ मारि अवर पुण विणय पयासइ ।
अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।
इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।
झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुद्द तक्खणि तरउ ॥ ६६ ॥
सिरिथावच्चापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।
सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुद्दमि ।
गया सीस सवि छंडि एक्क पंथग मुणि रहिउ ।
खामंतइं पगि लागि पव्ववासरि तिणि कहियउ ।
मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।
सो सूरि पुण वि चारित्त वरि सित्तुंजय सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥
सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।
वीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।
दस प्रतिबोध्याविणु न लेइ आहार निरंतर ।
इक्क न बुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।
इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।
इय जस्स सत्ति देसुणतणी अहह सो वि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥
वरससहस नव कट्ठ करिय कंडरिय न सुद्धउ ।
अंति दुट्ठपरिणाम कामवश नरयनिबद्धउ ।
अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।
पुंडरीक सव्वट्ठसिद्धि सुहबुद्धिनिरुत्तउ ।
बहु दुक्ख सहवि नवि लद्ध सुह अप्प दुक्खि बहुसुख लहिउ ।
बिहु बंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवति कहिउ ॥ ६९ ॥
नयरि कुसुमपुरि राय भाय दुइ ससि सूरप्पह ।
ससी न मन्नइ धम्म रम्म मन्नइ विसयासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि त्रीजइ दुहतत्तउ ।
करवि सूर दुहचूर सग्गि सत्तमइ स पत्तउ ।
ससि रडइ सूरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खउ ।
सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुक्ख किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥
सुग्गइमग्गपईय नाण जे दियइं निरुप्पम ।
तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जगमज्झि जगुत्तम ।
दिक्खउ जेम पुलिंदि सिवगजक्खह नियलोयण ।
तिण सरिसउं सुर वत्त करइ भत्तह दिय चोयण ।
केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।
तिणि कारणि बिहुपरि करि विणय जिम बाहिरि तिम अंतरइ ॥७१॥
अंबचोर चंडाल चडिउ अभयडकरि कंपइ ।
दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।
विणयविवज्जिय विज्जकज्ज करिवइ नवि जग्गइ ।
सिंहासणि वइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।
ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल बिहुह कज्ज तक्खणि सरिउ ।
इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुक्कमि करिउ ॥७२॥
दगसूयरउ तिदंडि तामलित्ती पुरि अच्छइ ।
नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।
महिमा मोटिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।
पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सचउ नवि कहियउ ।
गुरुलोपि कोपि विज्जा गई गयणदंड गडयडि पडिउ ।
लज्जियउ लोकि हसिउ सयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥
वंभण एक अनेककूडकवडाइनिरुत्तउ ।
उज्जेणिहिं कढ्ढियउ देसि चम्मारि स पत्तउ ।
त्रिहुं गामहं विचालि करइ तप वेसि त्रिदंडी ।
भगतलोकघरसार मुसइ निसि सु जि पाखंडी ।
अहंयु डिउ हत्थि नरवरतणइ नयण कढ्ढि नडियौ घणउ ।
बहु झुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ नियकुडक्कणउ ॥ ७४ ॥
दुहरंग वरदेव कुट्ठिरूपिहिं पहु वंदइ ।
छींक करइ जव वीर नाम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा चड विहुपरि ।
कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जीविय अणुसरि ।
मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एस परमत्थ पुण ।
जिण भणइ विप्पसेड्डयचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥
वरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।
जियहिंसा पुण घोर घोरदुहहेड न किज्जइ ।
कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाव निवारउ ।
परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।
कुलकारण किं पि म लिक्खवउ गुणह रूप गुरुयडि धरउ ।
परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥
हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।
तं पुण दिइ उपदेस जेण किद्धइ सुख आवइ ।
जं सुरवइ सुरवग्गि सग्गि एरावणवाहण ।
जं भरहाहिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।
जं जं अवर वि सुरअसुरनरसुक्ख सुक्ख माणइ घणउ ।
तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥
खत्तियकुंडि जमालि वीरजामाइ खत्तिउ ।
सुदंसणभत्तार सार वयभारपवत्तिउ ।
नवि मन्नइ किज्जंत किद्ध इय आगमवाणी ।
निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।
नियकित्ति मुसिय सुर किब्बिसिय मिलिउ मिच्छमइ मोहियउ ।
सपपंच साहु साहुणि सहस ढंकसड्ढि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥
जिम मासाहस पंखि मुखिहिं मा साहस जंपइं ।
वग्घवयणि पइसेवि मंस लितउ नवि कंपइ ।
तिम अवरह उवएस दिंति किंवि फुडवयणफरि ।
पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।
नेरग्गवाणि नइ उचरइ जलहि जालि पाणी गलइ ।
इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलनलइ ॥ ७९ ॥
धम्मवीए जिणराइ आणि दीवंनर दिद्धउ ।
अविरति सयल वि ग्वद्ध देसविरते अध ग्वद्धउ ।

पासत्थे पुण खुट्टि खित्ति खाइव सहु हारिउ ।
संजमि ए सुभखित्ति सव्व वावीय वद्धारिउ ।
त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंडि अप्पउं दहइ ।
सुविहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥
इणिपरि सिरिउवएसमालकहाणय ।
तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।
सावयसंभरणत्थ अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।
रयणसीहसूरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।
अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।
भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥

॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वकथानकछप्पया ॥

समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव्र आदीसरु सेत्तुजसिहरे ।
अनु अरिहंत सव्वे वि आराहउं बहुभत्तिभरे ॥ १ ॥
तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय ।
जसु पयकमलपसाय मूरखु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥
संघपतिदेसलपूतु भणिसु चरिउ समरातणउ ए ।
धम्मिय रोलु निवारि निसुणउ श्रवणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥
भरह सगर दुइ भूप चक्रवति त हूअ अतुलबल ।
पंडव पुहविप्रचंट तीरथु उधरइ अतिसबल ॥ ४ ॥
जावडतणउ संजोगु हूअउं सु दूसम तव उदए ।
समइ भलेरइ सोइ मंत्रि बाहडदेउ ऊपजए ॥ ५ ॥
हिव पुण नवी य ज वात जिणि दीहाडइ दोहिलए ।
खत्तिय ग्वग्गु न लिंति साहसियह साहसु गलए ॥ ६ ॥
तिणि दिणि दिनु दिखाउ समरसीहि जिणधम्मवणि ।
तसु गुण करउं उद्योउ जिम अंधारइ फटिकमणि ॥ ७ ॥
सारणि अमियतणी य जिणि वहावी मरुमंटलिहिं ।
किउ कृतजुगअवतारु कलिजुगि जीतउ बाहुबले ॥ ८ ॥

समरऊ ए साहसधीरू वाहविलग्गउ बहु अ जण ।
बोलई ए असमवीरू दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
अभिग्रह ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्वणवाहवलि ।
उधरऊ ए आदिजिणबिंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
भेटिऊ ए तउ पानपालु सिरू धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
वीनती ए लागु लउ वालु पूछए पहुता केण कज्जे ।
सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंवणु अम्हतणउ ए ।
भइली ए दुनिय निरास इ ज भागी य हींदूअतणी ए ।
सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
आपिऊ ए सव्ववयणेहिं फुरमाणु तीरथमांडिवा ए ।
अहिदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
पतमत ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
संघिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय बहुपपरे ।
सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण बे निम्मला ए ।
आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुतणउ ए ।
इह जुग ए नही य वीसासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
तउ तुहु ए पुन्नमकासु करि ऊधरि जिणवरधरमु ॥ ६ ॥
चतुर्थभाषा-संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।
पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।
वीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।
तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
सेत्तुजतीरथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।
एकु तपोधनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।
सुगुरुवयणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रूचइ ॥ २ ॥
राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।
जीवदया जगि जाणिजए जो वीरू सपराणउ ।



पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ वहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।
फलही आणिय समरवीरि ए अतिवहुजयणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाधा रयणा ॥ ४ ॥
कूआरसि उछवु हूअउ त्रिसींगमइनइरे ।
फलही देपिउ धामियह रंगु माइ न सहरे ।
अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
गोत्ति मेल्हावइ पइरालुअह आपइ वहुवित्तो ॥ ५ ॥
भांट्ट आव्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरवु झमकइ ।
अचरिउ देपिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
वालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
किं कप्पूरिहि घडीय देह पीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरपु न माए ।
देसलऊत्रह चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भाषा-संघु वहुभत्तिहिं पाटि वयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहिं विचारिउ ।
पोसहसाल खमासण देयए ।
सूरिसेयंवरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि वयमवि करी के वि मन्नाविया ।'
के वि घम्मिय हरसि घम्मिय धाइया ।
वहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ वहुभली य मज्जाढया ॥ २ ॥
सुहगुरुसिघसुरिवासि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

ओसवालकुलि चंदु उदयउ एउ समानु नही ।
कलिजुगि कालइ पाखि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥
पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुन्नवंतलोयह निलउ ।
सोहइ पाल्हविहारु पासभुवणु तहि पुरतिलउ ॥ १० ॥
भास—हाट चहुटा रूअडा ए मढमंदिरह निवेसु त ।
वाविकूवआरामघण घरपुरसरसपएस त ।
उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।
धम्मु प्रकासइं तहि नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥
तसु पटलच्छीसिरिमउडो गणहरु जखदेवसूरि त ।
हंसवेसि जसु जसु रमए सुरसरीयजलपूरि त ॥ २ ॥
तसु पयकमलमरालुलउ ए कक्कसूरि मुनिराउ त ।
ध्यानधनुपि जिणि भंजियउ ए मयणमल्ल भडिवाउ त ॥ ३ ॥
सिद्धसूरि तसु सीसवरो किम वन्नउं इकजीह त ।
जसु घणदेसण सलहिजए दुहियलोयवप्पीह त ॥ ४ ॥
तसु सीहासणि सोहई ए देवगुत्तसूरि वईठु त ।
उदयाचलि जिम सहसकरो ऊगमतउ जिण दीठु त ॥ ५ ॥
तिह पट्टुपाटअलंकरणु गच्छभारधोरेउ त ।
राजु करइ संजमतणउ ए सिद्धिसूरिगुरु एहु त ॥ ६ ॥
जोइ जसु वाणीकामधेनु सिद्धंतवनि विचरेउ त ।
सावइजणमणइच्छिय घण लीलइ सफल करेउ त ॥ ७ ॥
उवएसवंसि वेसटह कुलि सपुरिसतणउ अवतारु त ।
वयरागरि कउतिगु किसउ ए नही य ज रतनह पारु त ॥ ८ ॥
पुन्नपुरुपु ऊपन्नु तहिं सलपणु गुणिहि गंभीरु त ।
जणआणंदणु नंदणु तसो आजड्ड जिणधमधीरु त ॥ ९ ॥
गोत्रउदयकरु अवयरिउ ए तसु पुत्तु गोसलुसाहु त ।
तसु गेहिणि गुणमत भली य आराहइ नियनाहु त ॥ १० ॥
संघपति आसधरु देसलु लूणउ तिणि जन्म्या संसारि त ।
रतनसिरि भोली लाच्छि भणउं तीहतणी य घरनारि त ॥ ११ ॥
देसलघरि लच्छी य निसुणि भोली भोलिमसार त ।
दानि सीलि लूणाघरणि लाछि भली सुविचार त ॥ १२ ॥

द्वितीयभाषा-रतनकुषि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया।
सहजउ साहणु समरसीहु बहुपुन्निहिं आया ॥ १ ॥
लहुअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण।
रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥
तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सधन्न।
रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कन्न ॥ ३ ॥
गोसलसुति आवासु कियउ अणहिलपुरनयरे।
पुन्न लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥
चउरासी जिणि चउहटा वरवसहि विहार।
मढ मंदिर उत्तंग चंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥
तहिं अछइ भूपतिहिं भुवण सतखणिहि पसत्थो।
विश्वकर्मा विज्ञानि करिउ धोइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥
अमियसरोवरु सहसलिंगु इकु धरणिहिं कुंडलु।
कित्तिखंभु किरि अवतरेसि मागइ आखंडलु ॥ ७ ॥
अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्मु कलिकालि अगंजिउ।
आचारिहिं इह नयरतणइ सचराचरु रंजिउ ॥ ८ ॥
पातसाहि सुरताणभीवु तहिं राजु करेई।
अलपखानु हींदूअह लोय घणु मानु जु देई ॥ ९ ॥
साहु रायदेसलह पूतु तसु सेवइ पाय।
कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥
मीरि मलिकि मानियइ समरु समरथु पभणीजइ।
परउवयारियमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥
जेठसहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजू।
दक्षणमंडलि देवगिरिहि किउ धम्मह वणिजू ॥ १२ ॥
चउवीसजिणालय जिणु ठविउ सिरिपासजिणिंदो।
धम्मधुरंधरु रोपियउ धर धरमह कंदो ॥ १३ ॥
साहणु रहियउ थंभनयरि सायरगंभीरे।
पुव्वपुरिसकीरितितरंडु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥
तृतीयभाषा-निसुणऊ ए समइप्रभावि तीरथरायह गंजणउ ए।
भवियह ए करुणाराबि नीठुरमनु मोहि पडिउ ए।

समरऊ ए साहसधीरु वाहविलग्गउ वहु अ जण ।
बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपइ राउतवट ए ॥ १ ॥
अभिग्रह्व ए लियइ अविलंबु जोवियजुव्वणवाह्वलि ।
उधरऊ ए आदिजिणबिंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।
भेटिऊ ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥
वीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कज्जे ।
सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंवणु अम्हतणउ ए ।
भइली ए हुनिय निरास ह ज भागी य हींदूअतणी ए ।
सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥
आपिऊ ए सव्ववयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।
अहिदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।
पतमत ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।
पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥
संघिहि ए कियउ पसाउ वुद्धि विमासिय वहुयपरे ।
सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।
दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।
आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥
दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुतणउ ए ।
इह जुग ए नही य वीसासु मनुमात्रे इय किम छरए ।
तउ तुह्व ए पुन्नप्रकासु करि ऊधरि जिणवरघरसु ॥ ६ ॥

चतुर्थभाषा–संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।
पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।
वीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।
तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥
सेत्तुजतीरथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।
एकु तपोधनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।
मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।
सुगुरवयणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रूचइ ॥ २ ॥
राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।
जीवदया जगि जाणिजए जो वीरु सपराणउ ।

पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।
टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।
फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजयणा ।
समुद्र विरोलिउ वासुगिहिं जिम लाधा रयणा ॥ ४ ॥
कूआरसि उछवु हूअउ त्रिसींगमइनइरे ।
फलही देखिउ धामियह रंगु माइ न सइरे ।
अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।
गोत्ति मेल्हावइ पहरालुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥
भांडू आव्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरवु झमकइ ।
अचरिउ देखिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥
पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।
बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।
किं कप्पूरिहि घडीय देह षीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥
सामियमूरति प्रकट थिय कृप करिउ संसारे ।
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरषु न माए ।
देसलऊत्रह चरित्रि सहू रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भाषा-संघु बहुभत्तिहिं पाटि वयसारिउ ।
लगनु गणिउ गणधरिहिं विचारिउ ।
पोसहसाल खमासण देयए ।
सूरिसेयंबरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥
घरि वयसवि करी के वि मन्नाविया ।
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाइया ।
बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।
संघु मिलइ बहुभली य सज्जाइया ॥ २ ॥
सुहगुरुसिधसुरिवासि अहिसिंचिउ ।
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

कुलदेवल सचिया वि भुजि अवतरइ ।
सूहव सेस भरइं तिलकु मंगलु करइं ॥ ३ ॥
पोसवदि सातमि दिवसि सुमुहुत्तिहिं ।
आदिजिणु देवालए ठविउ सुहचित्तिहिं ।
धम्मधोरी य धुरि धवल दुइ जुत्तया ।
कुंकुमपिंजरि कामधेनुपुत्तया ॥ ४ ॥
इंदु जिम जयरथि चडिउ संचारए ।
सूहवसिरि सालिथालु निहालए ।
जा किउ हयवरो वसहु रासिउ हूउ ।
कहइ महासिधि सकुनु इहु लद्धउ ।
आगलि मुनिवरसंघु सावयजणा ।
तिलु न पिरइ तिम मिलिय लोय घणा ॥ ५ ॥
मादलवंसवीणाझुणि वज्जए ।
गुहिरभेरीयरवि अंवरो गज्जए ।
नवयपाटणि नवउ रंगु अवतारिउ ।
सुपिहि देवालउ संघारी संचारिउ ॥ ६ ॥
घरि वयसवि करि के वि समाहिया ।
समरगुणि रंजिउ विरलउ रहियउ ।
जयतु कान्हु दुइ संघपति चालिया ।
हरिपालो लंढुको महाधर दृढ थिया ॥ ७ ॥
पछी भाषा—वाजिय संख असंख नादि काहल दुडुडुडिया ।
घोडे चडइ सल्लारसार राउत सींगडिया ।
तउ देवालउ जोत्रि वेगि घाघरिरवु झमकइ ।
सम विसम नवि गणइ कोइ नवि वारिउ थक्कइ ॥ १ ॥
सिजवाला धर धडहडइ वाहिणि बहुवेगि ।
धरणि धडक्कइ रजु ऊडए नवि सूझइ मागो ।
हय हींसइ आरसइ करह वेगि वहइ वइल्ल ।
साद किया थाहरइ अवरु नवि देई बुल्ल ॥ २ ॥
निसि दीवी झलहलहि जेम ऊगिउ तारायणु ।
पावलपारु न पामियए वेगि वहइ सुखासण ।

आगेवाणिहि संचरए संघपति साहुदेसलु ।
बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चलु ॥ ३ ॥
पाछेवाणिहि सोमसीहु साहुसहजापूतो ।
सांगणसाहु लूणिगह पूतु सोमजिनिजुत्तो ।
जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।
चडीय हींड चहुगमे जोइ जो संघअसुहकरु ॥ ४ ॥
सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सकलो ।
सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।
धंधूकउ अतिक्रमिउ ताम लोलियाणइ पहुतो ।
नेमिभुवणि उछवु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥
सप्तमी भाषा-संघिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।
अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।
पूजिउ परवतराउ पणमिउ बहुभत्तिहिं ।
देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥
अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।
पणमइ सेत्रुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥
पालीताणइ नयरे संघ भयलि प्रवेसु ।
ललतसरोवरतीरे किउ संघनिवेसु ।
कज्जसहाय लहुभाय लहु आवियउ मिलेवि ॥ ३ ॥
सहजउ साहणु तीहि त्रिन्हइ गंगप्रवाह ।
पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरतीरिहिं ।
पंचि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥
सेत्रुजसिहरि चडेवि संघु सामि ऊमाहिउ ।
सुललिताजिणगुणगीते जणदेहु रोमांचिउ ।
सीयलो वायए वाओ भवदाहु ओल्हावए ।
माडीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥
जिणबिंबइ पूजेवी कवडिजक्खु जुहारए ।
अणुपमसरतडि होई पहुता सीहदुवारे ।
तोरणतलि वरसंते घणदाणि संघपत्ते ।
भेटिउ आदिजगनाहो मंडिउ पवीठमहूछवो ॥ ६ ॥

अष्टमी भाषा–चलउ चलउ सहियडे सेत्रुजि चडिय ए ।
आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोइसउं ए ।
माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अबाह॥१॥
माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।
अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥२॥
देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहिं जगतगुरो ।
लगनमहूरतु सुरगुरो साधए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥
भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ द्रिढु धरमकंदो ।
दुंदुहि वाजिय देवलोकि तिहुअणु सीचिउ अमियरसे ॥ ४ ॥
देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतरु कुल ऊधरए ।
सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि धनि वीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥५॥
रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंबर चामरजुयल अनु दिन्नदुन्नि ।
आदिजिणु पूजिउ सहलकंतिहिं कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥
आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुव्वपुरिस सगि रंजियले ।
दानमंडपि थिउ समर सिरिहि वरो सोवनसिणगार दियइ याचकजन ॥७॥
भत्ति पाणी य वरमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।
धाविउ सुधम वितु सिद्धखेत्रि इंद्रउच्छवु करि ऊतरए ॥ ८ ॥
भोलीपनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समरु आवासि गनि ।
तेरइकहत्तरइ तीरथउद्धारु यउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥
नवमी भाषा–संघवाछलु करी चीरि भले माल्हंतडे पूजिय दरिसण पाय ।
सुणि सुंदरे पूजिय दरिसण पाय ।
सोरठदेस संघु संचरिउ मा० चउंडे रयणि विहाइ ॥ १ ॥
आदिभत्तु अमरेलीयह माल्हं० आविउ देसलजाउ ।
अलवेसरु अल जवि मिलए माल्हं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥
ठामि ठामि उच्छव हुअइ माल्हं० गढि जूनइ संपत्तु ।
महिपालदेउ राउलु आवए माल्हं० सामुहउ संघअणुरत्तु ॥ ३ ॥
महिपु समरु बिउ मिलिय सोहइं माल्हं० इंदु किरि अनइ गोविंदु ।
तेजि अगंजिउ तेजलपुरं मा० पूरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥
वउणथलीचैत्रप्रवाडि करे माल्हं० तलहटी य गढमाहि ।
ऊजिलऊपरि चालिया ए माल्हं० चउव्विहसंघहमाहि । सुणि० ।

दामोदरु हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपालु । सुणि० ।
सुवनरेहा नदी तहिं वहए माल्हं० तरुवरतणउं झमालु ॥ ५ ॥
पाज चडंता धामियह मा० क्रमि क्रमि सुकृत विलसंति । सुणि० ।
ऊची य चडियए गिरिकडणि मा० नीची य गति पोडंति ॥ ६ ॥
पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देइ ।
सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० ऊतरिया मढमाहि । सुणि० ।
कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेइ ।
पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेल्हेइ ॥ ७ ॥
अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांबिपज्जूनि चडंति । सुणि० ।
सहसारामु मनोहरु ए मा० विहसिय सवि वणराइ । सुणि० ।
कोइलसादु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकारु । सुणि० ॥८॥
नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुट्ठ जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।
इसइ तीरथि तिहुयणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दियंति ॥ ९ ॥
समुदविजयरायकुलतिलय मा० वीनतडी अवधारि । सुणि० ।
आरतीमिसि भवियण भणइं मा० चतुगतिफेरडउ वारि । सुणि०॥१०॥
जइ जगु एकु मुहु जोइयए मा० त्रिपति न पामियइ तोइ । सुणि० ।
सामलधीर तउं सार करे मा० वलि वलि दरिसणु देजि । सुणि०॥११॥
रलीयरेवयगिरि ऊतरिउ ए मा० समरडो पुरुपप्रधानु ।
घोडउ सीकिरि सांकलिय मा० राउलु दियइ बहुमानु । सुणि० ॥१२॥
दशमी भाषा–रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो
समरह वाजिय विजयढक्क ।
साग़ुसेलुसल्लइसच्छाया केसूयकुडयकयंवनिकाया
संघसेनु गिरिमाहइ वहए ।
बालीय पूछइं तरुवरनाम वाटइ आवइं नव नव गाम
नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥
देवपट्टणि देवालउ आवइ संघह सरयो सरू पूरावइ
अपूरवपरि जहिं एक हूइअ ।
तहिं आवइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुउ पहूतो
आपणि राणउ मूयराजो ॥ २ ॥
पान फूल कापड बहु दीजइं लूणसमउं कपूरु गणीजइ
जत्राधिहिं सिरु लिपियए ।

ताल तिविल तरविरियां वाजइं ठामि ठामि थाकणा करीजइं
पगि पगि पाउल पेपण ए ॥ ३ ॥
माणुस माणुसि हियउं दलिजइ घोडे वाहिणिगाहु करीजइ
हयगय सूझइ नवि जणह ।
दरिसणसउं देवालउ चल्लइ जिणसासणु जगि रंगिहिं मल्हइ
जगतिहिं आव्या सिवभुवणि ॥४॥
देवसोमेसरदरिसणु करेवी कवडिबारि जलनिहिं जोएवी
प्रियमेलइ संघु ऊतरिउ ।
पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंडे पूज रएवी जिणभुवणे
उच्छवु कियउ ॥ ५ ॥
सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे धन्नसमिद्धी अपूरवु उच्छवु
कारविउ ।
जिनवरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बद्धी दीनु
पयाणउं दीवभणी ।
कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेवी दीवि
वेलाउलि आवियउ ए ॥ ६ ॥
एकादशी भाषा-संघु रयणायरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि ।
आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसवदु सुणि ॥ १ ॥
हरषिउ हरपालु चीति पहुतउ ए संघु मोलविकरे ।
पभणइं दीवह नारि संघह ए जोअण ऊनावली ए ।
आउलां वाहिन वाहि वेगुलइ ए चलावि प्रिय वेङ्गली ए ॥ २ ॥
किसउ सुपुन्नपुरिपु जोइउ ए नयणुलां सफल करउ ।
नियछणा नेत्रि करेसु ऊलारिसु ए कपूरि ऊआरणा ए ।
वेडीय वेडीय जोडि वलियऊ ए कीधउं धंधियारो ॥ ३ ॥
लेउ देवालउमाहि वइठउ ए संघपति संघसहिउ ।
लहरि लागइं आगासि प्रवहणु ए जाइ विमान जिम ।
जलवटनाटकु जोइ नवरंग ए रास लउडारस ए ॥ ४ ॥
निरुपमु होइ प्रवेसु दीसई ए कवडला धवलहर ।
तिहां अच्छइ कुमरविहार रूअडऊ ए रूअडुला जिणभुवण ।
तीर्थंकर तीह वंदेवि वंदिऊ ए सयंभू आदिजिणु ।

दीठउ वेणिवच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि धरिउ ।
अपूरवु पेपिउ संघु उत्तारिऊ ए पइली तडि समुदला ए ॥ ५ ॥
द्वादशी भापा–अजाहरवरतीरथिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।
पूज प्रभावन तहिं करहिं अज्ञिउ ए अज्ञिउ ए अज्ञिउ सफल सुछंदो ॥ १ ॥
गामागरपुरवोलितो वलिउ सेतुजि संपत्तो ।
आदिपुरीपाजह चडिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए मरुदेविपूतो ॥२॥
अगरि कपूरिहिं चंदणिहि मृगमदि मंडणु कीय ।
कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।
जाइवउलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमल्हारो ।
मणुयजनमुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुकृतभंडारो॥३॥
सोहग ऊपरि मंजरिय बीजी य सेत्रुजि उधारि ।
""""ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समरु आविउ गुजरात ।
पिपलालीय लोलियणे पुरे राजलोकु रंजेई ।
छडे पयाणे संचरए राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥
वढवाणि न विलंबु किउ जिमिउ करीरे गामि ।
मंडलि होईउ पाडलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेमि सु जीवतसामि ।
संखेसर सफलीयकरणु पूजिउ पासजिणिंदो ।
सहजुसाहु तहिं हरषियउ ए देपिऊ ए देपिऊ ए देपिउ फणिमणिवृंदो ॥५॥
डुंगरि डरिउ न खोहि खलिउ गलिउ न गिरवरि गव्वो ।
संघु सुहेलइ आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपरिहिं अपुव्वो॥ ६॥
सज्जण सज्जण मिलीय तहिं अंगिहिं अंगु लियंते।
मनु विहसइ ऊलटु घणउ ए तोडरू ए तोडरू ए तोडरु कंठि ठवंते ॥ ७ ॥
मंत्रिपुत्रह मीरह मिलिय अनु ववहारियसार ।
संघपति संघु वधावियउ कंठिहिं ए कंठिहिं ए कंठिहि घालिय जयमाल ।
तुरियघाटतरवरि य तहिं समरउ करइ प्रवेसु ।
अणहिलपुरि वद्धामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुन्ननिवासो॥८॥
(संवच्छरि इकहत्तरए थापिउ रिसहजिणिंदो । १३७१
चैत्रवदि सातमि पहुत घरे नंदऊ ए नंदऊ ए नंदऊ जा रविचंदो ॥ ९ ॥
पासडसूरिहिं गणहरह नेऊअगच्छनिवासो ।
तसु सीसिहिं अंबदेवसूरिहिं रचियऊ ए रचियऊ ए रचियऊ समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।
श्रवणि सुणइ सो वयठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफलु लेई ॥ १० ॥

इति श्रीसंघपतिसमरसिंहरास ॥

सिरिथूलिभद्दफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।
थूलिभद्दमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥
अह सोहगसुंदररूववंतु गुणमणिभंडारो ।
कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।
थूलिभद्दमुणिराउ जाम महियलि बोहंतउ ।
नयररायपाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥
वरिसालइ चउमासमाहि साहू गहगहिया ।
लियइ अभिग्गह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।
अज्ञविजयसंभूयसूरि गुरु वय मोकलावइ ।
तसु आएसि मुणीस कोसवेसाघरि आवइ ॥ ३ ॥
मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिक्खेवी ।
चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।
वेसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती
आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥
भास—धम्मलाभु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।
रहियउ सीहकिसोर जिम धीरिम हियइ धरेवी ॥ ५ ॥
[1] झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति ।
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति ।
झबझब झबझब झबझब ए वीजुलिय झबकइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥
महुरगंभीरसरेण मेह जिम जिम गाजंते ।
पंचबाण निय कुसुमबाण तिम तिम साजंते ।
जिम जिम केतकि महमहंत परिमल विहसावइ ।
तिम तिम कामि य चरण लगि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।
माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते ।
जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।
तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥
भास—मेहारवभरऊलटि य जिम जिम नाचइ मोर।
तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीता जिम चोर ॥ ९ ॥
[1] अइ सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनऊलटि ।
रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसऊगटि ।
चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि खुंप भरेइ ।
अतिआछउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥
लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो ।
रणरण रणरण रणरण ए पगि नेउरसारो ।
झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल ।
झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥
मयणखग्ग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।
सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।
तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का ।
कुसुमबाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥
भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई ।
बोरीयावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥
कन्नजुयल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।
चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।
सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा ।
कोमल विमलु सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥
लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ ।
मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरू सोहइ ।
जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।
रिमिझिमि रिमिझिमि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥
नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिल्ली ।
परिमललहरिहि मयमयंत रइकेलिपहिल्ली ।

अहरबिंब परवालखंड वरचंपावन्नी ।
नयणसलूणी य हावभाववहुगुणसंपुन्नी ॥ १६ ॥
भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणिपासि ।
जोएवा कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥
अह नयणकडक्खहं आहणए वांकउ जोवंती ।
हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।
तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।
तवणुतुल्लु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥
वारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंडिउ ।
एवडु निठुरपणउ कंइ मूंसिउ तुम्हि मंडिउ ।
थूलिभद्द पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।
लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९ ॥
मह विलवंतिय उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।
एरिसु पांवसु कालु सयलु मूंसिउ माणीजइ ।
मुणिवइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।
मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥
भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।
मूं मिल्हिवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥
उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।
चिंतामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिह्णेइ ।
तिम संजमसिरि परिचएवि बहुधम्मसमुज्जल ।
आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहावल ॥ २२ ॥
पहिलउ हियडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ ।
तयणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।
मुणि बोलइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।
कवणु सु अच्छइ भुवणतले जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥
भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभद्दमुणिराइ ।
तसु धीरिम अवधारिकरि चमकिय चित्ति सुराइ ॥ २४ ॥
अइबलवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निधाडिउ ।

झाणखडग्गिण मयणसुभड समरंगणि पाडिउ ।
कुसुमवुट्ठि सुर करइ तुट्ठि हुउ जयजयकारो ।
धनु धनु एहु जु थूलिभद्द जिणि जीतउ मारो ॥ २५ ॥
पडिबोहिवि तह कोसवेस चउमासिअणंतरु ।
पालिय भिग्गह ललिय चलिय गुरुपासि मुणीसरु ।
दुक्करदुक्करकारगु त्ति सूरिहि सु पसंसिउ ।
संखसमुज्जलजसु लसंतु सुरनरहं नमंसिउ ॥ २६ ॥
नंदउ सो सिरिथूलिभद्द जो जुगह पहाणो ।
मलियउ जिणि जगि मल्लसल्लरइवल्लहमाणो ।
खरतरगच्छि जिणपदमसूरिकियफागु रमेवउ ।
खेला नाचइं चैत्रमासि रंगिहि गावेवउ ॥ २७ ॥

॥ सिरिथूलिभद्दफागु समत्तु ॥

जंबूसामिचरिय

जिण चउवीसह पय नमेवि गुरुचलण नमेवी ।
जंबूसामिहितणउं चरिय भविउ निसुणेवी ।
करि सानिध सरसत्तिदेवि जिम रयं कहाणउं ।
जंबूसामिहि गुणगहण संखेवि वखाणउं ॥ १ ॥
जंबूदीपह भरहखित्ति तिहि नयरपहाणउं ।
राजगृह नामेण नयर पहुवि वक्खाणउं ।
राज करइ सेणियनरिंद नरवरहं जु सारो ।
तासुतणइ पुत्त बुद्धिमंत मंति अभयकुमारो ॥ २ ॥
अन्नदिणंतरि वद्धमाण विहरंत पहुतउ ।
सेणिउ चालिउ वंदणह बहुभत्तितुरंतु ।
मागि वहंतु माहाराज केसउं पेखेइ ।
भोगविरत्तउ पसनचंद बहुतवण तवेइ ॥ ३ ॥
धनु धनु माया एहरसि पसंसिउ वंदइ ।
दुमुखवयणि सो चलिउ ध्यानि कुमारगि चल्लइ ।
धम्मलाभ नवि दीयइ जाम मुनि हूउ अभाओ ।

ईहं सहू को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥
सामिय वंदिउ वद्धमाण सेणीयं पूछीईं।
जइ पसनचंद हिव करेइ काल कींछे ऊपजइ।
मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ।
नरगावासइ सातमए नींछइं ऊपजइ ॥ ५ ॥
बीजी पूछइं मणुय होइ त्रीजी अणउत्तर।
दुंदुहि वाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर।
सेणिउ पूछइ सामिसाल कांहां जाईजइ।
केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥
सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी वलि पूछइ।
जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं।
सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए।
मणपरिणामह विसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥
केवलनाणउ भरहखेति केतुं वरतेसिइ।
सामी दापीउ विज्जुमालियउ छेदु होसिइ।
चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ।
अतिसइं दीसइ देहकंति सेणीचिति चडीउ ॥ ८ ॥
देवहं नवि हुइ एहु नाणु थउ किम होएसिइ।
आजूना दीह सातमए इणि नयरि चवेसिइ।
किकारण पुण एहकंति किरूयह अतिसउ।
कवणह धम्महतणइ भावियउ देवअइसउ ॥ ९ ॥
ठवणि—महाविदेहतणइ विजय वीतसोय नयरी।
पदमरथ नामेण राउ वनमाला घरणी।
तास ऊयरि ऊपन्न पुत्रु सुरलोयहहुंतु।
वद्धइ नामिइं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥
पुव्वभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि पहुतु।
आवीउ वंदण सिवकुमार बहुभत्तितुरंतउ।
हउं जाणउं तू मुणिहिं नाह कीछे मइं दीठउ।
एह जन्मह तइयभवि मुझ भाइ य हूंतउ ॥ ११ ॥
ऊहापोह करेहि जाम पाछिलउ भय देषइ।

जा मई मूंकी सुरह रिद्धि या कीणइं लेखइं ।
तु चिंताविउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।
भवनिन्नासण लेइसिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥
माइ न मेल्हई एकपूत सो मुनिहिं थाई ।
दृढधम्मेण सावएण जायवि बोलावीउ ।
पारि पारि दृढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।
दुल्लभ वेडी मणुयजम्म जतनिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥
कहइ धम्म सो मुणिहिं जाम तसु वयण मनेई ।
विहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।
फासुयवेसण भत्तपाण दृढधम्मो आणइ ।
माहि थीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥
नवकरवालीतीपधार करमं सवि सूडइ ।
निहणइ मोहकंदप्पराउ भवपरीयण मोडइ ।
बारहं वरसहंतणइ अंति आऊर्पू पूरीजइ ।
पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥
कवणह नारिहिंतणइ उयरि एह जीव चवेसिइ ।
कवणह बापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।
उसभदत्तसेठिहिं घरणि धारणिउरि नंदण ।
होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥
ऊठीउ देव अणाढिउ हरपिइं नाचेई ।
धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।
चविउ विमाणह बंभलोय धारणिउरि आविउ ।
सुमिणप्रभाविइं उसभदत्त अंगेहिं न माईउ ॥ १७ ॥
जायउ पुत्तु पहाण जाम दसदिसि उद्यंतउ ।
वड्डइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।
अठवरीसउ हूउ जाम गुरुपासि पहूतु ।
ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥
जोयणवेसह पहुतु जाम कन्ना मग्गावइ ।
बीजा धूया पाठवए तस विवारा वय ।
मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि इसउं करेशउं ।

सांझइं परणी प्रहह जाम नीछइं व्रत लेसिउं ॥ १९ ॥
माय दुलुंबीय तणइं वयणि परिणेवउ मन्नीउ ।
आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आवीउ ।
आठइ परणी मृगनयणी बूझवणइ बइठउ ।
पंचसएचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पइठउ ॥ २० ॥
नीद्र अणावीय सोयणीय आभरण लीयंता ।
ते सवि अछइं थंभीया टगमग जोयंता ।
प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक साठि ज कीजइ ।
विहुं विज्जावडइं एक विज्ज थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥
हिव हूं कहि नवि ज लेवि पुण किसउं करेसो ।
आठइ परिणी ससिवयणी नीछइं व्रत लेसो ।
रूपवंत अणुरत्त रमणि एउ एम चएसिइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस मुझ जीव करेसिइ ॥ २२ ॥
एवडु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।
संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।
सिद्धिरमणिऊमाहीया ह तम्हि संजम लेसिउ ।
कवणइं विलवइं माइबप्प किम किम मेल्हेसिउ ॥ २३ ॥
इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।
अढार नात्रां एकभवि जंबूस्वामि कहेई ।
पितर तम्हारा जंबुसामि किम तृपति लहेशइं ।
पिंड पडइ लोयहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥
बाप मरवि भइंसु हुउ पुत्रजन्मि हणीजइ ।
इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि भीयरि कीजइ ।
अणहूंतासुहतणी य आस हूं तउं छांडेसिउ ।
तिण करसणि जिम कलत्र भणइ अवतरला करेशिउ ॥ २५ ॥
तम्ह रूपिहिं हउं लोभ करउं देखि मणहर रूपडउं ।
हत्थिकडेवर काग जिम भवसायर निचडउं ।
बीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अम्ह छंडेसिउं ।
तिणि वानरि जिम पच्छुताव बहु चींति धरेसिउं ॥ २६ ॥
बिंदुसमाणउं विसयसुक्ख आदर किम कीजइ ।

इंगालवाहग जेम तुम्हि तृस किम न छीपइ ।
त्रीजी कलत्र भणइवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।
तिणि जंबुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥
ऊतर पडि ऊतर वहू ष संखेवि कहीजइं ।
विलखी हुई ते सवि वाल जंबूसामि न बूझइं ।
आसातरुवर सुक्क जाम अम्हि इशउं करेशउं ।
नेमिहिसिउं राइमइ जिम वयगहण करेशउं ॥ २८ ॥
आठइ कलत्रह बूझवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।
माइ वाप वेउ भणइं ताम अम्ह साधुसरीसउ ।
ठवणि —प्रह विहसइ सुविहाण प्रभवु विनवइ जंबुसामि ।
सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥
खण एक पडवाएवि राय मोकलावण चालीय ।
तु सुहडसमूह करेवि भुइं कंपइं भडभडवइं ॥ ३० ॥
जस भय धसकइ राउ जस भय नींद्र न वयरीयहं ।
एसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।
पहुतु रायदुवारि पडिहारिइं वोलावीउ ।
वेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥
पुत्ततणउ विझ राय तुम्ह दरिसणि ऊमाहीउ ओ ।
कारण जाणीउ राय वेगिहिं सो मेल्हावीउ ओ ।
द्रेठि न खंडइ राउ प्रभवउ देषी आवतउ ।
साचउ ए भडिवाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।
सोहइ पूनिमचंद जइठव कोणी प्रणमीउ ।
नुतउ अवहसीय शरीर जइ कोइ जणणीजाइउ ।
नयणे छूटुं नीर संवेगजलहरि वरिसिउ ।
सामी खमि अपराध अम्हे लोक संतावीया ए ॥ ३३ ॥
पडिवज बोलइ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।
धन्न पनुती माइ इसिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।
तो मोकलावी राउ चोरपल्ली सासंचरए ।
सजनह कहीइं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

जिण कारणि वइराग तं कारण अम्ह बोलीइ ए ।
मेल्ही अट्ठइ बाल कणयकोडि नवाणवइ ए ।
अनइ रिद्धि बहूत निहिं पुण पार न जाणीयए ।
जंबूसामिचरित्त महिमंडलि हुउं अच्छरीय ॥ ३५ ॥
इणि कारणि वयराग तृण जिम दीठउ मेल्हतउ ओ ।
अम्ह सोइ जि सामि नम्हे मन्नइं अछजिउ ओ ।
मोहनरिंदगउं झूझ संजमसिरिइं झूझसिउं ओ ॥ ३६ ॥
ठवणि—प्रभवउ पंचसएण अट्ठवरघरमाइबप्पो ।
सविकहं ए रूठउ जाइ नीयघरहंतु नीसरइ ए ।
चालीउ ए सिवपुरिसाथ सारथवाय तिहिं जंबुसामि ।
तिहुयणी ए जयजयकार सोहम दीखीउ जंबुसामि ।
थंचण ए रयणिहिं दाण जिम घण वरसइ भाद्रवए ।
सयतऊ ए ईह गोलीक भवियजणसंवेगकरो ॥ ३७ ॥
ठवणि—फसवेगी पिइ माइ पुत्र कलत्र धन्न धण ।
देखी कुटिमारिच्छ जिण जिम जंबू परिहरए ।
अनइ लोक बहुत्त घन लेवा तिहिं चालीउ ।
थंदिय जिणभवणाइं सोहम्मसामिपासि गयउ ॥ ३८ ॥
भवसायर उतारि जम्मण मरणह बीह तउ ओ ।
पंचमहव्वयभार मेरुसमाणउ अंगमइ ए ।
अनु तेनउ परिवार सोहमसामिहिं दिखीउ ओ ।
हुउं केवलनाण संजमराज इ पालतां ए ॥ ३९ ॥
वीरजिणिंदह नाणि केवलि हुउ पाछिलउ ।
प्रभवउ धरमधोरीउ पाटि सिद्धि पहुतु जंबुस्वामि ।
जंबूसामिचरिय पढइं गुणइं जे संभलइं ।
सिरिजिणचंद मुणिंद ते नर सिद्धिहिं पामिसिइं ॥ ४० ॥
महिंदसूरिगुरुसीस धम्म भणइ हो धामीऊ इ ।
चिंतउ रातिदिवसि जे सिद्धिहिं उमाहीया इ ।
धारस्यरससमणिहिं कवित्तु नीपनुं पालरुउ ।
मोगद विजयाणवि दुरिय पणासउ सयलसंघ ॥ ४१ ॥
॥ इति श्रीजम्बूस्वामिचरितम् ॥

सप्तक्षेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेवी सिद्ध सूरि उवज्झाय ।
पनरकर्मभूमिसाह्र तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥
जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।
समरिउ पंचपरमिष्ठि नवकारो सप्तक्षेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥
धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवरु स्वामी ।
गुरु सुसाहु जिणभणिउं धम्मु सुग्गइगामी ॥ ३ ॥
बारि अंगि दुलहु मणुजम्मु अनी अ विशेषिहि जिणवरधम्मु ।
सम्मत रयणु चिंति निवसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥
पुणु जिणसासणु कुलहउं जीव संभलि कथनु निरुपमु ।
नाणुपहाणु एकु जि जिनवरधम्मु ॥ ५ ॥
भरहखित्ति खट्टखंडह थित्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।
वैताब्यपरहां त्रिन्नि खंड होइ तहि धरमनामु निवरतन तोइ ॥ ६ ॥
उल्या त्रिहु खंडि थित्ति केवलि इम आपइ ।
तीहमांहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥
मज्झिम पंड इकु वइनी मंडिउ तेउ त्रिहुभागि पाछइ पडिउं ।
चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ सयमइ भागे ॥ ८ ॥
ते अ नवाणवइ भाग साह्र मिथ्यातिहि जडिउं ।
थाकतउं कुमतिकुबोधिकुगुरुग्गहि पडिउं ॥ ९ ॥
थोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।
हिव तिहुयणिहि सारु समिकत्तु पामिउ जीवि जिनभणिउ नवतत्तु ॥१०॥
वार वरत तई पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।
सुगइनिबंधण सत्ता जीव मुगति दीयंता ॥ ११ ॥
प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होई बीजउ सत्यवचनु जीव जोई ।
त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥
परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।
इणपरि भवह समुद्दो जीव निश्चय तरीजइ ॥ १३ ॥
छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।
अनरथव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूलु ।
पोषधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूलु ॥ १५ ॥
व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।
जे ईणइ मारगि चालइ संसारे धनु सक्रियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥
समकितमूल व्रतु बारइ गहियधरमि पालेवउ ।
ससक्षेत्रि जिनभणिया तिह वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥
ससक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वितु वावेजिउ विवहपरे ।
जिनवचनु आराधीउ अवक्रमु साधिउ लहइ पारु संसारुसरे ॥ १८ ॥
ससक्षेत्रि जिनसासणिहि सवली कहीजइं ।
अथिरु रिधि धनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।
तेहि क्षेत्रि वावेत्रणा थानकि लाभइ देवलोको ।
कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥
पहिलउं क्षेत्र सु जिणह भुवण करावउ चंगू ।
जीछे महिमा करइ सहु श्रीचउविहसंघू ।
मूलगभारउगूढमंडपुछकुचउकीसहिउ ।
आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥
तहिं आतरइ वलामणु कीजइ आवेरउ ।
जिम जिनभवनह नालिमाहि दीसइ नीकेरउं ।
उत्तंगतोरणु थंभथोरु घाटु अतिनीकउ ।
कडीपइ नानाविधि रूपि सारु चारु तहि नीसलु जडिउ ॥ २१ ॥
बिहु पक्ष फरती देहरी कीजइ अतिरूडी ।
ठवीजइ मूर्ति जिनहतणी माहि तेवड तेवडी ।
कणयकलस दंड घांटीइं धज पूरीय कियजइ ।
छोहपकनभासाहु भलउ जीव नीपाइजइ ॥ २२ ॥
तहि जिनबारिं कमाड भलां कीजइ अतिसुविघट ।
सारूआर दृढ प्रागू ए जो आवइ संपुट ।
तालां कूंची सांकली अतिनीसल कीजइ ।
जउ आथमणइ जाइ सूर तउ संपुट दीजइ ॥ २३ ॥
अनिमउ जिणह भुयणु किरि अमरविमाणु ।
दीसइ मूरति वीतराग माहि तिहुयणुभाणु ।

कवणु रूप वीतरागतणु जोइ कवणु विशेषु ।
अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोकु ॥ २४ ॥
भामंडलुसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्तू ।
भेरिचमरदेवंझुणिहिणि जोइ कवणु प्रभुत्तू ।
ए थिति एसी वीतराग मेल्हो अवर न होई ।
सुरादिक जिनसेव करई नवि सगलई जोई ॥ २५ ॥
तउ जिनजीर्णउद्धारु भवि जीव विशेषिहि करीयइ ।
भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ तोइ समुद्धरियइ ।
लीपिउ धउलीउ भीगु देइ चीत्रासु लिपीजइ ।
इणपरि भुयणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥
अनीउ जु काइं किंपि ठासु जिणभुवण सीदाइ ।
तं निश्चिइं करावीयए वहुफलु बोलाइ ।
आपणि सामिउ वीतरागु ईणपरि भणेइ ।
जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥
बीजं खेत्रु सुजिनह बिंबु ते इहां विचारो ।
मणिमय रयण सुवर्णमए बिंब रूपम कारो ।
हिव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा छ कहीसइ ।
कीजइ कणयभिंगार कलस जे नीर भरीसइ ॥ २८ ॥
तउ सीलमइ करावीयइ जिनभवन ठवीजइ ।
पारइ पीतलमइ भलां ग्रिहचैति पूजीजइ ।
घरि देवालाइं कराविय नीकाइ मणोहर ।
जीछे तिहुयणसरण सामि पूजीजइ जिणवर ॥ २९ ॥
सुगंधि नीरि सनाथु करइ जिण जीणि आणंदिहि ।
ते संसारह कसमलह नवि छीपइ विंदिय ।
अंगलूहणे सूक्ष्म करउ सुफरां वहुमूलां ।
नियनियसत्ति करावियइ कीजे देवंगतूलां ॥ ३० ॥
कीजइ ओरसु रूयडा सिरखंड घसेवा ।
कपूरवटे वाटीइ कपूरु जिनस्वीमुखि देवा ।
मूंकइ जिणभुयणिहि धोलि अतिनीकी धूपो ।
चालाकुंची पूंजणीइ पीगाणी कूंपी ॥ ३१ ॥

अतिसुगंधिहिं सिरखंडिहिं कपूरिहि आंगी ।
कीजइ सामी वीतराग प्रभु नवनवभंगी ।
कस्तूरिहिं कुंकुमिहिं तिलउ निलाडिहिं सामी ।
ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ धामी ॥ ३२ ॥
तउ आभरण चडावियइ सोव्रणमय घडिया ।
हीरे माणिकि मोतीए बहुरयणे जडिया ।
अतिरूयडउं आभरणउ भलउं कीजइ संपूरउ ।
नीकउं सिहरउं पूठिउं हृतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥
कानिहिं कुंडल सिरि मुकुटु किरि ऊगिउ भाणूं ।
जाणे तिहुयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।
उरह माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।
नयणि निहालिन वीतरागु रूयडउ सुरसार ॥ ३४ ॥
बाहुजुयलि बेउ बहिरखा अतिनीका सोहई ।
टीछउं श्रीवत्सु साख्यार भवियण मणि मोहइ ।
सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।
सोहइ बीजउरउं रूयडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥
इणि विवेकिहिं बहु य विशेषिहिं जिणवरपूज सलक्षणी य ।
करउ मनरंगिहिं नवनवभंगिहिं श्रीसंघनयणसुहामणी य ॥३६॥
एती अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपन्नी ।
हिव आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमन्नी ।
कीजइ कुसमे चंगेरीयए पूज कारणि रूयडी ।
वावरीइ दीहु देवकाजि अन्नइ छाजी छबटी ॥ ३७ ॥
रायचंपु केतकी जाइ सेवत्री परिमल ।
बउलि सिरीवालउ वेभलु अनु करणी पाडल ।
नीलउत्री विचि पूजमाहि सोहइ अतिचंगी ।
वितपति दीसइ रूयडे तिणि नवनवभंगी ॥ ३८ ॥
नीकउ कणयरू पूजमाहि वरणकि सोहंती ।
परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाछइ विहसंती ।
मुंदु अनइ मुचकुंदु वालु जूई परिजाते ।
एसे कुसुमि करउ पूज तुम्हि तिहुयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सरूयउ वावची अनइ कल्हार ।
सहुयइ सोहइ वीतराग सामी सुरसार ।
नीलउत्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।
ईणपरि पूजइ सामिसाल नरनारी धन्न ॥ ४० ॥
एहि रामणीयइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।
तउ नक्षत्रहतणी माल दीवाशू चंगी य ।
खेलीयइ माहि भुयण जिणविंबहकेरी ।
आणी कुसुमे पूजियइ ते सवि संखेवी ॥ ४१ ॥
समोसरणु जो पूजीयए जो तिन्निपयारूं ।
चिहु पखि दीसइ वीतरागु जहि तिहुयणसारू ।
तउ पूजा नीपन्नी पूठि धूपडटजउ लीजइ ।
वीजणिय ऊखेवितु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥
धूप अगुरु सातिवारेसि डावडी जि कीजइ ।
दंडासणे अतिरूयडे जिणभुवणु पुंजीजइ ।
आखेरिहिं मंजूस भली अन्नय चउकीवट ।
ढोइउ आखे करउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥
वद्धमाणु वरकलसु अनइ भद्दासणु छत्तू ।
दप्पणु नंदावरतु तहि साथिउ श्रीवत्सू ।
अठ मंगलीक तीण पाटि भरियइ जिनआगइ ।
इणपरि जं धन वेवीइ ए तं लेखइ लागइ ॥ ४४ ॥
दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रत्रउ दीजइ ।
चमर ढलंते वीतराग तेहि धनु वेवीजइ ।
ते उलोच कारावियइ जिणभुवणमज्झारे ।
वाचोटा मरवर अ लंब कीजइ जिनबारे ॥ ४५ ॥
तोरण वंदुरवाली वारि सापि जिणभुवणि ।
पूजा जोइ सहु कोइ आवइ तीणि त्विणि ।
पूजा जोइवा जिणह भुयणि तोइ सुहगुरु आवइ ।
तउ संघिहि आग्रहु करीउ तीछे रहाविय ॥ ४६ ॥
पडपउ वेला एक प्रभु अहां उच्छवु होसिइ ।
संघयणु मानेवि सुगुरु निसि सिखं पइसइं ।

तिणि वेलां वइसणां पाटि जोइ पाटला ।
चउकीवटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ भला ॥ ४७ ॥
वइसइ सहूइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता ।
जोयइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरप धरंता ।
तीछे तालारस पडइ वहु भाट पढंता ।
अनइ लकुटारस जोईई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥
सविहूं सरीषा सिणगार सवि तेवड तेवटा ।
नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रूडा ।
सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता ।
तालमानु छंदगीत मेलु वाजित्र वाजंता ॥ ४९ ॥
तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजई ।
पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइं छाजइ ।
पंचशब्द वाजंति भादु अंबर वहिरंती ।
इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीसंघु करंतउ ॥ ५० ॥
तउ आरत्ती परुगुणउं कीउं आरती पटऊपरि ।
ऊठिउ संघपति विधिहिं सहिउ तउ साहीउ विहुकरि ।
नीर लुण ऊतारियए कुसुम ऊनारी ।
संघपति ऊठी सेसि भरइं सइहत्थिहिं माडी ।
संघपति आरती छिया हुइ जउ वार वडेरी ।
आरती जोगी थांभली अ आणउ गरूएरी ॥ ५१ ॥
पाछइ जिणगुण गाइ पढइ सहू पालउ लोक ।
श्रीसंघु तीह अ दानु दियई जीह जेसा जोगू ।
ऊतारीइ आरतीअ तोइ संघपति सइ हरखिउ ।
रोमांचीसारीरु तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥
मंगलीकु ऊतारीयए घंट वाजइ सरूई ।
श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूइं ।
तउ विधि वांदियउ वीतराग श्रीसंघु ऊनारीउ ।
इणपरि सुकृतभंडारु तोइ भव्यजीविहिं भरियउ ॥ ५३ ॥
जे जिन भुवणतणां कृत्य ईह छेडइ कहिया ।
ते गृहचैत्य करावियइ सविशेषिहिं सहिया ।

अनि अ ज काईं कोइ ठामु मूं हूइं वीसरियउं ।
तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहूइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥
उछवुं जिनभुवयणि हरपि नियमणि करइ संघु जयवंतु ।
नितु हिव त्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्तु सुणउ जीव जे जिणभणितु॥५५॥
त्रीजउ क्षेत्रु सु संभलउ ए वरलोयणे जं भणिउं वीयराइ ।
गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि ऊपम काइ ॥ ५६ ॥
वचन इकेका मूलु नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु ।
त्रिहु भुवणे चूडामणि य मृगलोयणे सहू जाणइ अरिहंतु ॥५७॥
पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० बुज्झइ लोकु अलोकु ।
सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु॥५८॥
गणधर करइ जं पुव्वधर वर० सुयकेवलिहि करंतु ।
दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ यइ सिद्धितु ॥ ५९ ॥
त्रिहु भुवणहतणाउ जाणियइ वर० आगममाहि विचारु ।
चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोनमु सुतिहारु ॥ ६० ॥
सूत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणिउ एउ सूत्र ।
त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आघउं गोतम वृतु ॥ ६१ ॥
केवलनाण वुच्छिति गयउं वर० गया सवि पूरवधर ।
जे हूंता गुरु प्रज्ञघणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥
अल्पप्रज्ञह नवि थाहरए वर० जिणवयणुं निरूपमु ।
तीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगमु ॥ ६३ ॥
भक्षाभक्ष सो बुज्झियए वर० अन्नी गम्मागंमु ।
कृत्याकृत्य परीछियए मृग० जाणीयइ धर्म्माधर्म्मु ॥ ६४ ॥
धन जीवी लाहुउ लिउ ए वर० बुज्झियइ एहु विचारु ।
श्रीसिद्धंतु लिखावियए मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥
त्रीजउ क्षेत्र इस वावीयए वर० चित्ति संवेगु धरेउ ।
वेचीउ वित्त लिखावियए मृग० श्रीसिद्धान्त जाणउ ॥ ६६ ॥
वाहृदंड पोथा कराउए वर० पोथीय नीकी य तोट ।
ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोइ ॥ ६७ ॥
पाठां दोरी वींटणां वर० वर सिद्धांतह भत्ति ।
वानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

कामदेव जिम चलइ नही वीतरागह धर्म ।
वीरनाहु जिणवरु दियइ तसुनी ऊपम्म ॥ ९७ ॥
सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।
शीलवंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।
जिनह वचनि तिम सातधातु जीह श्रावक भेदी ।
जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ ९८ ॥
जाणइ ऊचितु सहू काय साचउ विवहार ।
त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निश्चउ सारु ।
उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेपू ।
भणियइ श्रावकतणी भावीय मूलिइ सा जीह एहु विवेक ॥९९॥
जे पुण श्रावकतणा भविय कहीयइ जिणसासणि ।
ते गुणु जिण भणइ श्रावियह जाणेवा नियमा ॥ १०० ॥
त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीतरि जीह ।
सुलहउ सिवपुरतणउ वासु तो श्रावक तीह ।
पढइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संवेगि संपूरिय ।
सील सनाहि पहिरिइ कम्मऊपरि सूरी ॥ १०१ ॥
ईहं तु श्रावकतणउ क्षेत्रु वापु मवि दीस ।
जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्मतणी जगीस ।
जिम भरथेसरि वावी रिसहेसरनंदणि ।
गृहवासऊपरि ज्ञानु जासु पसरीउ तिहुयणि ॥ १०२ ॥
तिम तुम्हि वावेउ भलीपरि भविउ इउ खित्तु ।
लहिसउ फल निरवाणनयरि तिम निरां वहतु ।
पहिलुं कीजइ महाविनउं गुणश्रावक जाणी ।
पाय पखालीय सहराणि लेउ कुंकुम पाणी ॥ १०३ ॥
पाछइ भोजनुं भलीयभत्ति सविवेकिहि सहियउ ।
दीजइ श्रावकश्राविकां एउ आगमि कहिउ ।
ऊपरि ऊगाहि फूल पान कापड अनुमानिय ।
दीजइ निजभत्ति भलां गरूयइ बहुमानि ॥ १०४ ॥
भरतेसर जिम श्रावकह दीजइ आपासे ।
सींगा जे जिनवयणि अछइ गणगुणह निवास ।

वाछिलनी परि एक कीसउ परि हुअइ असंख ।
विधिमानु फरसइ सहू कोइ नरनारी दुःख ॥ १०५ ॥
वाछिलनी परि एकजीभ हउं कहिउं न सक्कउं ।
एकह वारु सारु सक्र तुम्ह कहीउ अज मू किउं ।
जं जं कीजइ कुणवकाजि अतिभलां भलेरां ।
ता कीजइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ १०६ ॥
कीधे काजे कुटंबतणे अतिघणउ संसारो ।
जं कीजइ साहंमिअकेरउ काजि ते परत भंडारो ।
इणपरि वाछिल श्रावकह कीजइ सुरचंगू ।
हव ते कहीइसिइ जिणभवणि वाछिल अंतरंगू ॥ १०७ ॥
जिणपरि लोग समाराअए सवि साहंमिअकेरु ।
थाकइ जिम संसारमझि वलि वलि एउ फेरु ।
कीजइ श्रावकश्राविकारहि वरपोषधशाल ।
जीछे करिसिइ धरमध्यान तु हरपि सवि काले ॥ १०८ ॥
षड्जीवरक्षा सवि काल तीछे दीसंती ।
समकितसिउं वार य व्रत जीव अनेकिइ लहंती ।
प्रतिमा नीम अभिग्रह संपज्जइ तिणि हाट ।
अनेकि सुकृत ऊपजइ कुहियाकडेवरमाट ॥ १०९ ॥
तीछे सुगुरु वषाणु करइ आगमभंडार ।
सहू समाधियइ सांभलइ न्यूथ नरनारे ।
थापनाचार्य चउकीवटउ सिंहासण कीजइ ।
नउकरवाली चिरवला मडुपत्ती मूंकीजइ ॥ ११० ॥
संथारा ऊत्तरउट पाटि कीजइ पुंछणा ।
करे पोसाल पाटला अनइ दंडाळणा ।
काजामेलणी य पउंजणी य काजाऊधरणी ।
पौषधसालहतणइ ठामि ए काजह करणी ॥ १११ ॥
कीजइ कमली ठवणी य याचीजइ सिद्धांतु ।
ज्ञान पढंता जीव तोहा कर्मक्षय अनंतु ।
जइ ज्ञान पटिलेख्या मोरवीळी य ऊे तोई ।
दीसई आगर पटवटा अनइ जइणा होई ॥ ११२ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु इम वावउ निरुपम लियउ लाभु हुंतातणउ ।
जिम अट्ठकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि खेमिइ सुणउ ॥६९॥
हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासत्ति ।
पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियठवणा॥७०॥
इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ निश्चय भवसायरु तरीजइ ।
जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ खरतर संजमि॥७१॥
पंचमहव्वयभारु धरंता दस अनु च्यारि उपगरण वहंता ।
नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारित्तवंता ॥ ७२ ॥
जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुत्तिहि जे अछइ गुपिता ।
सीलंग सहसअढार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥
जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुवियार ।
जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ॥
ईणपरि भल्ला क्षेत्र विशेषि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।
जिम तु छूटउ भवना भार पामउ सिवसुखु निरुपमसारु ॥ ७५ ॥
जे जिनआण सदा छइ रत्त वावीस परीसह सहइ अपमत्त ।
जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ७६ ॥
बईतालीसदोषसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिट्ठउ ।
इंद्रियविषयव्यापि नवि गूचइ तवि नीमि संजमि खण वि न मूचइ ॥७७॥
किसुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।
अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥
प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।
एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥
चालइ खड्गधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइं सुरवरि ।
महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हूं तेहि पवित्त ॥ ८० ॥
जीह जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरह समी ।
जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥
जिणसासणु जेहि य इम उज्झालिउ कलिमल पावपंकु पखालिउ ।
एउ साह अनइ श्रमणी खित्त वाविन धामी हुईउ सचित्त ॥ ८२ ॥
जा हिवडां तूं संपति अच्छइ इसीय वराप न पामिसि पछइ ।
जउ भलऐत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किसउ लुणाविसि॥८३॥

वराप टली वितु वाविसि सारु ऊगिसि खडसलु काइ कतवारु ।
जउ भलक्षेत्रि वरापहं वाविसि तउ इकुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥
ए भलुं क्षेत्रं जिनवरि कहिया वावे धम्मी भावणसहिया ।
तउ सीचे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सफली गय निरुवाणी ॥ ८५ ॥
ईणपरि वावीजइ मुनिखेत्रु दीजइं भत्त पातु सुझंतु ।
विद्यादानुं जउ दीजइं सारु जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥
ओषधआदि सहु सूझतउ तं तं दीजई नियघरिहुंतउं ।
अनिउ ज्ञ काई मुनि उपगरइ तं सूझतूं वहरउं करइ ॥ ८७ ॥
जं जं मुनि जोअइ सूझंतउं तं तं दीजई नियघरहुंतउं ।
गुरु आवंता कीजइ अभिगमणउं दीजइ भक्ति थोभवंदनउ ॥ ८८ ॥
विनउ वेयावचु अनीउ विशेषिउ कीजइ भवीउ महामुनि देखीउ ।
पर्युपास्ति तही कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय॥८९॥
एह ज परि श्रमणी जाणेवी करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेवी ।
जे सूझ महामुनि दीजइ तं तं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥
आगइ लोइ पूर्विहि सुणीजइ धनु धनु सारथवाह कहीजइ ।
घीउ विहिराविउ जिणि मुणिंदउ तिणि फलि हूयउ पढम जिणंदू ॥९१॥
हथिणाउरि नयरि श्रेयंसिहि पाराविउ रिपुभु इक्षुरसिहिं ।
तिणि फलि तिण भवि केवलु ज्ञानु दिइन भविकु मुनि इणपरि दानु॥९२॥
वीर जिणेसर छट्ठा मास चंदण पारावइ कोमास ।
तीणि दानि शिव संपति पामी दियउ दानु तुम्हि अनुन्नन धामी ॥९३॥
जोइन संगमि कीउं मुनि पारावीउ खंट खीरु घीउ ।
तिणि फलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाछइ होसिइ सिवसुहगामी ॥ ९४ ॥
इउ भलुउ खेतू वावउ वितू अतिफलीअइ संवेगचित्तू ।
सिवसुह संपत्ती देइन भत्ति सामिसालु आगमि भणित्ति ॥ ९५ ॥
हिव लोइ श्रावकतणउं क्षेत्रु भवी कहीसइ ।
जउ जिणसासणतणी भूमि अतिभलउं फलीसिइ ।
किसउ सुश्रावक जाणियउ जिणसासणभिंतरि ।
श्रीवीतरागतणी य आण मानइ सिरऊपरि ॥ ९६ ॥
समकितमूल बार वरत पालइ नरनारि ।
नियसइ हियडइ वीतरागु एक जि सुरसारु ।

ईइ सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअणुसारे ।
पुण तुम्हे वावीयं भलीयपरि वित्त आपणरे ॥ ११३ ॥
न्यायनीति वितु लिउं तीउ थानकि वावे ।
जिणसासणि वेवीतु कुलि कमल सु चडावे ।
संघसमुदाइ सहू कोइ तीरथ वंदावे ।
देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणावे ॥ ११४ ॥
इम वितु सु वेचउ धम्म सु संचउ अप्प जीव म वंचसुउ ।
वली न लहिसउ प्रस्तावु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥
सातक्षेत्र इम बोलिया पुण एकु कहीसिइ ।
कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।
कांईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सूत्र ।
ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥
मूं मूरप तोइ ए कुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।
अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।
तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।
श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥
संवत तेरसत्तावीसए माहमसवाडइ ।
गुरुवारि आवी य दसमि पहिलइ पखवाडइ ।
तहिं पूरू हूऊ रासु सिव सुक्ख निहाणूं ।
जिण चउवीसइ भवीयणह करिसिइ कल्याणूं ॥ ११८॥
जां सिसि रवि गयणंगणिहिं ऊगइ महिमंडलि ।
ता वरतउ एउ रासु भविय जिणसासणि ।
निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं ।
गयवंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तक्षेत्ररासः समाप्तः ।

कछूलीरासः

गणवइ जो जिम दुरीउविहंडणु रोलनिवारणु तिहूयणमंडणू पणमवि सामीउ पासजिणु।
सिरिभद्देसरसूरिहिं वंसो बीजीसाहइ वंनिसु रासो धमीय रोलु निवारीउ।
सग्गपंडु जिम महीयलि जाणउं अठारसउ देसु वखाणउं गोउलि धन्नि रमाउलउ॥
अनलकुंडसंभम परमार राजु करइं तहिंछे सविचार आबूगिरिवरु तहिं पवरो।
विमलडवसहीं आदिजिणंदो अचलेसरु सिरिमासिरि वंदो तसु तलि नयरी य वन्नीयए।
जणमणनयणह कम्मणमूली कछूली किरि लंकविसाली सरग्रववावि मणोहूरी य॥

वस्त—तम्हि नयरी य तम्हि नयरी य वसइं वहू लोय।
चिंतामणि जिम दुच्छीयहं दीइं दानु सविवेय हरिसि य।
सचइं सीलि ववहरइं कूडकपटु नवि ते य जाणइं।
गलीउं जलु वाडी पीइ धम्मकम्मि अणुरत्त।
एकजीह किम वन्नीइ कछूली सु पवित्त॥

हिमगिरिधवलउ जिसु कविलासो गुरुमंडपु पुतलीयविणासो पासभूयणु रलीयामणउं।
भवीयहं गुरु मणि आणंदु आणइ जसहटनंदणु तं परिमाणइ सतरि भेदि संजमु परिपालइ।
विहिमगि सिरिपहसुरि गुण गाजइ एगंतर उपवास करइ बीजा दिण आंविल पारेइ।
सासणदेवति देसण आवइ रयणिहिं ब्रह्मसंति गुरु वंदीइ कविलकोटि श्रीय-सुरि विहरंतइं।
मालारोपण कीयां तुरंतइं सइ नर आवीय पंचसयाइं समकिति नंदइं वहू य वयाइ।
छाहटनंदणु वहु गुणवंतउ दीग्व लीइ संसारविरत्तउ।
लापणछंदपरमाणपरिरुणु आगमधम्मवियारवियरुणु।
छत्रीसो गुरुगुणि जुत्तउ जाणीउ नियपदि ठविउ निरूत्तउ।

माणिकपहुसूरि नामू श्रीयसूरिप्रतीछीउ कछूलीपुरि पासजिणभूयणि अहिठीउ॥
सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहूसवजुत्ती।
श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहूतउ सुरनाही।
निवीय आंबिलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि वंदउ पाया।
विणठदेह जस धवलह राणी पायपखालणि हुई य पहाणी।
माणिकसूरि जे कीध जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम वन्नउ भवपाव-
पणासण ॥
कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकछुलि जाएवि गुणमणिगिरि।
सेठि वासलसुउ वादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी।
संघु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेगि नियपाटि गुरु ठविउ अइसइ परे।
उदयसिंहसूरि कीउ नामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए।
सूरु जिम भवियकमलाइं विहसंतओ नयरि चड्डावली ताव संपत्तओ॥
वन्न चत्तारि वरवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए।
कोइ कम्माली पाऊयारूढओ गयणि खापरिथीइं भणइ हउं वादीओ।
पंडिते वंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चिंतियं।
वादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह माणु रहावइ॥
वस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह।
नीरंतइं नीरु पडो गरुयदंडटंकरु करंतइं।
धंधलु राउलु विन्नवइ सामिसाल पइ मझि संनइं।
वंभण तपसीय पंडीया जं त न वंधइं वाल।
सु गुरु कम्मालिउ निब्भणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल॥
धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस।
उदयसूरि संघिहिं सहीउ निवसइ ए निवसइ ए निवसइ वरहरि पीठि॥
सत्थिपमाणी हरावीउ मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं ए मंत्रिहिं वाडुकमठो॥
सेयंवर तउं हिव रहिजे जे गुरु सिद्धिहिं धंडो।
विमहरु आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउं दंडु पयंडो॥
तउ गुरि मुहंनां मिल्हिकरि होई गरडु पणेण।
धाइंउ लीपउ चंचुपढे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो॥
पाउपिल्लि वि संमुहीय डरडरंतु थीउ वाघो।
जोयणहार सवि पलभलीय हीपडइं ए हीपटइं ए हीयडइ पडीउ दाघो॥

तउ गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सीहु करालो।
वाघह जं ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सवालो॥
इत्थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडीय ठीव।
हुउ कमालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं चाईय चूंब॥
छंडीउ माणु कवालधरो धाईउ वंदइ पाय।
खमि खमि सामि पसाउ करी जीतउं ए जीतउं ए जीतउ तइं मुणिराय॥
वस्त—ताव संघीउ ताव संघीउ ठीव मंतेण।
गणहरि करि कम्मालीयह भिन्नभरीउ अप्पीउ मुहत्तिण।
रामिहिं जिम वायसह इक्कु निजुत्त सु हरीउ सत्तीण।
धारावरसि कयंतसमि भिडीउ डिंभीउ ताम।
प्रतपउ कोडि वरीस जिनउदयसूरिरवि जाम॥
चड्डावलिहिं विहरीउ प्रभु पहुलउ मेवाडि।
पासु नमंसीउ नागद्रहे समोसरीउ आहाडि॥
जालु कुदालिय नीसरणी दीवउ पारउ पेटि।
वादीय टोइरु पइ धरए पहुत्तउ पमणउ पेटि॥
केवलिभुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि।
उदयसूरि पमणउ पलीउ जयत्त ल रायअथाणि॥
केवलिभुकति म भ्रंति करे नारि जंति ध्रुव सिद्धि।
तिसमयसिद्धा वज्जि जीय लीइं आहारु विसुद्ध॥
पीच पीर दीठंतु दीउ जिन्नु नंदिसुणिदेवि।
गयकुंभथलि आरुहीय पढमसिद्ध मरुदेवि॥
विवरणु पिंडविसुद्धि कीउ धमविहिग्रंथु प्रसिद्धु।
चीयवंदणदीवीय रचीय गणहरु भूअणि प्रसिद्धु॥
अम्हहं साजणसेठे छम्मासइं कालो।
वसतिणि ऊपरि ऊपनउ पदि ठाविजि वालो॥
तेरदुरोत्तरवरिसे अप्पउं सापेइं।
चड्डावलि दिविहो जगि लीह लिहावी॥
पछुली जाएवि परमकल सु गच्छभारुधरो।
पंचम वरिस वहंति सजणनंदणु दीखीउ।
देवाएसु लहेवि गोठीय सत्तमे वरिस लहो।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरे ।
गोतमसामिहिं मंत्तु आपाव्वीजइ दिणी दीइए ।
जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारइ सो पढए ।
त संजमि रणि जीतु सयरह चुकउ पंचसरो ॥
गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वह य ।
सावय कीय उवयार संघपभावण तहिं घणी य ॥
सात्रीसइ आपाडि लक्खमण मयधरसाहुसुओ ।
छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥
कमलसूरि नियपाटि सइं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।
पमीउ पमावीउ जीघु अणसणि अप्पा सुधु कीओ ॥
पणि पहुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।
तासु सीसु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसूरे ॥
जिणसासणिनहचंदु सुहगुरु भवीयहं कल्पतरो ।
ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।
तेरत्रिसठइ रासु कोरिंटावडि निम्मिउ ।
जिणहरि दिंतसुणंतं मणवंछिय सवि पूरवउ ॥

कछूलीरासः समाप्तः ॥

सालिभद्दकक

भलि भंजणु कम्मारिवल वीरनाहु पणमेवि ।
पउसु भणइ ककक्करिण सालिभद्दगुण केइ ॥ १ ॥
कत्थ वच्छ कुवलयनयण सालिभद्द सुकमाल ।
भद्दा पभणइ देव तुहु कइ थिउ इत्तियवार ॥ २ ॥
कारुन्नमयनीरनिहि समवसरणि ठिउ सामि ।
अज्जु माइ मइं वंदियउ वीरनाहु सिवगामि ॥ ३ ॥
खरउं कुड्डु ता पुत्त कहि का देसण किय वीरि ।
कवणु अत्थु वखाणिइउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥
खारसमुद्दह आगलउ माइ कहिउ संसारु ।
संजमपवहणहीण तसु किमइ न लब्भइ पारु ॥ ५ ॥

गयममत्त वीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।
सालिभद्द भद्दा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥
गारववज्जिउ विन्नवउं काइउ मग्गउं माइ ।
जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥
घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।
वयह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥
घाणइ पीलिय पंचसइं खंदगसूरिहि सीस ।
साहु माइ दुस्सहु सहइं एरिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥
नवि वउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद्द सुकुमाल ।
महु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥
नाउं गव्विहिं कुलतणइं पाविज्जइ भवछेउ ।
माइ मरीचि भव भमिउ वद्धमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥
चरणु लेसिजइ पुत्त तुह्यु नंदण नीयपवीण ।
रोअंती भद्दा भणइं मइं किम मेल्हिसि दीण ॥ १२ ॥
चारुचक्किवलदेव तह वासुदेव बलवंत ।
माइ तडि ह्रिय परियणह कड्ढिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥
छण मइलंछणासमवयण तुह भज्जा बत्तीस ।
ते विलवंती पेमभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥
छारु जेम उड्डइ सयलु अंतेउरु घरसारु ।
माइ जीवु अउ संचरइ छंडेविणु ढंढारु ॥ १५ ॥
जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिबंधु ।
तारुन्नइ बुड्ढाविअउ बहु उन्नाडइ कंधु ॥ १६ ॥
जाणिउ देह असारवलु भरहिं सूकउ मोहु ।
ताव माइ तसु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥
झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तन्नमियासाउ ।
विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ ऊणउ ठाउ ॥ १८ ॥
झाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।
वीरनाहु महु हिव सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥
नरवइ सेणिउ तुम्ह पहु सुरगोभद्दु सुताउ ।
निच्चु नवलं आभरणु कहि को चित्ति विसाउ ॥ २० ॥

नाहकु सेणिउ तुम्ह महु जइ किरि कहिइउ माइ ।
ता घणु कंचणु गेहवलु खण वि न चित्ति सुहाइ॥ २१ ॥
टलटलेसि धम्मत्थ पुण धम्मगहिल्ला वाल ।
धम्म करेवा महु समउ तुहु घणुरक्खण वाल ॥ २२ ॥
टालिसि चरण म माइ मइं देइ महावयसिक्ख ।
वद्धमाणजिणवरकिरिहिं पुन्निहिं लब्भइ दिक्ख ॥ २३ ॥
ठणकइ पुत्त सु चित्ति महु पुत्तविहूणिय नारि ।
विहचइ मुचइ दुहु सहइ दीणी परघरबारि ॥ २४ ॥
ठामि ठामि जिउ हिंडिइउ भव चउरासीलक्ख ।
माइ जि सहिया नरयदुहु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥
डरपिसि सुणियइ सीहसरि निसुणिसि सिवफिक्कार ।
भुक्खिइउ तिसिइउ वच्छ तुह किम हिंडिसि नरसार ॥ २६ ॥
डालिहि चडियउ डालिसउ माइ म हल्लावेउ ।
पच्छइ कहि हउं चरणु कहि वद्धमाणुजिणदेउ ॥ २७ ॥
ढलइं चमर वर पुत्त तुहु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।
मणिसीहासणि वइठणउं किणि कारणि वइचित्तु ॥ २८ ॥
ढाउ विलग्गउ माइ महु सिवपुरि रज्जहरेसि ।
वोलावउ ठिउ वीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥
नवउं अंतेउरु नवउं घरु नवजोवणु नवरंगु ।
सालिभद्दु नवकणयतणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥
नाणु रसायणु करिसु हउं कम्मिधणदाहेण ।
तिणि आऊरिसु माइ तणु जरा न ढुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥
तरुअरतलि आवासु मुणि भिक्खह भोयणु पाणु ।
भूमंडलि आसणु सयणु वच्छ चरणु दुहठाणु ॥ ३२ ॥
तालउ भंजिवि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।
छुट्टइ वालु न वुड्ढु जणु पडइ अचिंतिउ घाउ ॥ ३३ ॥
थल डूंगर पाहण सघण कक्कर कंट तुसार ।
पाणहवज्जिउ शुरि सहिउ हिंडिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥
थाहररहि न मज्झु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु जिणु ववहरउ लेसु चरणु धणु धम्मु ॥ ३५ ॥



दहविह धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अंगु।
वच्छ तईं ता दोहिलउं होसिइ तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥
दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।
माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहिं हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥
धम्मु किइउ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।
पुहिलउं साखिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥
धाडउ जमरायहतणउ पडइ अचिंतिउ माइ ।
कड्डिउ लिज्जइ जीवु तिणि धुंव न वाहर काइं ॥ ३९ ॥
नवकप्पूरिहिं पूरिया नंदण कोमल केस ।
केतगिवालइं वासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥
नारायणवंधवु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ वालु ।
सीसु अग्गि दुस्सहु सहइ माइ सु गयसुकुमालु ॥ ४१ ॥
पट्ट सुअ तईं पहरियां रसियउं दिव्व अहारु ।
सुअ उव्वासिहिं सोसिया केम करेसि विहारु ॥ ४२ ॥
पालिसु पंच महव्वइं वारस अंग पढेसुं ।
वीरनाहिसुं माइ हउं नवकप्पिहिं विहरेसु ॥ ४३ ॥
फणिरायह सिरि पुत्त मणि मुल्लेण य वहुमुल्लु ।
सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥
फाडिज्जइ करवत्तु सिरि पाइज्जइ कत्थीरु ।
माइ दुक्कु नारय सुणिउ महु उल्हसइ सरीरु ॥ ४५ ॥
वत्तीसइं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।
डूंगरि कासुगि करिसि किम वलि किज्जउं तह काय ॥ ४६ ॥
वार मास कासग्गि रहिउ वाहवलि मुणिराउ ।
नाणह कारणि तिणि सहिउ सीअ ऌअ जलु वाउ ॥ ४७ ॥
भमिसि विहारिहिं भारिओ नंदण तुं सुकुमाल ।
वीर जिणंदह चरणु पुणु मुणि वावन्नउं फालु ॥ ४८ ॥
भारु माइ भुक्खिय वहइ रासहयसहपमुक्क ।
आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्कु ॥ ४९ ॥
मयलंछण जिम तारयहं सयलहं किल भत्तारु ।
तं वत्तीसहं वहुअरहं एक्कु देव आधारु ॥ ५० ॥

माइ महामुणि वीरजिणु कुलगुरु मह संताणि ।
तसु मइं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ नियाणि ॥ ५१ ॥
यइ तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हिवि सयल सिणेहु ।
ता गोभद्दु अभागिइउ हा धिगु छुट्टउ गेहु ॥ ५२ ॥
याइवनाइगु नेमिजिणु गुणसोहग्गनिवासु ।
माइ सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्हेविणु गिहवासु ॥ ५३ ॥
रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा मइं संतावि ।
तुह विणु नितु कुंण पूरिसइ मुक्काहरणह चावि ॥ ५४ ॥
राहडि पूरिय माइ तइं महुकेरी सविवार ।
दिक्ख दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार ॥ ५५ ॥
लहकइंसउं संजमु लियए नंदसेणु मुणिराउ ।
सो संजमुप्पव्वइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥
लाहइं विणिज्जु करेसु हउं छेहउ माइ चएसु ।
ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥
वंच्छ ति नारी दुक्खनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु ।
महुत्तइं नंदण जाइयइं हिंव आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥
वार स माइ सलक्खणीय तं सुहुत्तु सुपवित्तु ।
धन्न ति वंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥
सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण ।
नंदण तेण य नरइदुह पामिय भद्दवएण ॥ ६० ॥
सारउं साटउं मिलिय मुह माइ कहिउ तउ सम्मु ।
वीरनाहु किउ ववहरओ लेसु चरणु धणु रम्मु ॥ ६१ ॥
सलह मणोरह पूजिसइं सज्जण होसिइं सोखु ।
नंदण तुं थाइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥
पाससासवेयणपमुहवाहि माइ तणु मूलु ।
जीवु तेहिं धंधोलियइ उड्डइ जिम लहु तूलु ॥ ६३ ॥
समल देह कप्पड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।
होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।
संजमविणु भवभयहरणु ताणु न किज्जइ केण ॥ ६५ ॥
हसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।
सालिभद्द संजमु लियइ महु बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥
हारमउडकुंडलकलिउ चडिऊ पुरिसविमाणि ।
वीरपासि पहुतउ कुमरु जण दिज्जंतइं दाणि ॥ ६७ ॥
क्षमासमणि भद्दातणइं दिक्खिउ जिणिंहि कुमारु ।
सालिभद्दु बहु तवु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥
क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसणु गहिउ उवन्नु ।
सव्वद्दह सिद्धिहि गयउ सालिभद्द तहिं धन्नु ॥ ६९ ॥
महाविदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।
सासयसुक्ख वि पाविसहि भवियह धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥
इह कहियउ कक्कह कुलउ इकहत्तरि कडुयाह ।
भवियउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकाक समाप्त.

दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।
जासु पसाई मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥
उँकारिहि उचरउ परमिट्ठिहि नवकारु ।
सिवमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुचारु ॥ २ ॥
नवनिहि धम्मिहि संपडए सक्कचक्कहरिरिद्धि ।
धम्मु इक्क करि धीर जिव सइ कर आवइ सिद्धि ॥ ३ ॥
मणगयवरु झाणंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।
जइ भंजेसइ सीलवणु करिसइ सिवफलहाणि ॥ ४ ॥
सिज्झइ तसु सवि कज्जड जसु हियडइ अरिहंतु ।
चिंतामणिसारिच्छ जिय एहु महाफलु मंतु ॥ ५ ॥
धंघइ पडियउ जीव तुहुं ग्वणि ग्वणि तुट्टइ आउ ।
दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सपणु न बंधवु ताउ ॥ ६ ॥

अणहंता पयडेसि तुहु दोस पराया मूढ ।
नियदोसण पव्वयसरिस ते सवि कारिस गूढ ॥ ७ ॥
आइ किजिय जिणधम्मु करि सुत्थइ संबलु लेवि ।
अग्गइ किंपि न पामिसए अत्थइ भरिया गेह ॥ ८ ॥
इण भवि लच्छी रिद्धि पइ परभवि केव लहेसि ।
अच्छिसि तिणि धणि मोहियउ जइ न सुपत्तह देसि ॥ ९ ॥
ईसरु देखिउ कोइ नरु नीधिणु मणि दूमेइ ।
एउ न जाणइ मूढ जिउ जणु वावियउं लुणेइ ॥ १० ॥
उप्पलदलजलबिंदु जिव तिव चंचलु तणु लच्छि ।
धणु देखंता जाइसए दइ मन मेलत अच्छि ॥ ११ ॥
ऊयरु जउ भरिवउं कुपुरिसह तो भरियउ भंडारु ।
इक्कि जीव पुन्निहि पवर लखह कोडि आधार ॥ १२ ॥
रिणि राउलि जलि जलणि घरि तक्करि धणु घणु जाइ ।
धम्मकज्जि जउ मग्गियए ताव परमुहु थाइ ॥ १३ ॥
रीस करंता जीव रीह अच्छइ अवगुण तिन्नि ।
अप्पउं ताविसि परु तवसि परतह हाणि करेसो ॥ १४ ॥
लिहियउं लब्भइ सिरतणउं जइ चालियइ समुद्दु ।
लच्छिहि केसवु संगहिउ तिणि विसि धारिउ रुद्दु ॥ १५ ॥
लीलइ धम्मु जु होइंसए सेवंता जिणनाहु ।
तं नवि मिच्छत्तिहि सहिउ जइ तपु करिसि अवाहु ॥ १६ ॥
एकहि ठावि वसंतडा एवडु अंतरु होइ ।
अहिडंकिउ महियलु मरए मणि जीवइ सहु कोइ ॥ १७ ॥
ऐ आणाइ समतण जीव न बूझइ हेव ।
हिंडइ रोसिं पूरिया न करइ उपसमसेव ॥ १८ ॥
ओदउ तहु लोभहतणउ जीव न फिट्टइ निच्चु ।
अहनिसि तेण भमाडियउ न गणइ किच्चु अकिच्चु ॥ १९ ॥
औसरि नेह अभिग्ग पुणु विच्छिस हिय भज्जंति ।
चंदूपल किरणेहि तहि दूरठिया विहसंति ॥ २० ॥
अंधउ अंधइ ताणियए कवणु कहेसइ मग्गु ।

केवलिपह्नु निव्वाणि गउ धम्मु मतंतरि भग्गु ॥ २१ ॥
अकयधम्मि जइ माणुसह हुइ नवकारु वि अंति ।
तिणि पुन्निहि तह देवगइ अहवा मुत्ति न भंति ॥ २२ ॥
कवडिहि माया मूढ जिउ वंचइ लोउ अप्पाणु ।
तिणि पाविहि भवि भवि दुहिय नवि पावइ निव्वाणु ॥ २३ ॥
खज्जइ कालु कयंत जगि को अज्ज वि को कल्हि ।
संजमि गयवरि आरुहिउ सिद्धिसरणि जिय चल्हि ॥ २४ ॥
गयवरमत्ता जेम ह्रिव मा हिंडसि नरलोह ।
हणि कसाय दमि इंदियइ गणिया लब्भइ दीह ॥ २५ ॥
घडिय न लब्भइ अग्गलिय इंदह अरुइ वीरु ।
यउ जाणिउं जिणधम्मु करि जावह वहइ सरीरु ॥ २६ ॥
ङवि जाणिज्जइ सो दिवसु जणु पुणु मरइ निरुत्तु ।
छड्डेविणु घरहल्लोहलउ धम्मु करेवा जुत्तु ॥ २७ ॥
चंचलु चित्तु पवंगु जिम वयवंधण न धरेसि ।
धम्मारामि विणासियइ मूढा हत्थ म लेसि ॥ २८ ॥
छन्नउ पयडउ जीव तुहुं उज्जमु करि जिणधम्मि ।
सुहियं दुहियं माणुसह पासु न मेल्हइ कम्मु ॥ २९ ॥
जरजज्जरि देहडी हुई य पंडरि हूया केस ।
अरि जिय धम्मु करेजि तउं गइय स वालियवेस ॥ ३० ॥
झलहलंत जिणवरपडिम जेइ करावइ दव्वि ।
सग्गपवग्गहतणा सुह ते पामेसइ सव्वि ॥ ३१ ॥
ञ हु चिंतंता विहवसिण कज्जु अनेरउं होइ ।
राउलि वलियउ दुब्बलउ देव न बलियउ कोइ ॥ ३२ ॥
टलइ मेरु नियठाणह जइ पच्छिम उग्गह सूरु ।
पुव्व कियउं तो नवि चलइ कम्ममहाभरपूरु ॥ ३३ ॥
ठगियउ हिंडिसि जीव तुहु धारिउ विसि मिच्छत्ति ।
सम्मत्तह रयणह रहिउ न लहसि सिवसंपत्ति ॥ ३४ ॥
डणउ जेम्व गलि संकलिउ भवि भवि कुणवउ जीव ।
नवि छुट्टिज्जइ तो वि तह जइ लंघिजइ दीवु ॥ ३५ ॥
ढणहणंति इंदिय तुरय पाडेसइ भवखोहि ।

देविणु वरसंजमिकविउ अरि जिय सग्गि निरोहि ॥ ३६ ॥
णवि हसंतु वि जोइयए निचलु झाणु धरेवि ।
ता दीसइ जिम जगतगुरु सहजाणंदु सु देउ ॥ ३७ ॥
तउं एकल्लउ सहसि जिय खाएसइ परिवारु ।
विहवु विहंचिउ लेइ जणु पाव न विहचणहारु ॥ ३८ ॥
थक्केसइ धणु सयणु जणु कोइ न सरिसउ जाए ।
पावु पुन्नु तं अज्जियए तं परि अग्गइ थाइ ॥ ३९ ॥
देइ देइ मन आलसु करि महुरालाविहि दाणु ।
चलिय देह हिय विहवसिण करि सफलउ अप्पाणु ॥ ४० ॥
धर उप्पज्जइ केवि नर परउवयारसमत्थ ।
कइ देइ के कम्मवसि जणजण उड्डइ हत्थ ॥ ४१ ॥
नइ वहमाणी सघणजल सुक्कइ इयर तलाय ।
दायर वड्डइ रिड्डिडी मग्गण निधण थाइ ॥ ४२ ॥
पढिउ गुणिउ घणु तवु तविउ संजमु किउ चिरकालु ।
जइ कसाय नवि वसि करसि ता सहु इंदियजालु ॥ ४३ ॥
फलु दिक्खिउ तरवरतणउं दिट्ठि म घल्लिसि बाल ।
तं नवि पाविसि पुन्नविणु छड्डिसि पारी लाल ॥ ४४ ॥
वलि किज्जउं तह सुहगुरुह जा जगु मारगि लाइ ।
उम्मग्गह दंसणि गमणि जणु पुणु पुहवि न माइ ॥ ४५ ॥
भरहेसरि आयरिसघरे उप्पन्नउं वरनाणु ।
भावण सव्वहि अग्गलि य तपु संजमु अपमाणु ॥ ४६ ॥
मयणु न खीणउ जाहतणि ते नवि बंभचारि ।
मयणविहूणह संजमि लुंचणि छारि न दोरि ॥ ४७ ॥
जसि धवलिउ जगु जेहि मुणि नाउं लिहाविउ चंदि ।
कम्म हणवि जे सिद्धि गय ताह चलण नितु वंदि ॥ ४८ ॥
रे वाहा मग्गेण वहि मा उम्मूलि पलास ।
कल्हे जलहरु थक्किसए कयण पराई आस ॥ ४९ ॥
लइ वयभरु परिहरवि घरु भंजिवि भवनियलाइं ।
जाव न पहुच्चइ तुज्झतणि जमरावस्स दलाइं ॥ ५० ॥
वयणु न जंपउ दीणु कसु जं भावइ तं थाउ ।

अथिरकडेवरकारिणिहि कहि किम खिज्जइ काउ ॥ ५१ ॥
सुमिणंतरि मेलावडउ अहनिसि पहर चियारि ।
पसरिय निय निय दिसि चलए अरि जिय सुमणु विचारि ॥ ५२ ॥
परकिसोर मत्तकरि दमइ करि करेविणु कट्ठु ।
नियजीवु कोवि न वसि करए थिउ गलियारु विघट्ठु ॥ ५३ ॥
संजमि नियमिहिं जे गया ते गणि सारा दीह ।
अवर जि पावारंभि गय ताह फुसिज्जउ लीह ॥ ५४ ॥
हिंडेविणु भवकोडिसइ लद्धउ माणुसजम्मु ।
तत्थ वि विसयह मोहियउ न करइ जिणवरधम्मु ॥ ५५ ॥
क्षणभंगुरु देहहतणउं अरि जिय कोइ विसासु ।
भाव न मुचइ जिणु मणह जाव फुरक्कइ सासु ॥ ५६ ॥
मंगलमहासिरिसरिसु सिवफलदायगु रम्मु ।
दूहामाई अक्खियइ पउमिहिं जिणवरधम्मु ॥ ५७ ॥

इति श्रीधर्ममातृका समाप्ता ।

चर्चरिका



जिण चउवीस नमेविणु सरसइपय पणमेवि ।
आराहउं गुरु अप्पणउ अविचलु भावु धरेवि ॥ १ ॥
कर जोडिउ सोलणु भणइ जीविउ सफलु करेसु ।
तुम्हि अवधारह धंमियउ चचरि हउं गाएसु ॥ २ ॥
मणि उंमाहउ अंमि सुहु मोकल्हि करिउ पसाउ ।
जिम्व जाइवि उज्जितगिरि वंदउं तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
नइ विसमी डुंगर घणा पूत दुहेलउ मग्गु ।
भूयटियह सुणसि तुहुं दूवलि होसइ अंगु ॥ ४ ॥
वालइ जोयणि नं गिया अंमि जि तहिं गिरिनारि ।
ते जंमंतरि दूत्थिया हिंडहिं परघरवारि ॥ ५ ॥
इंअ असारी देहडी अंमि जि विढपइ सारु ।
तिणि कारणि उज्जितगिरि वंदउं नेमिकुंआरु ॥ ६ ॥
करि करयत्ती कूयटी सिरि पोटली ठवेवी ।

मिलियउ धम्मियसाथडउ उज्जिलमग्गि वहेई ॥ ७ ॥
इह वढवाणइ चउहटइ दीसइ सीहविमाणु ।
रंनडुलइ वोलावी अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥
इय वढवाणइ जि हुइइ हियडउं रइ न करेइ ।
दिवि दिवि धंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥
पाइ चहुट्टइ कक्करीउ उन्हालइ लू वाई ।
जे कायर ते वलिया जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥
साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछोड्ड ।
ऊजिलि जंते धंमिए गुंथिउ नेमिहिं मउड्ड ॥ ११ ॥
सहजिगपुरि वोलेविणु गंगिलपुरहिं पहुत्तु ।
माडी कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥
जइ लखमीधरु वोलियं पेखिवि वहु य पलास ।
तउ हियडउं निवरु थिउं मुक कुटुंवह आस ॥ १३ ॥
विसमिय दोत्तडि नइ घणिय डुंगर नत्थि च्छेऊ ।
हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिंव नेऊ ॥ १४ ॥
करवंदियालं वोलियउं अणंतपुरू जहिं ठाइं ।
दिन्नउ तहि आवासडउ हियउं विअड्डि थाइं ॥ १५ ॥
नालियरीडुंगरितडिहिं वहुचोराउलिठाइं ।
धम्मियडा वोलिउ गिया अमुलतणइ सहाइं ॥ १६ ॥
भालडागडुसुंनउ अवियडउं वसेइ ।
धम्मिय कियउ वीसावउ सुरधारडीवरेहिं ॥ १७ ॥
ओ दीसइ उड्ढंधलउ सो डुंगरु गिरनार ।
जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमारु ॥ १८ ॥
मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहडेउ दिट्ठु ।
खडहड अंसु पखालियं गोवाडलिहि पहुट्ठु ॥ १९ ॥
भाद्रनई जह वोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।
उजिलि दीवउ वोहियउ सुरठडिय हउ जोउ ॥ २० ॥
खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि वोलिवि ।
धंमिय कियउ आवासडउ चंचूसरितलि नेई ॥ २१ ॥
ऊजिलमग्गि वहंता रज्ज लागइ जसु अंगि ।

वलि किज्जउं तसु धमियह इंदु पसंसइ सग्गि ॥ २२ ॥
जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।
पावमली जे मइलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥
एउ वाउह लोडउं कोठउं तलि गिरिनारु ।
ओ दीसइ ववणथली धवलियतुंगपयार ॥ २४ ॥
घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।
धंमी सा ववणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥
वउणथली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।
तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥
रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।
नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥
गड्डु वोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।
वलि किज्जउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥
टोलह उपरि मागडउ सो लंघणउ न जाइ ।
पाउ खिसियउ विसमउ पडइ हियं विअड्डइं थाई ॥ २९ ॥
अंचणवाणी नइ वहइ दिट्ठु दमोदरु देउ ।
अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥
तरवरुतणइ पलांवडे रुद्धउ मागु जंवेवि ।
कालमेघु जोहारियउ वस्त्रापदि जाएवी ॥ ३१ ॥
अंवाजंबूराइणिहिं वहु वणराइ विचित्त ।
अंबिलिए करचंदिएहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥
नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं चुकार ।
कोइलसद्दु सुहावणउ तहिं डुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥
जउ मइं दिट्ठी पाजडी उंच दिट्ठु चडाऊ ।
तउ धंमिउ आणंदियउ लद्ध सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥
हियडा जंघउ जे वहइं ता ऊजिंति चडेजे ।
पाणिउ पीउ गइंदवइ दुग्ध जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥
गिरिवाइं झंझोटियउ पाप थाहर न लहंति ।
कडि त्रोडइं कडि थक्की हियडउं सोसइ जंति ॥ ३६ ॥
जाव न धंधलि घल्लिया लखुपत्तीपाण ।

तांव कि लब्भहिं चिंतिया हियडा ऊणत्ताण ॥ ३७ ॥
डुंगरडा अधो फरिं लग्गउ सीयलि वाउ ।
इय पुणं नवदेहडी अंमुलि कियउ पसाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिट्टइ भवदवं दुहदाहु ।
जिणि अरि आठ करम निर्द्दलीय नमो जिन जिम भवि नावऊ वलिय ॥ १ ॥
आंचली-सवि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झावय साहू गुणभूरि ।
माईयवावनअक्षरसार चउपईबंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥
भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहूयणमाहि सारु एतलउं ।
जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ मूकिउ अवरु अस्सारु ॥ २ ॥
मीडउं पढिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।
जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥
लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि वंच्छइ सिवसुहतणी ।
चहुंगति फीटइ फेरउ वडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥
लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु हीयडइ संभरे ।
क्षणु एकु मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवादु ॥ ५ ॥
ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।
अनु सिवसुक्खतणउ दातारु मनह म मेल्हिसि तिहूयणसारु ॥ ६ ॥
नव निहाण ते पामइं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमइ ।
सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥
मनु चंचलु जे अविचलु करइं जिणह आण सिरऊपरि धरइं ।
हणइं कसाय इंदीय संवरइं ते सिवनयरि सुखि संचरइं ॥ ८ ॥
सिद्धउं काजु सहू तीहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरभणिउं ।
छेदिउ आठकरमनी वेलि गया मुक्ति हुई पेलावेलि ॥ ९ ॥
वंधइं पडिया दीह मन गमउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।
भवह तापु नवि लागई अंगि उद्दु बहुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि धरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।
अरिवगु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥
आलिहि अलीउ म झंपिसि किमइ जे जिनुवयणु हियइं तू गमइ ।
करमुबंधु पडतउ चीतवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥
इणि संसारि दृपभंडारि लइन जीव काय धम ऊगारि ।
वीतरागि जं आगमि कहीउ करे तइ जि यणु भायनसहीउ ॥ १३ ॥
ईमइ म कारसि कूडउ सोसु सोचइ जिनह वयणि करि तोसु ।
जोइउ आगमतणउ विचारु पाच्छइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥
उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं चंचलु जीव सरीरु ।
घणु कणु रइणु सइणु तिम सहू दीसइ धम्मु एक्कु थर रहू ॥ १५ ॥
उपरि देखि दैव न हु हाथु तेरहि तिहुयणि कोइ न सनाथु ।
नासीउ पइसिजान जिनसरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥
रिद्धिहितणउ लाभु इम लेजि सातिहि पेति बीलु वावेजि ।
उपर सिंचे भावनानीरि वगसरु नोही जिम ताहरइ सीरि ॥ १७ ॥
रीणु दीणु ते चहुगति भमइ जे जिन वीतरागु नवि नमइ ।
नोही काइ धरमवासना ते नही जाई मुक्तिआसना ॥ १८ ॥
लिपावीइ सुतु सीकंतु तेह लाभ नवि लाभइ अंतु ।
ज्ञानतणउ गुण एवडु कोइ वीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥
लीलअमत संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु परुहुणु लेसि ।
सुगुरनी जाम विलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥
एकह परि पामिसि भवपारु जइ समकित कर अंगीकारु ।
वीरनाथु कहइ आगमि लोइ विणु समकित सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥
ए अ वचनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हउं भणउं ।
जिणाहं वहण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेह माहि ॥ २२ ॥
ओघहं पडीउ पापु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।
जोईउ पणु सिद्धंत विचारु करिसि धम्मु तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥
ओपधु करे जीव जिनि भणिउं अछइ दुपु अठकरमहतणउं ।
वाहिजि ओपदि कांई तु धाइ धरमोपधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥
अंतु न लाभई इह संसार कांइ तु जीव हीइ न विचार ।
एक जु धमु करे सपाइ लेउ मेल्हइ सिवनअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भत्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय ।
मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥
कपटिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु ।
भमडइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७ ॥
खन्नइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ भ्रंति ।
जिणह वइणु विडिजा इकमणउ भउ फीटिसइ कितांतहतणउ ॥ २८ ॥
गन्भवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण ।
फेडइ दुपु सहू जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥
घरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु ।
जिनुधमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३० ॥
ङश्वइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि ।
जे यणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥
चक्रवति पट्टखंडह धणी हंती रिद्धि तीहंनइ घणी ।
जो रिद्धिहिं परिताणु होउ त वंधु संभुमु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥
छविह जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप ।
आतमवत्तु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ मुणे ॥ ३३ ॥
जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगवंधवु जगसथवाहु ।
जगतारणु जिउ जगआधारु जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥
जडइ पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाझि वसइ इकु जिन्नु ।
जापुलसेपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं मुकति पामेसि ॥ ३५ ॥
ञसिदिहु पंचप्रमिठि सुमरेजि इणपरि असुभं करमु पपेजि ।
सुभउं करमु वाधजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३६ ॥
टलइ मेरु जो परवतराजु जो रवि पच्छिम ऊगई आजु ।
जो सायरु मिल्हइ मज्राइ तोइ जिनभासिउं अलीउ न थाइ ॥ ३७ ॥
ठगीसि रापे कुगुरि कुबोधि जिनकसवट्टी लेजे सोधि ।
पूजइवानी आसतणी रिधि संगहे सुमितनी घणी ॥ ३८ ॥
डसीइ कालभूअंगमि लोकु तेह नवि लागई औपधजोगु ।
वीतराग मंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमहतणउं ॥ ३९ ॥
ढलिइ पासइ देजे दाउ धणरुणजीवन करिसि म गाउ ।
जगसरुपु देपे इंदीआलु करे धमु परहरीउ टमालु ॥ ४० ॥

णवणवपरि भग्गऊ भवचारु सांमीअ करिउ अम्हारी य सार ।
असरणसरणु तुहुं जि जगनाह भवि पडंत अम्ह देजे बाहु ॥ ४१ ॥
तनु धनु जीवीउ जौवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सइअणु सहू कोइ ।
दिवस पांच मेलावउ होइ पाछइ वलीउ न दीसइ कोइ ॥ ४२ ॥
थरथर कंपइं काइरचित्त देपीउ मुनिवर माहासत्त ।
धीरा सत्तवंत जे जाण पालइं दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥
दमि इंदिअ दुग्गइदूआर लूसीउ लिअइं सुकितु सविचार ।
जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दुपु बहूसंसारि ॥ ४४ ॥
धरमध्यांनि करि निमलु चितु जिम हुइ जीव जनमु सुपवितु ।
धमिहि सिवह सौपसंपत्ति धमिहि वलीउ न भवि उतपत्ति ॥ ४५ ॥
नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्हो दाउ ।
मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लई सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥
पढइ गुणइ वरकाणइं सुतु पुणु बुझइं नही तोइ ततु ।
रागु द्वेपु मनभीतरि धरइं ईमइ वेसविडंवउ करइं ॥ ४७ ॥
फलइ करमु परभवहतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीडइ घणउं ।
दुपु सुपु सहू पइ लागम आवइ ल्रिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥
वलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।
सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्रिढ चित्तमझारि ॥ ४९ ॥
भविं भवु बोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।
न मुणइं अंतरु पावह पुन्नु तीहं सोकल कांई सिरिज्या कांन ॥ ५० ॥
मइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीयइं मइणि ते भूर ।
धीरा सुभट सलु ऊटवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥
य करइं तप्पु नीमु संजमु तीहं दुर्गतिनउ नही कोइ गंमु ।
जीहं स रोईउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥
रहिसिइं पूत कलत घरवारु रहिसिइ सइणु सह परिवारु ।
रहिसिइ धणुकणुरइणुभंडारु जीउ एकलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥
लइ जिनदीप मूकि संसारु आठकरम दहीउ करि च्छारु ।
निरुपमु सुपु सिवनइरीतणउं लहिसि जीव आगमि जिनभणिउ ॥५४॥
वचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीरु अच्छइ तहिं घणउ ।
जो साइरि जलबिंदहं पारु तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

शरउपरि मूढा मन पेलि जिनधमु लाधउ पाइ म ठेली ।
तिहुअणचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंमु ॥ ५६ ॥
पणि पणि आउ गलंतउ देपि भवि पडंतु अपुं म ऊवेपि ।
करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विलहीउ ॥ ५७ ॥
सहजि जीउ भवगूतलि करइ कम्मं बुहुरादाणी घणु धरइ ।
जे कम्मंतणउ नही य ऊधारू भवगोतिहिं दुखु सहिसि अपारु ॥ ५८ ॥
हरिपु विपादु करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपदं होइ ।
अवशु फलीसइ पुवभवकिउं नं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ५९ ॥
जंघइ दीव पुहवि समुद गिरिकंदरा भमइ बहुरुद ।
रिद्धिकाजि इसीउ रङ्कभडइ न करै धम्मु जिणि रिधि संपडइ ॥ ६० ॥
क्षुणुभंगुरु एउ सहइ जाणि म करिसि जीव धरमनी काणि ।
विणसइ सहु कहइ आगम्मु अविनसुरु एकु जिणधम्मु ॥ ६१ ॥
मंगल करउं सवि अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत ।
मंगल सिद्धि सूरि उवज्झाय मंगलं करउं साहुणा पाय ॥ ६२ ॥
मंगलमूलु सवहिं आगम्मु जो जगमाहिं अच्छइ निरुपम्मु ।
जसु अतिसइ न लाभइ अंतु मंगलु करउ सोइ जि सिद्धंतु ॥ ६३ ॥
जा ससिसूरु भूयणु व्याप्पंति जा ग्रह नक्षत्र तारा हुंति ।
जा वरतइ वसुहव्यापारु तां सिवलच्छि करउ मंगलाचारु ॥ ६४ ॥

मातृकाचउपइ समाप्ता

सम्यक्त्वमाईचउपइ

भले भणउं माईधुरि जोइ धम्मह मूलु जु समिकतु होइ ।
समकतुविणु जो किया करेइ तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥ १ ॥
ऊंकारि जिणु पणमेसु सतगुरुतणउं वयणुं पालेसु ।
आगम नवतत बूझिसि तिमई समिकतु रयणु होइ तसु तिमइ ॥ २ ॥
नर नवकारु सुमरि जगसारु चउदह पुव्वह जो समुद्धारु ।
समिकत जइ लाभइ संसारिं जाणे छुरी पडी भंडारि ॥ ३ ॥
मनु चंचलु अट्टझाणि पडेइ घडियमाहिं सातमिय ह नेइ ।
मनु मपगलु शुभ ध्यानु करंति प्रसंनचंद जिम सिद्धिहिं जंति ॥ ४ ॥

सिद्धिसुक्खु जगि सहु को लहइ दृढसमिकतु जइ हियडइ रहइ।
दृढ समिकतु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिथंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥
धन जि गुरपारपउ करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हुंति।
मुहुतु एकु समिकतु फरसेइ पुदगल अरधमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥
अच्छइ मोहचरडु इणि समइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ।
कुगुरु सुगुरु अंतरु न हु करइ इणि कारणि चउगति जिउ फिरइ॥ ७॥
आगमवयणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ।
इसइ कालि समिकतदृढचित्त ते नर जाणे जगह पवित्त ॥ ८ ॥
इणि भवि परभवि सुक्खु लहेउ सतगुरुतणउं वयणु पालेहु।
वीतराग जउ वंदिसि पाय ऊडइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥
इंदियालु जगि दीसइ लोइ वालवृद्धु न हु छूटइ कोइ।
धरमसंवलु जइ सरिसउ लेइ पार गया तउ सुक्खु माणेइ ॥ १० ॥
ऊगमतइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि न्हडिया ते जंति।
सुकिय दुकिय वे सरिसा चलइं सजनमीत वोलावी वलइं ॥ ११ ॥
ओसरि वावियइ लाभु न हुंति सजलु होइ वीजह चूकंति।
सूधउं दानु मुनिहि जो देइ संगमतणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥
रिद्धिहिलणउ लाभु जगि लेहु दस खेत्रे तुम्हि धनु वावेहु।
दीन्हादानह नासु म जोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥
रीतिहि दानह नथी निवार उचितु दानु दीजइ सविचार।
कूसनभयसिउ जउ खडु वारंति पात्रविसेपिहि षीरु स दिंति ॥ १४ ॥
लिहियं जगि लोडइ सउ कोइ कुपात्रु विसहरसादसु होइ।
खीरु आणि जउ मुखि घातियइ पात्रविसेपिहि तसु विसु थियइ॥१५॥
लीह न लंघउं सतगुरतणी किया करउं जा आगमि भणी।
विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छूटउं संसार ॥ १६ ॥
एहु करेवउं नर संसारि त्रिन्नि वार जउ चडिउ विहारि।
वीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु टालेसु ॥ १७ ॥
ऐ वार मेल्हिउ जिणु पूजेसु रयणिहिं रमणिगमणु वारेसु।
न्हवणुं तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८॥
ओ दीसइ मंदिरु जगि सारु धम्मरयणकेरउ भंडारु।
चउरासी आसातन नितु रापेसु मंदिरि दिवसह वलि होएसु॥ १९ ॥

ओया दीसइं वहुत गमार धंमहतणी न पूछइं सार ।
जिण गुरि दीठइ दूरिहि जंति दुलहु माणुसुजंमु आलि गमंति ॥ २० ॥
अंतरु विधि अविधिहि जाणंति मंदिर पइठ निसिहि न करंति ।
तालारासु रयणि न हु देइ लउडारसु मूलह वारेइ ॥ २१ ॥
अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ धंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ ।
पंचप्रमिट्ठिंनी जापउ करउ संसारसमुदु जिम लीलइं तरउ ॥ २२ ॥
कहियइ थूलिभद्दु मुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ ।
छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगहमाहि थूलिभदु लीह लहइ ॥२३॥
खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ धंमु विचारि ।
सुद्धउ धरसु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छूटिसि तिमइ ॥ २४ ॥
गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु ।
कपिलनारि पेलइ विन्नाणि सीलु सुदरसणतणउं वखाणि ॥ २५ ॥
घडतउ फोडतउ वार न लाइ कम्मंतणी विसमी गति काइ ।
जं जं करसु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जीतउ जोइ ॥ २६ ॥
निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।
सुर बे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं घडि चडइ ॥ २७ ॥
चल्लइ सबलवाहणु नरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ ।
दसाणभद्दु अतिगरवु करेइ इंदिहिं जीतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥
छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जीतउ तं न सुहाइ ।
वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहिं हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥
जनमु वयरसामिउ त्तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।
धणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पुतु दिय झोली धरेइ ॥ ३० ॥
झटकह तउ झोली घातिपउ भारि गुरुह लेउ समपिउ ।
गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥
निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवन्नणु सकइ न कोइ ।
पालणइ सुनउ श्रवणि सुणेइ इगारअंग तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥
टलइ न पावज कुमरह किमइ मायटी झगडउ मांडियउ तिमइ ।
राज विदीतु पुतु हउं लेसु मंदिर नेतउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥
ठक्कर मिलिया ऊगटउ करइं कुमरु अणावी तउ चिन्हि धरइं ।
धणफल रमणा सा दोएइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

डगडगतउ मनु रहइ न किमइ मायटी भवि भवि लाभइ तिमइ ।
सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिंति ॥ ३५ ॥
ढाढसु कीयउं बालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।
सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरउ मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥
न गणउं अवरसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस हुइ लीह ।
अभिनवदीपितु वयण कु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥
तपु संजमु किउ वरिससहस्सु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।
अंतकालि अटझाणि पडंति कंडरीकु सातमियहं जंति ॥ ३८ ॥
पुंडरीकु वरिससहस्सु कीउ रज्जु विउ घडियहं तउ सारिउ कज्जु ।
पावज ले गुरु संमुहउ थाइ पंचविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥
दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगवित्तिकरणु गुरुराउ ।
थंभणि थप्पिउ पासजिणंदु पणमहु सुहगुरु अभयमुणिंदु ॥ ४० ॥
धनु सु जिणवल्लहु वखाणि नाणरयणकेरी छइ खाणि ।
वइतालीससुद्ध पिंडु विहरेइ त्रिविधु मंदिरु जगि प्रगटु करेइ ॥ ४१ ॥
नर निसुणहु सतगुर वखाणु अंतस बूझउ थिउ सु जाणु ।
कुगुरवाणि तउ विसु उतरेइ सुगुरवाणि जउ अमिउ झरेइ ॥ ४२ ॥
परिणइ अट्ठ नारि करि लेइ वृझवणइ वइठउ कथा कहेइ ।
प्रभवु चोरु मंदिरि पइसेइ असुयणनिंद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥
फट्टउ जंबुकुमरु इम भणइ विवाहुमहोच्छवु प्रभवु न गणइ ।
जंबुकुमरु जउ इसउ भणंति सवि थंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४ ॥
बंधव अम्हसउं साटि करेज बिहुं विद्यावटइ इक थंभणी देज ।
कुमरु भणइ विद्या किसउं करेसु रिद्धि परिहरी प्रहहं व्रतु लेसु ॥ ४५ ॥
भणइ प्रभवु नवजोवण नारि परणिय पुन्नवमिण संसारि ।
कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ व्रतु लेजे तिमइ ॥ ४६ ॥
मयणु चरडु सो मइं वसि किउ मोहराउ पाडिउ नाथियउ ।
मधुबिंदसाहस इहु संसारु निसुणि प्रभव तुहु जोइ विचारु ॥ ४७ ॥
जगु पिंडाणु सपलु वरतेइ तुह विणु पितरह पिंडु कु देइ ।
महेसरदत्तकथा जउ कहइ प्रभवुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥ ४८ ॥
रतिपति जाणउं तइं घमि कियउ नात्रानणउं संबंधु किम थियउ ।
अदारह नात्राकथा कहंति प्रभवु सांभली तउ बूझंति ॥ ४९ ॥

लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंबुसामिघरि रिद्धि न माइ।
हूंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥
वयणु कहउ पुणु नीजइ वाइ जंबुकुमर तुहु परिणिउं काइं।
वालकुमारउ तउं व्रतु लियत नियनियमंदिरि अट्ठय रहत ॥ ५१ ॥
सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत।
कथा कहिउ प्रतिबोधेसु नारि वलिउ न आवइं इणि संसारि ॥ ५२ ॥
पडभड केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइं घणी।
जीमणइ हाथिहि तउ हउं देसु मणवंछिय मागण पूरेसु ॥ ५३ ॥
सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ।
माय वापु अट्ठनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥
हल्लिय सिविका गाजे रली वज्जिय ढक्क बुक्क काहली।
सिविका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइं हथि व्रतु दिंति॥५५॥
लंघिउ सायरु जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ।
जंबुसामिउच्छवु देखेइ बहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥
खयउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचिंत तउ गई।
मनि जीतइ इंद्रिय वसि थाइं करम जिणिय नर सिद्धिहि जाइं ॥५७॥
मंगलु पहिलउ सोहमसामि वीजउ मंगलु जंबूसामि।
अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहि हुंति ॥ ५८ ॥
गणियइ जुगवरु सोहमसामि वीजउउ जुगवरु जंबूसामि।
त्रीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्जंभवु चउथउ जाणंति ॥ ५९ ॥
लंछणि सीह गोयमु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केता हुंति।
विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥
मनउं जुगवरु जिणेसरसूरि पावु पणासइ दरिसण दूरि।
संदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि वोधिबीजु जिउ लहइ॥६१॥
हासामिसि चउपईबंधु कियउ माईतणउ छेहु मइ नियउ।
ऊणउ आगलउ किंपि भणेउ जुगड्डु भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥
श्रीनंदउ समुदायरि रहइ नंदउ विद्दिमंदिरु कवि कहइ।
नंदउ जिणेसरसूरि मुणिंदु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंदु ॥ ६३ ॥
माईतणउ अवसरु धुरि कियउ चउसठिचउपइया वंधु थियउ।
सुद्धइ मनि जे नर निसुणंति अणंतसुक्खु सिद्धिहि पावंति ॥ ६४ ॥

सम्यक्त्वमाईचउपइ सम्पूर्णा.

श्रीनेमिनाथफागु

सिद्धि जेहिं सइ वर वरिय ते तित्थयर नमेवी ।
फागुबंधि पहुनेमिजिणगुण गाएसउं केवी ॥ १ ॥
अह नवजुव्वण नेमिकुमरु जादवकुलधवलो
काजलसामल लडचलउ सुललियमुहकमलो ।
समुदविजयसिवदेविपुतु सोहगसिंगारो
जरासिंधुभडभंगभीमु बलि रुवि अप्पारो ॥ २ ॥
गहिरसदि हरिसंखु जेण पूरिय उद्दंडो
हरि हरि जिम हिंडोलियउ भुयदंडपयंडो ।
तेयपरिक्खि आगलउ पुणि नारिविरत्तउ
सामि सुलरुणसामलउ सिवसिरिअणुरत्तउ ॥ ३ ॥
हरिहलहरसउं नेमिपहु खेलइ मास वसंतो ।
हावि भावि भिज्जइ नही य भामिणिमाहि भमंतो ॥ ४ ॥
अह खेलइ गडोग्वलिय गोरि गुणु मयणि समावइ
हरिअंतेउरमाहि रमइ पुणि नाहु न राचइ ।
नयणसलूणउ लटसटंतु जउ तीरिहिं आविउ
माट यापि बंधविहिं मांट बीवाह मनाविउ ॥ ५ ॥
घरि घरि उत्सव वारवए राउल गहगहए
तोरण बंदुरवाल फलस घयघउ लहलहए ।
फलहटि मागिय उगसेणधूय राजल लाधा
नेमिकुमारीय वाल अहभवनेहनिबद्धा ॥ ६ ॥
राइमएसम तिहु भुवणि अवर न अत्थइ नारे ।
मोहणविल्लि नवल्लडीय उप्पनीय संसारे ॥ ७ ॥
अह सामलकोमल केशपास किरि मोरकलाउ ।
अद्धचंदसमु भालु मयणु पोसइ भडवाउ ।
वंकुडियालीय भुंहडियां भरि भुवणु भमाडइ
लाडी लोयणलहकुडलइ सुर सग्गह पाडइ ॥ ८ ॥
किरि सिसिबिंब कपोल कन्नहिंडोल फुरंता
नासा वंसा गरुडचंचु दाडिमफल दंता ।

अहर पवाल तिरेह कंठुराजलसर रूडउ
जाणु वीणु रणरणइं जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥
सरलतरल सुयवल्लरिय सिहण पीणघणतुंग ।
उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु ॥ १० ॥
अह कोमल विमल नियंबबिंब किरि गंगापुलिणा
करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।
मलपति चालति वेलहीय हंसला हरावइ
संझारागु अकालि बालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥
सहजिहिं लडहीय रायमए सुलखण सुकमाला
घणउं घणेरउं गहगहए नवजुव्वण बाला ।
भंमरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई
नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥
सावणसुकिलछट्ठि दिणि बावीसमउ जिणंदो
उल्लइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥
अह सेयतुंगतरलतुरइ रहरहि चडइ कुमारो
कन्निहि कुंडल सीसि मउड गलि नवसरहारो ।
चंदणि ऊगटि चंदधवलकापडि सिणगारो
केवडियालउ खुंपु भरवि वंकुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥
धरहि छत्तु बिन्नु चमर चालहिं मृगनयणी
लूणु उत्तारिहिं वरबहिणी हरिसुज्जलवयणी ।
चहुपरि वइसइ दसारकोडि जादवभूपाला
हयगयरहपायचक्कसीकिरिहिं झमाला ॥ १५ ॥
मंगल गायहिं गोरडीय भट्टह जयजयकारो
उग्गसेणघरबारि वरो पहुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥
अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह वल्लहउ आवइ
मालिअट्टालिहिं चडिउ लोउ मण नयणु सुहावइ ।
गउखि वइठी रायमए नेमिनाहु निरखइ
पसइपमाणिहिं चंचलिहिं लोअणिहिं कडक्खइं ॥ १७ ॥
किम किम राजलदेविनणउ सिणगारु भणेवउ ।
चंपइगोरी अइधोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

खुंपु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी
सीमंतइ सिंदूररेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥
नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणतिलउ तसु भाले।
मोतीकुंडल कन्नि थिय विंबालिय करजाले ॥ १९ ॥
अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो
नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो।
मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला
करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ वाला ॥ २० ॥
रुणुझुणु ए रुणुझुण ए रुणुझुणु ए कडि घघरियाली
रिमिझिमि रिमिझिमि रिमिझिमि ए पयनेउरजुयली।
नहि आलत्तउ वलवलउ सेअंसुयकिमिसि
अंखडियाली रायमए प्रिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥
वाडउ भरिउ जीवडहं दलवलंत कुरलंत।
अहूठकोडिरू उहसिय देषइ राजलकंतो ॥ २२ ॥
अह पूछइ राजलकंतु कांइ पसुबंधणु दीसइ
सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरखु हुस्यइ।
जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ
धिगु संसारु असारु इस्यउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥
समुदविजय सिवदेवि रासु केसवु मन्नावइ
नइपवाह जिम गयउ नेमि भवभमणु न भावइ।
धरणि धसक्कइ पडइ देवि राजल विहलंघल
रोअइ रिज्झइ वेसु रूवु बहु मन्नइ निष्फलु ॥ २४ ॥
उग्गसेणधूय इम भणइ दूपहिं दाझइ देहो
कां विरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥
आसा पूरइ त्रिहुभुवण भू म करि हयासी
दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी।
सामि न पालइ पडिवन्नउं तउ कासु कहीजइ
मयगलु उबट संचरए किणि कानि गहीजइ ॥ २६ ॥
नेमि न मन्नइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं
ऊजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणूं।

राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ थुणीजइ
मलहारिहिं रायसिहरसूरि किउ फागु रमीजइ ॥ २७ ॥

इति श्रीनेमिनाथफागु.

प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

आराधना

(संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी)

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटीपणांकवलीऊतरीठवणीपाठादोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार विपरीतकथनु उत्सूत्रप्ररूपणु अश्रद्दधानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षितु उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्वु जिनभुवनआशातना अधोपत्ति देवपूजा गुरुद्रव्यग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु बिंबआशातना स्थापनाचार्यआशातना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचउ ए पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुनपरिग्रह ए पांच अणुव्रत दिग्विरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदंडविरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसंविभागु ए च्यारि सिक्ष्याव्रत; ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ सु हुं आलोयहं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्यागु कायक्लेशु संलीनता षड्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्वाध्यानु कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपतणइ विषइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं । वीर्याचारि संतइ बलि संतइ वीर्जि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कियउं सु हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता सुसाधु गुरु जिनप्रणीत धर्म्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊहु सरणि पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संसारपरीवारसमुतरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकवलनकलाकलितुकेवलिप्रणीतुधर्म्मुसरणि सिद्ध संघगण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वाउकाइ जीव वणस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर खेचर

जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं। पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं। छप्पनअंतरद्वीपतणा मनुष्य तीहं मिच्छा मि दुक्कडं। सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध जोइसी द्वैविध वैमानिकदेवा किं बहुना। दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्र शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासी लक्षयोनि ऊपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता मइं हुमिया वंचिया सेहिया सीरीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुकडं। अढार पापस्थान वोसिरावइ इह्रसव्वू प्राणातिपातू सव्वू मृषावादू सव्वू अदत्तादानू सव्वू मैथुनू सव्वू परिग्रहू सव्वू क्रोधू सव्वू मानू सर्वइ माया सव्वू लोभू प्रेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशून्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपरिवादू अढार पापस्थान त्रिविधिहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ। अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरहु अनागतु पावरकउ। पंचपरमेष्ठिनमस्कारु जिनशासनिसारु चतुर्दशपूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वतवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ। पंचपरमेष्ठिनमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थकरदेवि इसउ अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ रुद्धिनमस्कारु इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समासेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
क्षन्तव्यं तद्बुधैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥

संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्य आशापल्ल्याम् ॥

अतिचार

(संवत् १३४० ना अरसामां लखायला जणाता ताडपत्रमांथी)

कालवेला पढ्यं, विनयहीणु बहुमानहीणु उपधानहीणु गुरुनिण्हव अनेरा कन्हइं पढ्यं, अनेरइं कहइं व्यंजनकूड अर्थकूड तदुभयकूड कूडउ अक्षर कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देवंदणवांदणइ पडिकमणइ सज्झाउ करतां

पढतां गुणतां हुउ हुयइ, अर्थकूडु कहइं हुइ, सूत्रु अर्थु बेउ कूडां कह्यां हुइ, ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पगु लागउ थुंकु-लागउं पढतां प्रद्वेष मच्छरु अंतराइउ हउं कीधउ हुइं, तथा ज्ञानद्रव्यु भक्षितु उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्य विणासितउं ऊवेख्यं हुंती सक्ति सारसंभाल न कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारिउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मबादरु मनि वचनि काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचित्तद्रव्यविगइ खासहाइ पाणही पानि फोफलि वइसणि आसणि सयणि न्हाणुअइ अंगोहलि फलि फूलि भोजनि आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

बारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसण इत्यादि उपवास आंबिल नीविय एकासणु पुरिमड्ढ व्यासणं यथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु वृत्ति-संखेवु । रसत्यागु कायकिलेसु, संलेखना कीधी नहि, तथा प्रत्याख्यान एका-सणां त्रिपुरिमड्ढ साढपोरिसि पोरिसिभंगु अतीचारु नीविय आंबिलि उपवासि कीधइ विरासइं सचित्त पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिषिद्ध जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतणइ अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धानि विपरीतपरूपणा एवं बहुप्रकारि जु कोइ अतीचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

(संवत् १३५८ मां लखायेला कागळना पुस्तकमांथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपाप-क्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट-कालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौधर्म्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि अट्ठावीस लाख, त्रीजइ सनतकुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्र-देवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लांतकि

देवलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि विसइ, दसमइ प्राणति देवलोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि बारमइ अच्युतदेवलोकि बिहू दउढु दउढु सउ, अनइ हेठिले त्रिहू ग्रैवेयके इग्यारोत्तरु सउ, माहिले त्रिहू ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहू ग्रैवेयकि एकु सउ, पंच पंचोत्तरविमाने, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं। अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठि लाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्झे बहत्तरि लाख, वायकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिट्ठकुमार विज्जुकुमार थुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवंकारइ पाताललोकि सातकोडि बहत्तरिलाख जिनमंदिर स्तवउं। अथ मनुष्यलोकि नंदीसर वरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवलिग, च्यारि रुचकि वलिग, च्यारि मानुषोत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांचे मेरे, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरुपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीव क्षारसेलसिहरे, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया तियलुके शास्वतानि महामंदिर त्रिकाल लीह नमस्कारु करउं॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवनम्।

नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंताणं॥ १॥ माहरउ नमस्कारु अरिहंत हउ। किसा जि अरिहंत; रागद्वेषरूपिआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुषष्टि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; जि उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि क्षेत्रि विहरमान लीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हउ॥ १॥

नमो सिद्धाणं॥ २॥ माहरउ नमस्कारु सिद्ध हउ। किसा जि सिद्ध; दुष्टाष्टकर्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि गया। आठ कर्म किसा भणियइ। ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्रु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्मक्षउ करिउ जि सिद्धि गया। किसी ज सिद्धि; लोकतणइ अग्रविभागि पंचतालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउं उत्ताणु छत्रु

तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकास जु अजरामर-स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमइ य विभागि जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा जि आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पंच-विधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्या-चारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किसा जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी; आचा-रांगु १ सुयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ । अठाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी; पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अच्छइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमहा-व्रतपरिपालक । पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु । पंचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि कियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयइ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदन-दूर्वादिक मंगलीक भणियइ । तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु ।

ईणि कारणि सुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिय ति कार्य एहतणइ प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। यउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी-आदिजिनोक्तसारु, सु तुम्हे विसेषइइ दिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ। जु किसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ॥

अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ।

यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइं॥
वाहिजलजलणतक्करहरिकरिसंगामविसहरभएहिं।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं॥
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते। ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्त-सट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु। इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ।
नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम्॥

अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला ताडपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचारविषइया अतीचार आलोउ। ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउं अनेरउ कहिउ। व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववं-दणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदु-भयकूट, ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडा सांपडी पतिआसा-तना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मच्छरु अंतराइ हुउ कीनउं

हुइ भवसगलाहइमांहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं। मृषावादि सहसातकारि आलु अभ्याख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृषोपदेसु दीधउ, कुडउ लेखु लिखिउ, कुडी साखि थापणि मोसउ, कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विढाविढि, जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइमांहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं। अदत्तादानि विराइउं छानउं फीटुउं लीधउं दीधउं वावरिउं घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चोर-प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइ-मांहि हुउ तेह सवहइ मिच्छा मि दुक्कडु। मैथुनव्रति लुहुडपणि आपणा विराया सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसितणा नी-मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुक्कडं । हव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ। अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ। हिव अठार पापस्थानक वो-सिरावउ। सर्व्व प्राणातिपात, सर्व्व मृषावाद, सर्व्व अदत्तादान, सर्व्व मैथुनु, सर्व्व परिग्रहु, सर्व्व क्रोधु, सर्व्व मानु, सर्व्व माया, सर्व्व लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्या-ख्यानु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिसण-सल्यु ए अढारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविघनसमान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरा-वउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचखउ, वर्तमानु संवरु। सागारप्रत्याख्यानुउ।

खमिउं खमाविउं मइं खमिउ छव्विह जीवनिकाय।
सिद्धह दिन्ना लोयणा नइ मह वइरु न पाबु ।

हिव दुकृतगरिहा करउं। जु अणादि संसारमाहि हींडतइ हूतइ ईणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्ताविउ। कुतीर्थु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररूपिउ, सन्मार्गु अवलपिउ। हिवु ऊपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्तिउ, जि अधि-गरण हलऊ ग्वल घरट घरटी ग्वांडां कटारी अरहट्ट पावटा कूपतलाव कीधां कराव्यां अनुमोद्या, ते सवे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ। देवस्थानि द्रवि वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिग्वाव्यां, सार्धर्मिकवात्सल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वांदणांइ सज्झाइ अनेराइधर्मानुष्ठानतणइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ। इति भावनापूर्वकु अनुमोदउ

पृथ्वीचन्द्रचरित्र

(वाग्विलास)

—∘∘∘—

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुधा धेनुर्द्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगइ मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगइ निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अभंगुरभोग; पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्यलगइ नवनवा रंग; पुण्यलगइ घरि गजघटा, चालतां दीजइं चंदनछटा; पुण्यलगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगइ वसिवा प्रधान आवास, तुरंगमतणी लास, पूजइं मन चींतवी आस; पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत स्फूर्त्ति; पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, घणुं किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासंबंध भणीयइ। ता ईणई राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं । तींह माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि लवणसमुद्र द्विलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेहपरइं धातकीखंडद्वीप च्यारिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह पापलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह परइं पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह पापलि पुष्करवरसमुद्र बत्रीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। आगलि वारुणिद्वीप ६४ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। तेह पापलि वारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ। ईणिपरि ठाण बिमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ। कवण कवण। क्षीरद्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसरद्वीप नंदीसरसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभासद्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात। तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरइं सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तइं।

किसा ते क्षेत्र। भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४ रम्यकक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७। किसी महानदी। गंगा १ सिंधु २ रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७ सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२ रक्तवती १३ रक्तानदी १४। किस्या किस्या वर्षधर। हिमवंतपर्वत १ महाहिमवंत २ निषध ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६। हिव जे कहिउं भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढ्यपर्वत ३२ सहस्र देश। ईहमाहि साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा। ऋषभदेवतणा पुत्रतणे नामिइं सयलदेश जाणिवा। ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ कावेर ३ कांबोज ४ कमल ५ उत्कल ६ करहाट ७ कुरु ८ काण ९ क्रथ १० कौशक ११ कोसल १२ केशी १३ कारूत्त १४ कारूप १५ कच्छ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ केकि १९ कौलगिरि २० कामरूप २१ कुंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५ करकंठ २६ केरल २७ पस २८ पर्पुर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३ गांगक ३४ चौड ३५ चिल्लिर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडियाण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६ देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पोड्र ५३ प्रत्यग्रथ ५४ अर्बुद ५५ वभ्रु ५६ वंभीर ५७ भद्दीप ५८ माहिष्मक ५९ महोदय ६० मुरुंड ६१ मुरल ६२ मेद ६३ मरु ६४ मुद्गर ६५ मंकन ६६ मल्लवर्त्त ६७ महाराष्ट्र ६८ यवन ६९ रोम ७० राढक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८० वाल्हीक ८१ वल्लव ८२ अवंति ८३ वहि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७ सूर्पर ८८ सौवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्मोक ९४ हर्मोज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अट्ठाणू अनइ आदन हावस सुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांड्य तालीउ त्रिहूति भोट महाभोट चीण महाचीण वंगाल पुरसाण मग्ध वच्छ गाजणाप्रमुख अनेक देश वर्त्तइं।

तीहमाहि वषाणीयइ मरहट्ठदेस। जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम; भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर। दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीपजइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर। जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक सुपइं निर्वहइं। इसिउ देश, पुण्यतणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश। तीणि देसि पइठाणपुर पाटण वर्त्तइं; जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइं नगरि फउसीसे करी सदाकार पापलि पोढउ प्राकार; उदार, प्रतोली वार; पातालभणी धाई, महा-

काय पाई, समुद्र जेहतु भाई; जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेवतणा प्रासाद; करइं उल्लास, लक्षेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन, गरुडं राजभवन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड। जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं। किस्यां ते चउहटां। सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सोगंधीयाहटी ४ फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पटसूत्रिया ७ घीया ८ तेलहरा ९ दंतारा १० वलीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६ फटीया १७ फडीहटी १८ एरंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ त्रांबहटा २२ सांपहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सीसाहडा २६ मोतीप्रोयी २७ सालवी २८ मीणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तूनारा ३२ कूटारा ३३ गुलीयारा ३४ परीयट ३५ घांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहटिया ३९ लोढारा ४० चीत्राहरा ४१ सतूआरा ४२ कागलीया ४३ मद्यपहटी ४४ वेश्या ४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाटसुंजा ४८ वीवाहडा ४९ त्रांबडीया ५० भइंसायत ५१ मलिन नापित ५२ चोखा नापित ५३ पाटीवणा ५४ त्रांगडीया ५५ वाहीत्रा ५६ काठवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साथरीया ६० तेरमा ६१ वेगटीया ६२ वसाह ६३ सांयूआ ६४ पेरूआ ६५ आटीआ ६६ दालीया ६७ दउढीआ ६८ मुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरथारा ७१ पीतलहटा ७२ कंसारा ७३ पत्रसागीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७ साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ बुद्धिहटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा।

जीणइं नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइं यत्न। किस्यां ते रत्न। अश्वरत्न गजरत्न पुरुषरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्पराग माणिक सींघलिया शुकोद्गारमणि मरकत कर्केतन वज्र वैडूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत जलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सौभाग्यकर विषहर धृतिकर पुष्टिकर शत्रुहर अंजन ज्योती रस शुभरुचि शूलमणि अंशुमालि देवानंद रिष्टरत्न कीटपंक्ति कसाउला धूमराउ गोमूत्र गोमेद लसणीया नीला तृणघर खड्गइ वज्रधार पट्टकोण कर्णी चापडी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुख रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिहुली वाट, चालइ घोडांतणां थाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, सीसी पोमाल;

जिहां छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात दृढ, तिसां अनेक मढ; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व; जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि; जिहां आनंद हूआ, तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि कीजइं रयवाडी, तिसी वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; इसुं अन्यायरहइं दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य प्रतिपालइ, भुजवलिकरी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोठारि रूलइं, ढोरसमुद्रतउ ढोयणां ढोयइ, बावरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं किस्युं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सर्वे निर्धोख्यां दुर्ग सर्वे आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपालइ। तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ सहिजिइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक ऊगारइ, वयरविग्रह वारइ; पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शस्त्रि शास्त्रि कुशल अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मींठउं भाषइं, काज कीधां जि दाषइ; चिहुंबुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान; रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुपमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मीठउं। किसउं ते स्वप्न। इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकांति, देवरहइं मन भ्रांति; पलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; रूपि विशाल, इसी वालदेवी देपइ भूपाल। जेतलइ तेहतणी वरमाला फलिकंदलि लागी, तेतलइं रायनइं निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अलवेसर। किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हूउ मांगलिकशंख तणउ ओंकार हूआ तिवलितणा दोंकार, मृदंगतणा धोंकार; भट्टनणा मांगलिक्यध्वनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार धरी, पालंक परिहरी; क्षणु एक राजा मह्लापाडइ आव्या। मह्ल-

सिउ विनोद नीपजाव्या पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकरहइ दान दीधउं। ति वारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक वहीवाहक तलवर माडम्बिक कौटुंविक इन्द्रजाली फूलमाली धातुवादी मन्त्रवादी तन्त्रवादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठाबोला सुहाबोला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सामन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा धर्माधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठि सार्थवाह पीठमर्द वारवधू वीणकार वंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पटाउजी आलवणकार लाक्षणिक तार्किक छान्दसिक सुखमाङ्गलिक वैद्य ज्यौतिषी पाहरी पङ्गधर कुन्तधर धनुर्धर छत्रधर वालकहार सेजपाल थईयात पण्डित कवि लेखक योध महायोध माल मसाहणी पाण्डव पर्यंतारप्रमुखसकललोकि करी सश्रीक राजा राजसभां बईठा।

राजसभा किसी छइ। जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधी छइ, विविधमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा शंख आलिप्या छइं, कृष्णागरजवाधितणा परिमल महमहइं छइं, मोतीतणी सिरि लहलहइं छइं, फूलपगर भरिया छइं, कटीप्रमाणपायपीठसंयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन मांडिउं छइं। तीणि सिंहासणि राजा बइठा। किसउ राजा दीसइ छइ, मस्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विचित्र वादित्र; मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्द्धहार, महाउदार, धनदतणउ अवतार, रूपतणु भण्डार। घणउं किसिउं कहीयइ। जिसउ पृथ्वीलोकतणउ इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र। तिसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ। राजांसाह्मी दृष्टि दीधी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहूंतउ दूत तम्हारइ द्वारांतरि आविउ मनितणइं उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं माहि। हूउ राजातणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेस। रायरहइ कीधउ जुहार, अलंकरिउं योग्य आसण उदार। राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न कीधउं। आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिव दूत वीनवइ कार्य विशेष चन्न। जिहां लोकरहइं नही किसिउ क्लेश, जिहा नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ निवेश; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर छइ कोसलादेस।

तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीरहइं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमणीयराजमार्गि शोभित, उत्तुंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधावनितावलय, निरुपमनागरिकतणउं ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जीणइ नगरी देवगृह मेरुशिषरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवाक्ष वेदिका चउकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार कोष्ठागार सत्रागार गढ मढ मंदिर पडवां पटसाल अघट्टां फडट्टां दंडकलस आमलसार आंचली वंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं। सर्वोसर मंत्रोसर मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अपाडउ गुणणी रंगमंडप सभामंडपसमूहि करी मनोहर एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी नेस्ती साह वसाह पटउलीया पडसूत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भणसारा मपारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक वसइ । पांचसइं व्यवसाईया व्यवसायविषइ उल्लसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कूया वावि सरोवर नइ नीक निरुपम उद्यान आंब नींब जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिखिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ । घणउं किसूं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वषाणीइ । तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतंस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संभालइ, अन्याय टालइ । जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम आपन्न जीमूतवाहन विद्या बृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप मार्त्तंड ओदार्यि वलिराजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवकजनकल्पवृक्ष चतुरंगवाहिनीसमुद्र। घणउ किशिउ कहीइ महासासनु अरडकमल्लजगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह राजातणउ अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविषय महासायधानि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि

मधुरवाणी; सीलवंतिमाहि वपाणी, गुणि करी जाणी; घणूं किसइं; इंद्राणी, जिह आगलि वहिइ पाणी। तेह राणीतणइ कुक्षितउ समुत्पन्न मदनभ्रमनणी मंजरी, कुंकमि करी पिंजरी, रत्नमंजरी, इसइ नामिइं कन्या वर्त्तइ। ते कन्या जइ भणिवा गुणिवा योग्य हूई तु पंडितरहिं आपी। तीणि आपणकह्इ संस्थापी, पंडित अणसंतापी कन्या समग्रकला व्यापी; ता ते कन्या वहुत्तरि कला जाणइ, चउसट्टि विज्ञान वपाणइ। किसी ते वहुत्तरि कला लिपितकला १ पठित २ गणित ३ गीत ४ नृत्य ५ वाद्य ६ व्याकरण ७ काव्य ८ छंद ९ अलंकार १० नाटक ११ साटक १२ नखच्छेद्य १३ पत्रच्छेद्य १४ आयुधाभ्यास १५ गजारोहण १६ तुरगारोहण १७ गजशिक्षा १८ तुरंगमशिक्षा १९ रत्नपरीक्षा २० पुरुषलक्षण २१ स्त्रीलक्षण २२ पशुलक्षण २३ मंत्रवाद २४ यंत्रवादतंत्रवाद २५ रसवाद २६ विपवाद २७ गंधवाद २८ विद्यानुवाद २९ युद्ध ३० नियुद्ध ३१ तर्कवाद ३२ संस्कृत ३३ प्राकृत ३४ उत्तर ३५ प्रत्युत्तर ३६ देशभाषा ३७ कपट ३८ वित्तज्ञान ३९ विज्ञान ४० सिद्धांत ४१ वेदांत ४२ गारुड ४३ इंद्रजाल ४४ विनयकला ४५ आचार्यविद्या ४६ आगम ४७ दान ४८ ध्यान ४९ पुराण ५० इतिहास ५१ दर्शनसंस्कार ५२ खेचरी ५३ अमरी ५४ वाद ५५ पातालसिद्धि ५६ धूर्त्तशंवल ५७ वृक्षचिकित्सा ५८ सर्वकरणी ५९ काष्टघटन ६० कृत्रिममणिकर्म ६१ वाणिज्य ६२ वश्यकर्म ६३ चित्रकर्म ६४ पापाणकर्म ६५ नेपथ्यकर्म ६६ धर्मकर्म ६७ धातुकर्म ६८ यंत्ररसवतीकर्म ६९ हसित ७० प्रयोगोपाय ७१ केवलीविधिकला ७२ ए वहुत्तरि कला जाणइ। हिव चउसठि विज्ञान किस्यां। नृत्य १ कवित २ चित्र ३ वादित्र ४ मंत्र ५ यंत्र ६ तंत्र ७ विज्ञान ८ दंभ ९ जलकर्म १० गीतगान ११ तालवायण १२ मेघवृष्टि १३ फलकृष्टि १४ आरामरोपण १५ आकारगोपन १६ धर्मविचार १७ शाकुनसार १८ क्रियाकल्प १९ संस्कृतजल्प २० प्रासादरीति २१ धर्मनीति २२ वर्णिकावृद्धि २३ सुवर्णसिद्धि २४ सुरभितैलकरण २५ लीलासंचरण २६ गजाश्वनिरीक्षण २७ पुरुपस्त्रीलक्षण २८ वसुवर्णभेद २९ अष्टादशलिपिपरिच्छेद ३० तत्कालबुद्धि ३१ वास्तुसिद्धि ३२ वैद्यकक्रिया ३३ कामक्रिया ३४ घटभ्रम ३५ सारिपरिश्रम ३६ अंजनयोग ३७ चूर्णयोग ३८ हस्तलाघव ३९ शास्त्रपाटव ४० नेपथ्यविधि ४१ वाणिज्यविधि ४२ मुखमंडन ४३ सालिखंडन ४४ कथाकथन ४५ पुष्पग्रथन ४६ वक्रोक्ति ४७ काव्यशक्ति ४८ सारवेष ४९ सकलभाषाविशेष ५० अभिधानज्ञान ५१ आभरणपरिधान ५२ नृत्योपचार ५३ गृहाचार ५४ रंधन ५५ केशबंधन ५६ वीणानाद ५७ वितंडावाद ५८ अंकविचार

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ वारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३ धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वषाणइ चउसट्ठि विज्ञान ।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः ।

द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ; काटइयइ लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी वीयाइ माटी; विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षनृपति आवतां जयढका वाजइ; चिहुं दिसि वीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश, चंद्रसूर्य पारियास; राति अंधारी, लवइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सधर, वरसइ धाराधर; पाणीतणा प्रवाह पलहलइं, वाडिऊपरि वेला वलइं, चीपलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां मन धर्म्मऊपरि वलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ प्लावइं; नवां किसलय गहगहइं, वल्लीवितान लहलहइं; कुडुंबीलोक माचइ, महात्मा बइठां पुस्तक वाचइं; पर्वततउ नीझरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइं । इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आयउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ; दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त्त लीधउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निरर्गलपणउं मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूजइ मनतणी रली; तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, धजपट दीसइ लहलहता ।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । दुवे त्रिवाडी व्यास पाठक देवाईत मोपाईत सूराईत चंद्राईत देवशर्म्म मोपशर्म्म यज्ञशर्म्म

सोमशर्म्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषोत्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइं कारणि कलिकलिया; गले आगा, वेदध्वनि उच्चरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कंडेयपुराण ४ विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९ ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिंगपुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३ हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्चरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७ आपस्तंबीस्मृति ८ सांवर्त्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति ११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५ गौतमीस्मृति १६ शातातपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सषी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वगुलीप्रमुख अनेक सपी वर्त्तइ। तीहं सहित तिहां आवी। पितारहइं प्रणाम नीपजावी उत्संगि वइठी, दिव्य रूप देषी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसीउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, वइठा कमलि; हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइं परिमलि; कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, ताप टलइं; मोर वासइं, सर्प नासइ; आडि पंषीआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन; देहुरी दंडकलस झलहलइं, लहरि ऊछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहूंतउ ऊडी वइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, म्लीयामणउ, सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइं मोह्यइं अमर, कुंदकुसुमस्तबकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउ हंस कुतिगकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि जिमणी पांष विस्तारी; कुमरि पांषमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपटिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, वलिउ नीमाणि घाउ। राउतपायक पलभलिया, वीर सवि मिलिया। धाई गणा, ब्राह्मण

घरभणी ऊजाणा; हुवे नाठा, सवे त्रिवाडी आठा। बुंब पडी राउ धायउ हंस-पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा सरोवर माहि तारू; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, मूर्छा पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या, कन्यानणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहसइं वणराइं।

सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूंखडां तींह माथइ फुल्ल॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कलरव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं। सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकनणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलनणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र वाजइं, रमलितणां रंग छाजइं। एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव पूंटइं; हीडोलइं हींचइं, झीलनां वादिइं जलिइं सींचइं; केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंन होवइ। वनपालकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्या वनमाहि, तेह जि सरोवर देवी कुंअरि सांभली मनमाहि। तेतलइं पुरुषि एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रायरहइ दीधउं, राजा हाथि लीधउं। तेतलइं तेह जि कमलमध्यहूंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि। दुःखनणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया। नगरमध्य वार्ता जणावी, राज्ञी कमललोचना आवी। दीठी बेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी चेटी। तिहां मांडिया वधामणां, महोत्सवि कर्या सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिवा लागा। ते कवण कवण। वीणा विपंची वल्लकी नकुलोष्ठी जया विचित्रिका हस्तिका परवादिनी कुब्जिका घोषवती सारंगी उदंबरी त्रिसरी झंपरी आलविणि घनना रावणहत्था ताल कंसाल घंट जयघंट झाल्लरि उंगरि कुरकणि कमरउ गायरी ढाक टाक ढाक घुंम नीसाण नांवरी कडुआल्लि मेहुरु कांसी पाठी

पाऊ सांप सींगी मदन काहल भेरी धुंकार तरवरा। ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुप वादित्र वाज्यां, दुःख दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्छना इगुणपंचास तान, इस्यां हुइं गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र। सूथिला संग्रामां दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां कपूरीयां कस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि गजवडि उडसाला नर्म पीठ अटाण कताण झूना झामरतली भइरव सुद्धभइरव नलीवद्धप्रमुख वस्त्र जाणिवां। ईणिपरि महोत्सवभरि, साथि कुमरि, नरेश्वर पहुता नगरि। मनतणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइ कुमरीतणउं स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी। राजा तां आश्चर्य धरतई हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ। ते प्रणाम करी बइठउ तउ राजां बोलाविउ। हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयंवर, मेलीयइं सर्व नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; जु को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ। तिवारपूठिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हुं तुम्हकन्हइ आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए वीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइ मनि आनंद वधारउ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतहुइं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेप नाग हालिउ। हाथीया घोडा, नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइ। सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक, उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता, आलि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता गजेंद्र सांचरियां, तरलतेजी तरवरिया। किस्या ते। हयाणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा हयठाणा पइठाणा सरसईया सींधउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पाणीपंथा ताजा तेजी तोरक्षा काच्छूला कांबोजा भाडेजा आरट्ट बाल्हीकज गांधार चांपेय तैतिल त्रैगर्त्त आर्जनेय कांद्रेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल पंचासणा परीछणा। जोयउं सहइं, वपूकारिया रहइं; वांकी द्रेठी, सभर पूठि; छोटे काने, सूधइ वानि; सइरनी ललवलाई, नीछटनी कलाई, पूंछतणी आयताई; पलाणतणी सामंत्राई; वांकी तुंडवालि, बहुली पेटवालि, शुहि रूधा,

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी आठा। धुंब पडी राउ धायउ हंस-पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा सरोवर माहि तारू; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ वलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, मूर्छा पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या, कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहसइं वणराइं।

सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल।
जे दवि दाधा रूंखडां तींह माथइ फुल्ल॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कलरव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं। सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकनइं हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र वाजइं, रमलितणां रंग छाजइं। एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव पूंटइं; हींडोलइं हींचइं, झीलनां वादिइं जलिइं सींचइं; केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंत होयइ। वनपालकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्या वनमाहि, तेह जि सरोवर देषी कुंअरि सांभली मनमाहि। तेतलइं पुरुषि एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रायरहइ दीधउं, राजा हाथि लीधउं। तेतलइं तेह जि कमलमध्यहूंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि। दुःखतणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया। नगरमध्य वार्ता जणावी, राजी कमललोचना आवी। दीठी वेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी चेटी। तिहां मांटिया वधामणां, महोत्सवि करी सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिवा लागा। ते कवण कवण। वीणा विपंची वल्लकी नकुलोष्ठी जया विचित्रिका हस्तिका करवादिनी कुब्जिका घोषवती सारंगी उदंवरी त्रिसरी झंपरी आलविणि छरुना रावणहत्था ताल कंसाल घंट जयघंट झालरि उंगरि कुरकचि कमरउ घाघरी त्राक टाक ढाक धूंम नीसाण तांवकी पटुआलि सेल्लक कांसी पाठी

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माग, न लहइ नदीतणा ताग; न सकइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी। विषम पर्वतमाला, डावी जिमणी दवतणी ज्वाला, जई न सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लागा भील अत्यंत काला। तिवारइं राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विषम वेला, जई थाई भील भेला; तु किम झूझीयइं, जइ परदल न बूझीयइं। जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइं ते कटक अटवीऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं। आगलि नगर एक देषइ, ते हर्ष कुणतणइ लेषइ। सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइं, परस्परइं इसी वात करइं। कुणहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; दैव रूठउ, पुणि देव दाणव कोइ तूठउ; जीणइं एवडुं सानिध्य कीधउं, हेलांमात्र कटक इहां लीधउं। अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउं पुण्य। जेह कारणि इस्युं कहइ। जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि; ताणीया पाणीनइ पूरि, आक्रम्या क्रूरि; चांप्या सधरि, डसिया विषधरि; धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ; मुरडिया मोगे, दूहविया रोगे; ऊपाडिया वंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहुंनइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार। लोकरहइं इसी वात करतां राजाइं तिहां आंबावृक्षहेठलि आव्या, ऊतारा नीपजाव्या। तेतलइ धातु, धुलतु; पाछउ जोतउ, कायरपणइ रोतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पइठउ। तेतलइ तरूआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केई पुरुष आव्या। तेहइ राजा बोलाव्या। आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं रापइ ते ढोर। तिवारइं राजातणे सेवके कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सकइ इंद्र। तिवारइं ते पुरुष कहिवा लागा। नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर ऊगारउं। अम्हे तलार, करउं नगरतणी सार। पुणि ए चोर, दुर्दान्त अपार; ए विविधवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ; चटइ मालि अटालि, पइसइ परनालि पालि; कमाड ऊघाटइ, पुणि सूतु कोइ न जगाडइ, अघोर निद्रा दिइ; कानफोटना आभरण लिइ; कटारी पायबंधन वाढइ, पर्वतप्राय वेकाण काढइ; घडिउं चोर पचाडई, राउला भंडार फाडइ; दीसइ दिसि शांत, पुणि रात्रिइं साक्षात् कृतान्त; विणासीनउ न मानइं चोरी, बांधइउं वाढी जाइ दोरी; लोह सांकल त्रोटइ, घटी न रहइं पोडइ; हाकिउ ऊजाइ, रुंधिउ घसी धाइ, करि कीधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाटइं, धीजि अटइ। इसु ए चोर गढनइ परनालि पइसनउ लाधउ, पाछी बांधउ, दांते दोर त्रोटि

आसणि सूधा; हसमंत हयहेपारवि अंबर बधिर करता। सूरवीर साहसिक काछुआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूंसरा मांकडा दोरीया वोरीया द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित। ससइं धसइं, सादि पइसइं, जुडइं, दउडइं। जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइं तिस्या अनेक तुरंगम सांचरिया। तउ पायक पहटिया। किस्या ते पायक। सूरवीर विश्रांत दुर्दांत पङ्क पेडे लीधे श्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं जुटइं, सेल्ह कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लामी, न मेल्हइं स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाढ दिइ। किहांई न दीसइ धाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे धाई पुलइं ऊच्छलइं। इस्या पायकनी मिली कोडि, जींह माहि नहीं षोडि। हिव रथ विस्तरिया। किस्या ते रथ। चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सूता; छत्रीसे दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहि रविबिंब रोलइं; ऊपरि धज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं; घांट वाजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया रथ। ईणिपरि चतुरंग दल चालतां हूतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजावइ। मार्गि जातां आवी एक अटवी।

हिव ते किसीपरि वर्णविवी। जेह अटवीमाहि तमाल ताल हुंताल माल्हूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक बकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांबू जंबीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीयरि द्राप दाडिमी देवदारु अंकुल्ल कंकिल्लि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माधवी जपा मरुवक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगिरि सिरीषां सींवलि सिरधू सीसमि साग टींबूसार आक आकमंदार कपित्थ बील बहिदां करण वरण धव खदिर पलाश वड वेडस पींपल पींपरि ऊंबर फटंवड धाहुडी धामण पीप पेजड पीरणीं कइर करंज वाउल बीजुरी आमली आंविली बोरि इंगोरि गोरडीयाप्रमुख वृक्षावली दीसइं, वीहंतां सूर्यतणां किरण माहि न पइसइं। अनइं विहांइं सिवानणा फेत्कार, घूकनणा घूत्कार; व्याघ्रतणा गुरहराट, न लाभइं वाट नइ घाट; माहि वानरपरंपरा उच्छलइ, मदोन्मत्त गजेंद्र गुल्गलइं; सिंहनादभयभीत मयगल पलमलइं। जिस्या दवि दाधा पील, तिस्या भील। सूअर घुरकइं, चीत्रा घुरकइं; वेताल किलकिलइं, दावानल प्रज्वलइं; रींछ मांचरइं, चित्तलणा यूथ विचरइं। इसी महारौद्र अटवी।

४ पट्ट ५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ त्रिशूल ९ भाला १० भिंडमाल ११ मुसंढि १२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शचिष्ट १९ कणय २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरवारि २३ कुद्दाल २४ द्रुस्फोट २५ गदा २६ प्रलय २७ काल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ द्रस ३३ दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ वह्नि। इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर पुलइं। रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते आकाश छाया। एकि घोडे चडइं, एकि ऊतावला पडइं; कायर रडइं, सुभट भिडइं, योध जुडइं। घोडा मुह मूकी धाइं, त्रूटे पगि ऊजाइं; हस्तीतणा सुंडादंड त्रूटइं, एकिना शिर फूटइं। इसिइ युद्धि प्रवर्त्ततइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं दल वयरीए एकवार भागुं, नासिवा लागुं। समरकेत हुउ सानंद, पृथ्वीचंद्र हुउ निरानंद; चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं काइं हुउ उपघात। राजा चींतवतइ हूंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइं कउतिग नीपजाविउ। तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहइं चडियां। राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर तियारपूठिइं कुणहीं न जाणिउ। तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वीचंद्रतणउ वीरवर्ग मिलिउ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे द्वितीयोल्लासः।

तृतीयोल्लासः



जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहूंतउ छोडिउ; पिहरावी बोलावीउ। तुं मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे। कियारइं सूर्य पूर्व छांटी पश्चिम उदय मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ; मेरु ढलइ, आकाशनउ नक्षत्रराशि गलइं; पापीयाघरि धर्म्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलइं; भूमंडल पलभलइं, कुलाचलचक्र चलइ; अमृतहूंतउ विष थाइ, पृथ्वी रसातलि जाइ; कृपणि दान दीजइ, पुणि मुझकन्हइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ। नियारइं जे आविउ म्हइ शरणि, ते लागु राजातणे चरणि; स्वामी तुं धन्य जीणि तइं हुं ऊगारिउ, नहींतु तलारे हुंतु मारिउ; पटतउ संसारि; होगत मनुष्यजन्मनणो हारि। राजा कहिउं तु किमिउ, जेहनुं मन इमिउं। विचारि ते कहिवा लागु। अंग-

नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ। पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी; ए तुम्ह म थापउ, अम्हरहइं आपउ। नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं। अम्हा-रउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ। सांभलउ ए वात, ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात। तिहां छइ राजा समरकेतु, अति-सचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु। जेतलइ तेउ ए धात जाणिसिइ, तेतलइं ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ। एह कारणि चोर आपी निर्दोप थाउ, पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ। इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं जोई राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या। कठिया ते वीर, ताकचा लागा तोमर तीर। नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगरमा-हि पइठा, तु नाभिइं सास वइठा। जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देषाडइं आ-पणउ घाउ। समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवई निरोप; तत्काल साम-हिउं दल, मिलइं सुभट सबल; वाजइं प्रयाणभेरी, चीहइं वयरी; पाटहस्ति गु-डिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ। रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पाषरिया, पायक सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, वाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रध्वज, ऊछलइं रज। तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात कही। तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझनइं होसिइं, लोक कउतिग जोइसिइ। ईणइं वातइं दूत अपमानी वाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि दल सामहाविउं, ए आपणइ पर्वे आविउं। चाल्यां बेउ दल, ऊपडइं धूलिप-डल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं। न जाणीइं आपणां दल, न जाणीइ पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइ पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हूउं। विहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढक वाजी, रणचहण काहली वाजी; रणतूर वाजियां। त्र्यंबकतणे ब्रहब्रहादि जाणे त्रिन्हइ त्रिभुवन टलटलिवा लागा, भेरीतणे भूंभूयादि श्रुहि भिलिहि फाटी, काहलतणे कोलाहले कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादिं उच्चैःश्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिया, ढाकबूक वाजी, बुंबारव फाटी, विहुं दलि चालते सेषनाग सलवलिउ, कुलाचलचक्र चलिउ, कूर्म्म करोटि भाजइ, अंबर गाजइ; अकालि अमत्ताविं प्रलयकालनी शंका हुई। वाध्या क्रोध, झूझइं योध; घाय जालवइं, छत्रीस दंडायुध चालवइं। किस्यां ते। यज्र १ चक्र २ धनुष ३ अंकुश

दकालनु मेह; थोडा मेहनउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय नीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचंद्रप्रतिइं शिरु नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुझनइ ऊपनु वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार, संसार। जिशिउं पीपलनुं पान, जिशिउं गजेंद्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ मांकडनु वैराग; जिसिउ वीजनु झवकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणीनउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी। हउं तापसी दीक्षा लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चांयवंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत। अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ। जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि, जेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ भासि; जेतलूं अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलूं अंतर बाप नइ फूया; जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथीर; जेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलूं अंतर बारू भीति नइ त्राटी; जेतलूं अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलूं अंतर जीवता माणस नइ पूतली; जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ बुरी; जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ पारा; जेतलूं अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रभात नइ वीआल; जेतलूं अंतर रूंगा नइ राग, जेतलूं अंतर सींबलि नइ साग; जेतलूं अंतर अलसला नइ नाग,

देशि श्रीपुरिनगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइं सधर । तेहतणु पुत्र हुं श्रीपति, पणि विषम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि बापुजीसाथि पहुती। पिता परोक्ष हूआ पूठिइं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं; कई वाणउत्रे ग्रसिउं,हाट चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, काई ठाकुरे ग्रहिउं; घर वलिउं, समग्र मंडाण टलिउं; समग्र द्रव्य निस्तरिउं, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउ। पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं । भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ, त्रिन्नि सइं साठि क्रियाणां चडाव्यां, सप्तविध पकवान चडा-व्यां; सप्तविध करंवा लिया,पोतां सपाणी भरिया, देवसमुद्र वायस पूजाव्या । पाभिल मादल वाजिवा लागां, वावरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाहेल करवा लागा; कूउपंभउ ऊभउ कीधउ, नागरउ पाडिउ, सिढ ताडिउ; घामतीउ घामतउ लीचइवा लागु, वाऊरीऊ तलि पइठउ, नीजामउ नालि बइठउ। आउलां पडइं, सुकाणी सुकाण चालवइं, मालिम वाहण जालवइं; सुरवर लहलह्या, वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या । हिव आगलि जातां हूंता चिली वाय वायां, आकाशि हूई मेघछाया; ऊडिउ पवन प्रवल, समुद्र हूउ उच्छृंखल; कल्लोल आकाशि ऊपडइं, बीहतां लोकरहइं डींबा चडइ; वेला लागी, वस्तु वामी; एक हा दैव करइ, एक देवध्यान धरइं । वाहणि पर्वत आफली भागउं, श्रीपतिइ हाथि पाटीउ लागउं। तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ त्रिहु दिवसि पारि आविउ, वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ। आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइ साचविउ नमस्कारतणउ विवेक। जोगी कहिउं तूरहिइ एक देसु, बीजउ लेहसु। मइं कहिउं दिइ,पछइ मुज निर्द्धनकन्हइं जं देषइ तं लहिइं। जोगी बंधछोडणी विद्या देइ मस्तकि मागिउं । मइं चींतवइउं, वली पूर्व-भवपातक जागिउं । जोगी धायु पूठि, मइ नासिवा बांधी मूठि । नासतु ईणि नगरि आवी रात्रिइं गढतणइ पालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ; तइ राषिउ, मोटउ उपगार दाषिउ।

छासिइंकेरउ आफरू दासिइकेरू नेह ।
कंबलकेरू मोलीउं पिसत न लागइ षेव ॥

माहरी लक्ष्मी इहसरीषी हुई, तउ कहीइ। आभातणी छांह, कुपरिसतणी वाह; आढनउ तूर, नदीनूं पूर; ठाकुरनउ प्रसाद, माऊडनउ विषाद; वहीनउ पटीगणउं, नृपटानउ उठीगणउं; दीवानु तेज, मात्रेईनु हेज; दासीनु स्नेह, गार-

दकालनु मेह; थोडा मेह्नउ त्रेह, वहिलु आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय नीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचंद्रप्रतिइं शिरु नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुझनइ ऊपनु वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार, संसार। जिशिउं पीपलनुं पान, जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ मांकडनु वैराग; जिसिउ वीजनु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणीनउ टबकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी। हउं तापसी दीक्षा लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे करूवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चायवंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत। अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ। जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि, जेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलूं अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलूं अंतर बाप नइ फूया; जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथीर; जेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलूं अंतर वालू भीति नइ त्राटी; जेतलूं अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलूं अंतर जीवता माणस नइ पूतली; जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ धुरी; जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ पारा; जेतलूं अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रभात नइ वीआल; जेतलूं अंतर रूंगा नइ राग, जेतलूं अंतर सींवलि नइ साग; जेनलूं अंतर अलसला नइ नाग,

जेतलूं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ सूर; जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर; जेतलइ साधु नइ चोर, जेतलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा; जेतलइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ मोटा वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलूं अंतर अपरदैवत अनइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ। जिम श्री सूर्यपापइ दिवस नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरूपदेशपापइ विद्या नही, हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापिइ त्रिपति नही, साहसपापइ सिद्धि नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ सुगति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मनणी प्रशंसा। जेह कारणि इसिउं कहिइं। जिम विलंब विणसइ काज, कुठकुरि विणसइ राज, मार्जारिप्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान, कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लूइं विणसइ मइपान, व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र, क्षयणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आकदूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु वाक, विपइप्रयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक; वरसालइ विणसइ शस्त्र, पयरी विणसइ वस्त्र; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ धर्म। राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ। सांभलु परमार्थ हिव, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव, करउ सद्गुरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली तीह विहुंरहिइं मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा लेवा हुई मनि रुली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमणमाहत्मा एक तिहां आविउ, नेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ। पगि लागी, दीक्षा मागी; तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी। तिवारपूठिइं तेहे ऋपीश्वरे राजा मोकलावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आचउ पीयाणउ दीधउ। पहिलुं पहुतु पद्मपुरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णवारनु भार आपिउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहूंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

पहुता, स्वयंवरि आव्या दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं आवी महोत्सवि करी माहि लिया, भला ऊतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु। कर्पूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि ध्वज लहलहइं; चंद्रूआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई; थंभकुंभीतणा मनोहर घाट, पठंइ भाट; रत्नमई तोरण नइ मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे प्रकरि; वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं; आरीसा झलकइं, चालतां स्त्रीना नेउर पलकइं। इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण, मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया; राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् हुइ इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ शंकाभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आचिवउं किसिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देपी सकललोक इसिउ विमासइं। जिम अक्षरमाहि ओंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंबरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, वस्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शूद्रकवीर, गढमांहि कालिंजरु, पाणिमाहि वइरागरु; द्वीपमाहि जंबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण; तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि भ्रूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल; जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागरखंडउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि विमान; गरुआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवारपूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराविउ, तउ सघवं स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगरूक्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-

करियां। किस्यां किस्यां ते आभरण। हार अर्द्धहार त्रिसर प्रालंब प्रलंब कटीसूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट्ट शेपर चूडामणि मुद्रिका तवक दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुस्थल हेमजाल मणिजाल रत्नजाल गोपुच्छक उरस्त्रिक चित्रक तिलक कुंडल अभ्रमेचक कर्णपीठ हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां। ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितणां छात्र। कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; आविउं नरविमान, तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान। आगलि हुइ वादित्रध्वनि अनइ गीत गान। ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; महोत्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ द्वारि। ते देषी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि। तेहतणा पाणिग्रहणनणी वांछा धरइं, विविध चेष्टा करइं। एकि राय आपणा हीयानउ हार हलावइं, एकि वांहतणा वहिरषा चलावइं; एकि रत्नमय दडा उलालइं, एकि छुरी ऊछालइं; एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप मांडइं, एकि दृष्टिरहइं विनोद ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि विविध चेष्टा करइं राजमंडल। तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर। हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वयंवरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी। अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्पिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरहइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया।

हिव जोइ तुम्ह आगलि दक्षलक्ष्माधदेसतणउ नरेश्वर, सत्तिविहं भरतेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ। जेह राजातणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ; तूठउ दारिद्र हरइ, दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी गुडि गांजइ, शत्रुभट भांजइ; इस्यु भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल। अथवा ए जोइ वाणारसीतणउ राउ, भांजइ चपरीनगउ भटियाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्धउ त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुंइ सपक्षपर्वततणी

शंका नीपजइं। जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ वइरीरहतइ प्रलयकालोद्धतसमुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइ। इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल, सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहरुं कहिउं करि। अथवा विदर्भदेस कुंडिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; वहइ कर्णदानेश्वरतणउ अवतार, धनुर्धरपणइं हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार, प्रबलकोठार, झूझारतणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कइवार; मलाइवार, महाउदार, कंठि वरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार। अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथ राजा जोइ, जीणि दीठइ आणंद होइ। जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधवलि कीर्त्ति मंडलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु; सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइं नीलकंठपणउं टालिउं, विष्णुहुइं कृष्णपणउं पखालिउ; बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं। ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी। इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर। ईणिपरि तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमांगद हेमरथ मणिरथ मणिशेषर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख नरेश्वर वर्णव्या वषाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ मुषचंद्र, ऊलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर। तिवारइं प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हूउ विख्यात वसुधातलि। जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ चउरासी लाष हस्ती, जीहतणि गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाष तुरंग, ऊललता जिस्या हुइं कुरंग, चउरासी लाष रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाष नीसाण वाजइं, वयरीना भडवाउ भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; गाम घोडउं कादतां छन्नू कोडि साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संबाध, चऊद सहस्र अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि सहस्र नगर प्रधान; अन्यायरहइं दारुण, अडतालीस सहस्र पाटण; जेहे वसइं

अनेक कुटंब, इस्या चउवीस सहस्र मटंब; जीहना वर्णनतणी कीजइ जेड, इस्या सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्त्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी; चरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर; विहितोल्लास, अट्ठावीसउ लाप पिंडविलास; बत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय; प्रत्यक्ष, पंचवीससहस्र यक्ष; वीससहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर, छत्रीस लाप दीवटीया उदार, त्रिन्निसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंडभुजदंड, साधित भरतक्षेत्रपट्खंड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्त्ति। हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणइं गंगा समुद्रि घाति रापिउ आपणउं चरित्र। तीणइं राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस। तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहट्ठदेसि ठाम। तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय हूआ, तेहना प्रघट्ट कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकनणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वीदोपर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ। हिव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि साक्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधरु, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर; निर्मलपणइं गंगाजल, सौम्यपणइं शशिमंडल; रूपिगुणि अश्विनीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस; पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एहऊपरि धरि तु अनुराग, इहां छइ ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कहीइं। एह राजा विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकलमहीपाललीलालतिशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिवा योग्य छइ। ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा झमझमकार करती; हर्षभर वहती, राजाढूकडी पुहती। लाज टेली, कंठकंदलि वरमाल मेल्ही; तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या; विद्याधर पुष्पवृष्टि करइं, भट जयजयशब्द उचरइं; गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइं; वापरइ धवलमंगल, हुइं महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे तृतीय उल्लासः।

चतुर्थ उल्लासः

हिव तिसिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-रहइं धूमकेतुदेवतणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइं जं चींतवइ तं करइ। धूमकेतुदेव अठ्यासीग्रहमाहिलउ जांणिवउ । कवण कवण । अंगारक १ विकालिक २ लोहितांक ३ शनैश्चर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९ वितानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ रुत १५ कार्योपग १६ कर्बुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाभ २१ शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाभ २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-भास २७ रुप्य २८ रुप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२ तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ वंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५ अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-काल ५८ स्वस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक ६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८ आरंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ वीतशोक ७४ वितप्त ७५ विवस्त्र ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८० एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७ भावकेतु ८८। इह अठ्यासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ।

जिवारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-हुइं रीस चडी। रोसें हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं करवाल। ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल; कंठाविलंबितरुंड-माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा; आंपि ऊंडी, पेटि कूंडी; आंपि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश; हडहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ; मस्तकि अंगीठउ वलइ, भैरवा जिम कलकलइ । इसिउं रुद्र रूप, केनलुं वपाणीयइ तेहनूं स्वरूप। इसिउ वेताल देषी सहू भयभ्रांत हूउ। तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाटी रथि घातिवा लागउ। तेतलइं राय राणा धसमसिवा लागा। तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अं-

धकार प्रसरिउं । जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ, कोई आपणी छांह न देषइ । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र चीत्कारपणइं जाणीयइं; चिंधपताका किंकिणीक्वाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी जाणीयइं, नीसाण द्रह्द्रहाटि जाणीयइं । इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा, च्यारि प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीषुं प्रवर्तिउं ।

हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात; अदृश्य नक्षत्रपटल, गगन उज्ज्वल; निःशब्द घूकुल, निर्मल दिग्मंडल; आश्रितपूर्वाचल, हूउं रविमंडल; विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल; वायु वाइं शीतल, प्रसन्न महीतल; जिस्या रातापारेवातणा चरण, तिस्यां विस्तरइं सूर्यतणा किरण । इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया; दीसइं रायराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारइं सोमदेव राजा हूउ सचिंत, परिवार हूउ शोकवंत, पृथ्वीचंद्र राय हूउ विछाय । स्वजनवर्गसंबंधीया राइराणा तिसिइ अवसरि उल्हाणा । ते मंडप रत्नमंजरीपाषइ निःश्रीक दीसिवा लागउ । जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्वती; गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांडरहित पकवान, मानरहित दान; छंदरहित कवि, शस्त्ररहित पवि; विवेकरहित मणु, वेदरहित ब्राह्मणु; स्वर्गरहित ऐरावण, लंकारहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; फलरहित वृक्षु, तपोरहित भिक्षु, वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासिकारहित मुखमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; वस्त्ररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार; तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धिरहित प्रयोग; कंकणरहित बाहुदंड, पणिछरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल, स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित मान; मुष्टिरहित कृपाण; ठउलीरहित बाण; अणीरहित छुरी, लोकरहित नगरी । जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपाषइ ते न शोभइ लोकनणउ व्यतिकर । ते सभा, हुई निष्प्रभा । रीझइ हुंते जेहरहइं दीजइं मोतीतणा थाट, तीह भाट बोलतां न जोइ कोइ वाट; जीह रीझइ चीत, ते कोइ न गाइ गीत; जेहे ऊपजइं चित्र, ते न वाजइं वादित्र; जीणं धूणीइ मस्तक, ते कोइ न वांचइ पुस्तक, जीहनउं वषाणीयइं औचित्य, निसिउं न होइ नृत्य । इसिइ दुःखि स्वयंवरमाहि पर्वतनइ हुंतइ पृथ्वीकंपि हूउ । धृजइं थंभ, धूजइं कुंभ; धृजइ रायराणा आसणपीठ, बइठे रहीइं नीठ; एकि

धूजतां पडईं, कायर रडईं। इम धूजि विछूटी, पछइं सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यरूपधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीतणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू आश्चर्यपूरित हूउं। तीणें स्त्रीइं विहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी वली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कुंअरि आघी तेडी।

तिवार लोकतणा मेला, वात पूछिवातणी नही वेला। हिव हर्षिइं लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय ऊतारे हूया। भोजन मंडपऊपरि धज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुइं धवलगान, नीपनां पकवान; केलवीयइं धान, स्वजनहुइं बहुमान; वापरइं पान, जिमाडीयइं जान। कामकाजना धणी पलवटि वांधी हींडइ आकुला, मेलइं चाउरी चाकुला। मेलइं आडणी, हिव भोजनतणी मांडणी। वइठी पांति, जिमणहार परीसणहार विहुरहइं पांति। पहिलउं परीस्या फलावली खंडखाद्य पक्वान्न, पछइ परीस्यां उण्हा अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि; घृततणी नालि, पापलि शाकनणी पालि; ऊपरि कूर करंबा दहीं वापरइं, ईणिपरि लोक भोजन करइं। आचमनअनंतर दीधां कपूरमिश्र वीडां, लक्ष्मीवंततणे सवे वस्तु संपजइ क्रीडां। हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुइं कराविउं मंगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरियां वस्त्र प्रधान। सर्वांग शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गरुउ गजेंद्र आविउ, उत्तिम स्त्री वधाविउ। गजेंद्रहूंतउं ऊतरी डावइ पगि सिरावसंपुट चांपतउ माहि पहुतु। आचारविचार हूआ, चउरीसमाहि च्यारि मांगलिक वर्त्या, हाथमेलावणइं दान प्रवर्त्यां। राजासोमदेवि वरहुइं गजरथ तुरंगमदान दीधउं, राजापृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ विशेषवंत उत्सवसंयुक्त ऊतारामणी चालिउ, सकललोक जोइवा मिलिउ। एकि वषाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वषाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप; एकि वषाणइ भाग्य, एकि वषाणइ सौभाग्य; एकि वषाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि वषाणइ परिवार; एकि वषाणइ ऊहतणां कुल, एकि वषाणइ विहुंतणां शील निर्मल; एकि वषाणइ लावण्य, एकि वषाणइ पुण्य। इसीपरि वषाणीतु स्थानकि आविउ, विश्वहुइं आनंद ऊपजाविउ। राजासोमदेवि सविहुं रायहुइं आवर्जन

तधवललोचन; जिसिउ चालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ वाद। इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ वृषभ २। तउ राणीयइ दीठउ सीहु। किसिउ ते सीह। रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभाडंवर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालूइ लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल। विस्तीर्णकेशरसटाशोभितस्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ट, तीक्ष्णदाढाविडंबितवदन, पराक्रमतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि भूमिकांति निहालतउ, मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्तितणउं क्षेत्र; अकलअगंजित, सवल अपराजित; अवीह, एवंविध दीठउ सीह ३। तु दीठी देवी लक्ष्मी। ते किसी। हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महामखरि; पद्मद्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमानलोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतशृंगार; दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान; एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४। तदनंतर अशोक चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही वेउल वउल श्रीदमणा मरूआ मंदार मुचकंद केतकीप्रमुखवनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्यमानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५। तउ दीठउ चंद्रमा। ते किसीउ चंद्रमा। रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण यामिनीजीवितेश्वर अमृतमयमूर्त्ति उज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६। तउ दीठउ श्रीसूर्य। किसिउ ते सूर्य। प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइं, देवहुइं पूजा चडइ; पंथ सवे वहइं, मुनीश्वर धर्मकथा कहइं, लोक वादविशेष लहइं, मेघ मल्हार्‌ गाइइ। मांहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइं, चक्रवाक उल्हसइं; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७। तउ दीठउ ध्वज। किसिउ ते ध्वज। कृताह्लाद, कोई एक गरूउ प्रासाद; प्रखरि, तेहतणइ शिपरि; अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सीहतणउं रूप। इसिउ घंटागणि गहगहतउ वाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीइं दीठउ ध्वज ८। तउ दीठउ पूर्णकलस। किसिउ ते पूर्णकलस। सुवर्णवटित रत्नमय पडघीयां स्थापित, कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतपूरित घटजुगली-

विराजमान, आम्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विपइ अनलस, दीठउ पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षनणउ परिकर; पालिउन विस्तर, देहरीनउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंटी झलहलइं, परइ वाइ लहरि ऊच्छलइं, ऊपर जाण भरीयइं, पइ कूइ तरीयइ। अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कपिंजल कलहंस कलगलइं, तापतणा व्याप टलइं; राजहंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंगीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइ; संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकइं; तडि कीर्त्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। वग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनखंडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजल, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रवहण सांचरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, वाहण वाहणरहइं एकि मिलितां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं। इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीपइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयचित्रित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलक्ष्मीहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्ष न माइं। अनेककुसुमतणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल वहकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नराशि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अप-

राजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ लोहिताक्षप्रमुखरत्नतणउ राशि विरचितविश्वप्रकाश देषइ राणी मनतणइ उल्लासि १३ । तउ दीठउ निर्धूम वैश्वानर। किसिउ ते वैश्वानर । कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करीय रमणीय; मधुघृतघनपरिषिच्यमान, कूर्चरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेजसहित; मांगलिक्यमूल, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर ४१ ।

ए चतुर्दश स्वप्न देषी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी । मइं तां ए चऊद सुमिणां दीठां, ईहतणां फल हुसिइ अत्यंतमीठां । तउ स्वामीकन्हइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु । इसिउं विमासी कइ न बोलावी दासी; सखी महिली सवि पाली, राणी स्वयमेव चाली । हंसगति हरषिइं गहगहती, जिहां राजा तिहां पहुती जयविजय करती । रायहुइं निद्रा टाली राजातणइ आदेसि भद्रासनि वइठी । स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फलु कहिउं; राज्ञी हृदयि ग्रहिउं । तिवार पूठिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक वइसी सखीसहित धर्मजागरिका नीपजावी । प्रभाति नरेश्वरि सभामाहि स्वप्नपाठकपाहिइं विचार कहाविउ, दान देउ निमित्तीवर्ग अदरिद्र नीपजाविउ । संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हूंते परमेश्वरतणउ हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार ।

इति श्रीअचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे चतुर्थोल्लासः ।

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली । ते कवण कवण । भोगंकरा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ तोयधारा ५ विचित्रा ६ पुष्पमाला ७ आनंदिता ८ मेघंकरा ९ मेघवती १० सुमेघा ११ मेघमालिनी १२ सुवत्सा १३ वत्समित्रा १४ वारिषेणा १५ वलाहका १६ नंदोत्तरा १७ नंदा १८ आनंदा १९ नंदवर्द्धिनी २० विजया २१ वैजयन्ती २२ जयंती २३ अपराजिता २४ समाहारा २५ सुप्रदत्ता २६ सुप्रबुद्धा २७ यशोधरा २८ लक्ष्मीवती २९ शेषवती ३० चित्रगुप्ता ३१ वसुंधरा ३२ इलादेवी ३३ सुरादेवी ३४ पृथ्वी ३५ पद्मावती ३६ एकनाशा ३७ नवमिका ३८ भद्रा ३९ सीता ४० अलंबुसा ४१ मितकेशा ४२ पुंडरीका ४३ वारुणी ४४ हासा ४५ सर्वप्रभा ४६

श्री ४७ ह्री ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ रूप ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ ऊर्ध्व-लोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवा-सिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी। तेहे सूतिकर्मतणी समग्ररीति नीपजावी। तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्रहइं आसनप्रकंप नीपनउ। पहिलउं इंद्रहुइं कोप ऊपनउ। वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि निहालिउं। जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार। इंद्र मनि गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थइ मस्तकि हाथ जोडी शक्र-स्तव कहिउ। इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल आविउ। इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं। इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्व-ति आविउ। चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया। आठ सहस्र चउसट्ठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं। तदनंतर अंग-रूक्षण करी विलेपन २ वस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ ध्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पग्रह ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ नृत्य १६ वादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। कणकवणपरिइं। उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जं-ताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुलाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पं-ताणं दुंदुक्कीणं विपाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं उत्तालिज्जंताणं त-लाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिक्किसिक्काणं खुंसरिकाणं दुंदुक्कीणं फु-मिज्जंताणं वंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं। ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरहुइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोटि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ। राजा वधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ प्राकार, शृंगारियां प्रतोलीबार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई। ध्वजपताका लहकइं, पुष्पपरिमल बहकइं। नाचइं पात्र, राजाभवनि आवइं अक्षतपात्र। सोमाई भणलां आवइं छात्र, लोक अलंकरइं आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात। तीणि वेलां न ऊकइं कोरण, बांधीयइं तोरण; बांधीयइं वंदरवाल, उत्सव विशाल; गुलधीउ लाहीयइं, मन ऊमाहीयइ। ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हूआ। नामगरणतणइ अवसरि माताहुइं डोहलइ धर्म बुद्धि हुई। एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउ, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणुं लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं। अढई लाप वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्तियुक्त हूउ स्वामी। नवविधलोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांवत्सरिकदान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। त्रि वरस छद्मस्थ काल अति गमी, केवललक्ष्मी पामी, विहारक्रम करइं, भव्यलोक तारइं।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाप सुवर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिइं लेई परमेश्वर नमस्करिवा संचरिया, सकललोक ऊलटि धरिया। पृथ्वीरहइं अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते। समग्र देव आवइं, समोसरण नीपजावइं। तां पहिलुं वायुकुमारदेवतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइं, ते तृण काठ कचवर हरइं, आकासि मेघपटल पसरइं, गंधोदकि वृष्टि करइं, फूलपगर भरइं। गरूअउं रत्नमय पीठ बांधी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइं, चिहुं दिसि दिव्य परिमल विलसइं। रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिन्नि प्रकार रूपि करी उदार, अनेक प्रकार, मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीबार। तिहां चिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ, इंद्रधनुपमानभूरण, रत्नमय तोरण, प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी वंदरवालि। अनेकि विचित्र, विशाल छत्र, उदारस्वरूप, कनकमय पूतलीतणां रूप; जेहे लिपित सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज, पंचवर्ण ध्वज। इस्या समोसरणविचालि, मणिरत्नपीठि विशालि; सकलमांगलिक्यमुख्य, गरूउ अशोकवृक्ष; जिमिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउ वारगुण चैत्यवृक्ष। तेहतणी छायां रत्नमय

सिंहासण, जगन्नाथहुइं वइसण। तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय पादपीठ; जिस्यां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, देवहुइं ढालइं चमर; अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पूठइं झलकइं भामंडल। जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र झलहलइं; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिकतणउ भडवाउ भाजइ। सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रध्वज लहलहइं, धूपतणा परिमल महमहइं, वादित्रतणी कोडि हुहुहुहइं। मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइ। ईणि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थापतउ, पूछिया ऊतर आपतु; प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकहइं पाप मूंकावतउ, पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि वइसइ चतुर्मुख होइ, भविकसंमुख जोई। संपूरी, बारपरिषदपूरी; मिथ्यात्वमानमूरी, पापपटलचूरी, सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी; लाभ जाणी; वखाण करइ, धर्म मार्ग विस्तरइ।

हिव बेउ नरेश्वर मनि गहगहना, समोसरणिमाहि पहुता। श्रीधर्मनाथहुइं प्रदक्षिणा देउ, आगलि वइठा नरेश्वर बेउ। तिवारिं राजापृथ्वीचंद्रि आपणइं विशेषवंतइं रूपि लावण्ये करी देवदानवइंद्रहुइं आश्चर्य कीधुं, श्रीधर्मनाथि तीर्थंकरि उपदेश दीधउ। किस्यु ते।

सद्वंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः।
पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोषाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि॥१॥

अहो भव्य जीव ए इस्यां धर्मनां फल जाणिवां। कवण कवण। पहिलुं तां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार। जइ जीव नीचकुलि अवतरइ, तु किसिउ पुण्य करइ। एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणां कुल, कोलीनणां कुल। ईणिपरि धोहरी आहेडी वागुरी पाटकी मद्यप घांची चोर वेश्या वावरी मेय डुंब पाणपेरणीयांनणां पापतणां कुल जाणिवां। जीव एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ, लाधु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ। पुणि जीवहुइं उत्तिम कुल दुर्लभ। कुण तेउ उत्तम कुल।

वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं॥ २॥

वंश ते प्रशंसि जेहे जिणतणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार। इक्ष्वाकुवंश सूर्यवंश चंदिल्ल चाहूआण सोलंकीवंश वालावंश वाघेला वाघरोलावंश गुलवंश गुलवरवंश सोभटा भाटीया सीदा वांदा दाहिणमा कच्छवाह कणवाहा हूणवंश हरीयड शकट सिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल दधिपाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैंधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश डोडीयाणवंश मंकूआणा खइरवंश सीलणवंश बोडाणवंश दहीयावंश प्रमुख वहीयावंश प्रमुखवंश जाणिवा। अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष जाणिवा। जिम कलिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयइं। किसी ते ज्ञाति। श्रीश्रीमाली उसवाल वाघेरवाल डींडू पुष्करवाल डीसावाल मेडतवाल भाभू सूराणा छत्रवाल दोहिल सोनी पडवड पंडेरवाल पोरूआड गूजर मोढ नागर जालहरा पडाइता कपोल जांबू वायडा वाव दसउरा करहीया नागद्रहा मेवाडा भटेउरा कथरा नरसिंहउरा ह्रारल पंचमवंश सिरपंडला कमोह रोतकी अगरवाल जिणाणी वांभ घांघ पाल्हाउत उचित वगडू अहिछत्रवाल श्रीगउड वाल्मीकि टाकी तेलटा तिलउरा अठवग्री लाडीसाखा बधनउरा सुहडवाल वीघू पद्मावती नीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा चित्रउडा गोला गहिवरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कडकोलापुरी रायकवाल पेसीया पेरूया गोमित्री नाराषणा डींडू गजउडा गोपरूआ अजयमेरा कंडोलीया कायत्थ सगउडा सीहउरा जेसवाल नादेवा जाइलवालचावेल। एणि सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वषाणीइ सुश्रावककुल। जीणि सुश्रावकनणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरीयइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ; पाणीं भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ; अथाणूं न रापीइ, अणंतकाई न चापीई; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-सुतीर्थि वित्त वावी लाभ लीजइ; आलोअण लेई पाप घोईइ, परिग्रहप्रमाणि पुण्यवंत होईइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार भरीइ; वावीस अभक्ष बत्रीस अणंत काय टालीयइ, आठमि चऊदसि पूनिम अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ। इसु श्रावकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल। उत्तिमकुलि लाधइ हुंतइ गृहस्थरहइं जय हुइ। कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग।

किसी ते कुकलत्र। जे चालती फउयछि, साची अलछि; आत्मकुटुंबभंजकि, परचित्तरंजकि; कपटविषइ पटिष्ट, अतिहिं अनिष्ट; बोलति छउड ऊमारइ, रीसइं छोरू मारइ; जीभइं अव छोलइ, अलविइं असंबद्ध बोलइं, वगाई करती

गोदहु गिलइ, घरि विश्रोड करी बाहिरि मिलइ, बोलावी विसइं हाथ ऊछलइ; फूफूती सापिणी, चालती चीत्रिणी; पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल। घणूं किसिउं कहीयइ। जिसी मिरीतणी ऊगटि, जिसिउं चालतउं पलेवणउं; जिसी दावज्वरतणी वहिनि, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पापकर्मि भारी। अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र। किसी ते। सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवती सुजाणि मधुरवाणि देवगुरुनणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त; सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य। अनइ जं शरीरि संपजइं लीलावंतपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण। जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ; सहजि विचक्षण, शरीरि बत्रीसलक्षण; अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्रसमान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आदर्शनलसमान कपोलयुगल; मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल; प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड। अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइं, मंत्रविद्या सधरपणइं साधइं; राजसभा बुद्धिवंत भणी वइसइं, रणक्षेत्रि पहिलां पइसइं; व्यापारकला केलवइं, धूर्त्तपणइं भलाखइं भोलवइं; जलमार्गि स्थलमार्गि आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भुजाबलि भमइं; जोगीपूठिइं लोभि लुब्धा लागइं, एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा दैव भणी वइरागरि घाउ घालइं; एकि हल फेटइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं; रसरसायणि रसकूपिका पडइं, एकि कलकलतइं समुद्रि पडइं; एकि त्रिविसइं माहि मियाण पइसइं, पिरायां कवित्व वखाणइं; कष्ट सहइं विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतइ हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीनणा विलास सकल।

हिव जं संपजइ सत्पुत्र, एह पुण्यतणउं चरित्र। एकइं तणइ एकि कुपुत्र हुइं जे बालपणि पालीइं लालीइं पणि जेतलइं यौवनभरि जाइं, तेतलइं मार्गान्तराश्रय थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, वडांनणां वचन निरणइं; मावीत्रनामां मीठा बोल भणइं, अहंकारि हणाहणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरमइं, कुव्यसनि निरमइं, पिराइं भूमि भ्रमइं; बाहुए वचनि उल्लमइं, कूडी वात करतां मानां धमइं; स्थानकी परि भमइं, अपराध्इं रमइं; पापकरी उमगइं, धर्मतणां लिपइ न धसइं; इस्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणूं

प्रमाण। अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइं संत सौभाग्यवंत, गरूआंप्रति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विषइ तत्पर, सुपुत्र पामीयइ जइ पोतइ पुण्यतणउ भर।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम। एक जीव सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति; मुहि मींठउ, चित्ति विगठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई; उपगारि केललइं न लीजइं, परप्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किसिइं लेखइ; सजन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ वानइ, देवगुरु अपमानइं; मूर्त्तिवंत अधर्म, वोलइ पिराया मर्म। जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणिवउं दुर्जन। एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइं, परमर्म हीयडइं धरइं; परदोष न प्रकासइं, असत्य न वोलइं हासइं; उन्मार्गि न चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मतउ न हालइं; नवे क्षेत्रे वेवइं धन, जिसिउ वावनुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीयइ सज्जन। संपजइ सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण। इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊवेषी; आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विषइ भावनासहित लाभ लेवउ। जेह कारणि इसिउं कहीइ। जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय शोभइं हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशप्राग्भारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि; सरोवरि शोभइ कमलि, पुष्प शोभइ परिमलि; मुप शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि, रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ तूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ भावना। एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेवउ। जिसिइं पुण्यप्रभावि सकलश्रेयकल्याण संपजइं।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रुली, परमेश्वरप्रतिइं बिहुं नरेश्वरि वीनती कीधी वली। हे जगन्नाथ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; तुझ टाली अपरि संदेह न भाजइं, संदेहभंजन विरुद तूंरहइं छाजइं। जेहि कारणि इसिउं कहीइं। समुद्रि उलंघीयइ भारंडि न मसइ, गजेंद्र विडारीयइ सीहि न ससइं; विषधरतणां विष जीरविषइं गुरुडि न कूकडइं, वृक्षसिहरतणां फल लीजइं तडचडइं न ढूंकडइं; संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउति न दयामणइ, भंडारीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अलपामणइं; पर्वततणां टोल ताणीयइं

नदीतणइ पूरि न वाहलइं, रायतणइ मनि रंगि रहावीयइं मधुस्वरि न पाहलइं; समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भांजियइ गजेंद्रि न वाकरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मद्धुस्थि; सकलसंदेह भांजीइ केवलीए न छद्मस्थि। तेह कारणि तउं हे स्वामिन् अम्हारा संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीठामि, एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए सवे संदेह अपहरि । इसी वीनती सांभली जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ। हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ हूउं अनुभव । ईणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर; प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविषइ सस्पृह; जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेलहत्थ वरवीर राउत डवइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार कुंभकार सींगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राजलोक वसइं, सर्वज्ञभवन देषी मन उल्लसइ। जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर, महामनोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर। तेहतणइ सागर अनइ पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, बि पुत्र। ते बेउ नर्मदानदीमाहि बेडी चडी मत्स्य विणासि पापप्रवर्त्तिया। तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीहम तिइं बोलिउ। रे दुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां हुसिइ संताप, नहीं छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ बाप। ए वात सांभली बेउ कुमर भयभ्रांत हूआ । तिसिइ नदीनइ कंठि एक दीठउ मुनीश्वर। तेहे बेडीतउ ऊतरी नमस्करिउ। वच्छउ तुम्हे म्हारा पौत्र, हूं पालउं चारित्र; तुम्हे करउ अक्षत्र । तीणइं सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं त्रूटइं कान, तीणइं उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं जीणइं पामीइ पगि पगि अपमान; तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं वाधइ मिथ्यात्ववाद, तीणइं घरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइ ऊपजइ विषवाद, तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं कीजइं जेहमाहि फूफूइ साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु संताप, तीणइं रामतिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप। वत्स मुझ भक्त व्यंनरि, मत्स्यमुखि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लगाडिया। हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ। तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कही, तेहे विहुं ग्रही। आव्या आपणइ घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि; दिइं दान, धरइं अरिहंतनणउं ध्यान; करइ सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद,

पटावइं सत्त्रूकारि साद; पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; करइं सामायक सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, वे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार। अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजां तीह विहुंहुइं राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञीसहित चारित्र लीधउं। निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि वलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि थईनइ तेह जि अणसरिउ। हिव पूरणनणइ पद्मश्री इसिइ नामि हुई कलत्र, जे महासच्चरित्र। ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, सोख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि। सगरतणउ जीव हुउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हूउ पृथ्वीचंद्र। पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी अवतरी। पूर्वतणउं धर्म फलिउ, सर्वसंयोग मिलिउ।

विहुं नरेश्वरि ईणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं। हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेहतु कीजइ छेह। जिसिइ समइ रत्नमंजरी सरोवरतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि वइठी, कुणरहइं देवातणी चिंता पइठी; तिसिइ अवसरि, वलींद्रदानवेश्वरि; ज्ञानिप्रमाणि, पूर्व जाणी, पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त रापिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी। छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी। राजा पृथ्वीचंद्रहुइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासान्निध्य कीधउं। अनइ स्वयंवरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाती, तेतलइं वलींद्रतणी इंद्राणी ते मेल्हिउ निपाती। छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति प्रकट करी दापी; उहे दिपाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह। अहो पृथ्वीचंद्र ताहरूं विशेषवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य। जेह कारणि गृहस्थपणेपि हाथियइं चडतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान। सोमदेवहुइं त्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति। ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम नीपजाव्या।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणउ पुरिठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या। सकल लोक हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण त्रूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; घसमसाटि जोइया घाटउ राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ। रत्नमंजरी पट्टराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगत्रयी व्यापी। राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महीवर इसिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ । ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर विवेकबंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुषसिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्रहइं राज्य करतां नवलाष नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहठाणपुरि पाटणिऊपरि चडी आविउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वीचंद्ररहइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी । राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ । रे आत्मन् हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं । कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि, जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह—हुइं पर्वतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया; जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आव्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी नमिउ; वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेष दीधउ, राजऋषि लीधउ; हंसजमलि, वइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश । एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोकहुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं । पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, वली; वली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेवउ । जिसिइं पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंघहुइं श्रेयकल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं ।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा ।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

यावन्मेरुर्मही यावत् यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।
वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात् ॥

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे पञ्चम उल्लासः ।



खरतरपट्टावलीषट्पदानि

जिण दिट्ठइ आनंदु चडइ अइरहसु चउग्गुणु ।
जिण दिट्ठइ फडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु ।
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु पुव्वुक्किउ नासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दालिद्दु पणासइ ।
जिण दिट्ठइ हुइ धम्ममइ अबुहहु कांइ उइक्खहहु ।
पहु नवफणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहहु ॥ १ ॥
मयण म करि धरि धणुहु बाण पुणि पंचम पयडहि ।
रूविण पिम्मपयावि बंभहरिहरु मन विणडहि ।
रूउ पिम्मु ता बाण मयण तायरिसहि धणहरु ।
नवफणमंडिउसीस जाव न हु पिक्खिउ जिणवरु ।
जइ पडिहसि पासजिणिंदवसि नाणवंत णिम्मलरयण ।
तसु धणुहरु बाण न रूप नहि न भुयप्पिम्मु हुइ हइमयण ॥ २ ॥
नवफणिपासजिणिंदु गढिउ अन्नह्रि जु दिट्ठउ ।
अजयमेरि संभरिनरिंदु ता नियमनि तुट्ठउ ।
कंचणमउ अह कलसु सिहरि साणउ रज्ञावियउ ।
जणु सुतरणि तउ तवइ तिव्वु आयासिसउन्नउ ।
जा वुज्झुमिसिण ढक्कारविण कर उज्झिवि फरहरइ धर ।
जिणदत्तसूरि धर धवलि जसि ता पसिद्धि सुरभवणि कय ॥ ३ ॥
देवसूरिपहु नेमिचंदु बहुगुणिहि पसिद्धउ ।
उज्जोयणु तह वद्धमाणु खरतरवर लद्धउ ।
सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।
अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।
जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि तहि जिण उजोइउ जिणचलणु ।
सावइहि परिक्खिवि परिवरिउ मुह्नि महग्घउ जिम रयणु ॥ ४ ॥
धणुहर धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।
सोहग्गिण गुडगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।
तियड अ तेअ अग्गलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय ।
रइरणरहसुचलिय गरुयमाणिण मइ अन्निय ।
करि कडयड मुणिमहिवइहि रहिअ रूअ संपुन्नभय ।
जिणदत्तसूरिसीहह भयण मयणकरटिघड विहडि गय ॥ ५ ॥
तवनलफ्फभीसणह धम्मधीरिमसुविसालह ।

संजमसिरभासुरह दुसहवयदाढकरालह ।
नाणनयणदारुणह नियमनिसनहरसमिद्धह ।
कम्मकोवणिठ्ठुरह विमलपुच्छपसिद्धह ।
उपसमणउपरधरणुव्विसह गुणगुंजारवजीहह ।
जिणदत्तसूरि अणुसरह पय पावकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥
जरजलवहलरउद लोहलहरिहिं गज्जंतउ ।
मोहमच्छउच्छलिउ कोवकल्लोल वहंतउ ।
मयमयरिहि परिवरिउ वंचवहुवेलदुसंचरु ।
गंथगरुयगंभीरु असुहआवत्तभयंकरु ।
संसारसमुद्दु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिवि सुदरियइ ।
जिणदत्तसूरिउवएसु सुणि त परतरंडइ सुतरियइ ॥ ७ ॥
सावय किवि कोयलिय केवि खरहरिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ लक्खियहिं मूढ नियवित्तिविरुद्धिय ।
दरहिं न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्पर जुज्झहिं ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किंवि पहंतरु वुज्झहिं ।
जिणदत्तसूरि जिन नमहिं पयपउम सच्चु नियमणि वहहिं ।
संसारउयहिं दुत्तरि पडिय जि न हु तरंडइ चडि तरहिं ॥ ८ ॥
तवसंजमसयनियमि धम्मकम्मिण वावरियउ ।
लोहकोहमयमोह तह व सप्पिहिं परिहरियउ ।
विसमछंदलक्खणिण सत्थअत्थत्थविसालह ।
जिणवल्लहगुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ।
अन्निहिवि गुणिहिं संपुन्नतणु दीणदुहियउद्धरणु धर ।
जिणदत्तसूरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥
वक्खाणियइ परमतत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आराहियइ त वीरनाह कइपल्हु पयासइ ।
धम्मु त दयसंजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।
चाउ त अणखंडियउ जु वंदिण सलहिज्जइ ।
जइ ठाइ त उत्तिमसुणिवरह पवरवसहिहो चउर नर ।
तिम सुगुरुसिरोमणि सूरिवर खरतरसिरिजिणदत्त वर ॥ १० ॥

इति श्रीपट्टावलीपद्यपद्यानि । संवत् ११७० वर्षे अश्वयुगायपक्षे ११ तिथौ श्रीमद्धारानगर्यां श्रीखरतरगच्छे विधिमार्गप्रकाशिवसतिवासिश्रीजिणदत्तसूरीणां शिष्येण जिनरक्षितसाधुना लिखितानि ।

APPENDIX 1

श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

अयं क्षुब्धक्षीरार्णवनवसुधासन्निभचिता-
नुपाकर्ण्याकर्णानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।
समस्तध्वस्तैना जनितजिनयात्रापरिकरो
ऽकरोत्सुस्थं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥
श्लाघ्योऽतिसङ्घसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्तः ।
सम्भाषणाद्भुतसुधाभवचाश्चचार वाचालवारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥
सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रद्धूलीपटैर्झटिति कुट्टिमतामटद्भिः ।
मार्गे निरुद्धखरदीधितिधामसङ्घे सङ्घस्तदा भवनगर्भ इवावभासे ॥ ३ ॥
नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुभ्रिमा-
काशः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थे निवासानसौ ।
चक्रे चारुमना जिनार्चनविधिं तद्ब्रह्मचर्यव्रता-
रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्मयः ॥ ४ ॥
पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हततमःकदम्बया ।
एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समधिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥
ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुरोर्त्तिभिर्मर्त्यमुख्यैः
पल्लसमावेशिकविधितता व्योम्नि पश्यन्पताकाः ।
मूर्त्ताः कीर्त्तीरयममनुत प्रौढनृत्तमपञ्च-
व्यापल्लीलाद्भुतभुजलतावर्णनीयाः स्वकीयाः ॥ ६ ॥
अध्यावास्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीसङ्घमंहस्तमः-
स्तोमादित्यमुपत्यकापरिसरे श्रीमल्लदेवानुजः ।
श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्कण्ठोल्लसन्मानस-
स्त्रस्यन्मोहमथारुरोह विमलक्षोणीधरं धीरधीः ॥ ७ ॥
तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्त्तण्डचण्डद्युति-
क्लान्तं सङ्घजनं निरीक्ष्य निखिलं मान्द्यीभवन्मानसः ।
सैषो माद्यदमन्दमेदुरतरश्लाघानिधिः शुद्धधीः
मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौलौ किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं
स्नानं कृत्वा कलशलुठितैः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।
चक्रे चञ्चन्मृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-
वर्ण्यैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥
मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-
क्षोपप्रेङ्खितधूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।
यावद्रूढमहाध्वजप्रणयिनी स्वर्लोककल्लोलिनी
मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥
इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां
सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिक्यमष्टाह्निकाम् ।
विघ्नोन्मर्दिकपर्दियक्षविहितप्रत्यक्षसान्निध्यतः
श्रद्धावर्द्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥
अजाहराख्ये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।
अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमम्बाम् ॥ १२ ॥
देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।
अर्चयन्नुचितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलद्युतिम् ॥ १३ ॥
प्रीतस्फीतरुचिश्चिराय नयनैर्वामभ्रुवां वामन-
स्थल्यामेष मनोविनोदजननं कृत्सप्रवेशं पुरि ।
धीमान्निर्मलधर्मनिर्मितिसमुल्लासेन विस्मापयन्
दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सङ्घेन सङ्घेश्वरम् ॥ १४ ॥ (विशेषकम्)
गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।
चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥
जिनमज्जनसज्जसज्जनं कलशान्यस्ततदम्बुकुङ्कुमम् ।
अथ सङ्घमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपोद्यमम् ॥ १६ ॥
संरम्भसङ्घटितसङ्घजनौघदृष्टामष्टाह्निकामयमिहापि कृती वितेने ।
सद्भूतभावभरभासुरचित्तवृत्तिरुद्वृत्तकीर्त्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥
लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीशपाणिवासप्रवासितकुवासनभासमानः ।
सम्यक्त्वरोपणकृते विततान नन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥
दानैरानन्द्य वन्दिव्रजमसृजदनिर्वारमाहारदानं
मानी सम्मान्य साधूनपुपदपि मुखोद्घाटकर्मादिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानर्चयित्वाथमुचै-
रम्बाप्रद्युम्नशाम्बानिति कृतसुकृतः पर्वतादुत्ततार ॥ १९ ॥
असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।
अबाधि सा धिक्करणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥२०॥
पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन सान्निध्यकृता कृतीन्दुः ।
स्वकीर्त्तिवन्नव्यनदीर्ददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥२१॥
इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्त्तिप्रियः प्रयाणैरतिवाह्य वीथीम् ।
आनन्दनिस्यन्दविधिर्विधिज्ञः पुरं प्रपेदे धवलक्ककं सः ॥ २२ ॥
समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरधवल-
प्रभुः प्रत्युद्यातस्तदनु सदनं प्राप्य सुकृती ।
युतः सङ्घेनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-
स्ततः सङ्घस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥
अथ प्रसादाद्भर्त्तुः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।
मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥
भक्त्याखण्डलमण्डपं नवनवश्रीकेलिपर्यङ्किका-
वर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुञ्जये ।
यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाम्बिकालोकन-
प्रद्युम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासिवान् ॥ २५ ॥
गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।
तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥
शातकुम्भमयान् कुम्भान्पञ्च तत्र न्यवेशयत् ।
पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥
सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।
श्रीकीर्त्तिकन्दयोर्व्यक्तनाङ्कुरसोदरम् ॥ २८ ॥
कुन्देन्दुसुन्दरग्रावपावनं तोरणद्वयम् ।
इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशायैव निर्ममे ॥ २९ ॥
अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।
श्रीवीरधवलक्ष्मापाद्दापयामास शासने ॥ ३० ॥
श्रीपालिताख्ये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितार्कतापम् ।
तडागमागःक्षयहेतुरेतच्चकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केषां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-
त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्थसन्तापपापः ।
साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितमुखं लोलरोलम्बशब्दै-
रब्देव्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥
पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।
स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥
प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।
ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥
किञ्चैतन्मन्दिरद्वारि तोरणं तत्र पोरणम् ।
शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥
लोकैः पाञ्चालिकानृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।
इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥
प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसूनुप्रभो-
स्तस्याग्रस्थितिरेककुण्डलकुलां धत्तेतरां तोरणः ।
श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नीलाम्बरालम्बिता-
मत्युच्चैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु श्रिये ॥ ३७ ॥
अत्र यात्रिकलोकानां विशतां व्रजतामपि ।
सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥
यत्पूर्वैर्न निराकृतं सुकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-
र्द्वैतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।
आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा
श्रीनाभेयविभुप्रसादवशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥
तस्यानुजश्च जगति प्रथितः पृथिव्यामव्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।
श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥
समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा
यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।
क्षणेन क्षीणायामितरजनदानोदकनतौ
दयावेलाहेलाद्विगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥
वस्त्रापथस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामग्रासनोद्धारात् ।
येनापनीय नवकरमनवकरः कारयाञ्चक्रे ॥ ४२ ॥

पुण्योल्लासविलासलालसधिया येनात्र शत्रुञ्जये
श्रीनन्दीश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमासूत्रितम् ।
एतच्चानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासञ्चय-
व्यानद्धोद्धतवन्यसुन्दरपयःकल्लोललुप्तक्रमम् ॥ ४३ ॥
स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते
सुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।
विकस्वरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते
यदत्र सरिदङ्गनावदनबिम्बताडम्बरः ॥ ४४ ॥
शत्रुञ्जये यः सरसीं निवेश्य श्रीरैवताद्रौ च जडाधराणाम् ।
ग्रामस्य दानेन करं निवार्य सङ्घस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥
क्षोणीपीठमियद्रजःकणमियत्पानीयबिन्दुः पतिः
सिन्धूनामियदङ्गुलं वियदियत्काला च कालस्थितिः ।
इत्थं तथ्यमवैति यस्त्रिभुवने श्रीवस्तुपालस्य तां
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥
एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।
सङ्घाधीश्वरचरितं हृतदुरितं कुरुत हृदि सन्तः ॥ ४७ ॥
श्रीनागेन्द्रमुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रभु-
र्जज्ञे क्षान्तिसुधानिधानकलशः पुण्याब्धिचन्द्रोदयः ।
सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः
सिद्धान्तोऽप्यविभेद्यतर्कविषमं यं दुर्गमाशिश्रिये ॥ ४८ ॥
तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्राप्तोदयः कोऽप्यभू-
द्भास्वानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रभुः ।
प्रत्युज्जीवितदर्शनद्युतिलसद्भव्यौघपद्माकरं
तेजश्छन्नदिगम्बरं विजयते तद्यस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥
आनन्दसूरिरिति तस्य बभूव शिष्यः
पूर्वापरः शमधनोऽमरचन्द्रसूरिः ।
धर्मद्विपस्य दशनाविव पापवृक्ष-
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदौ विभातः ॥ ५० ॥
अस्ताघवाङ्मयपयोनिधिमन्दराद्रि-
मुद्रापुषोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद
यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥
सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मसूस्तत्पदे
पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।
भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिरायस्मिन्नवस्थानतः
सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥
श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पट्टे जयति जलधरध्वानः ।
यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवथुविभवभिदः ॥ ५३ ॥
पश्चासराह्ववनराजविहारतीर्थे
प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।
साक्षादधःकृतभवा तदिनीव यस्य
व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥
भवोद्भटवनावनीविकटकर्मवंशावलि-
च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।
असिश्रियमशिश्रियद्विततभीव्रतं यद्व्रतं
क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥
शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणनिधिं रम्यदारण्यदाव-
ज्वालाजिह्वालदीप्तिर्भविकजनविपद्व्यह्विवादैः कपर्दी ।
देवी चाम्बा निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-
मेयश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोद्दामनादम् ॥ ५६ ॥
नाभूवन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के
किं न क्वापि कदापि सद्गुपुरुषः श्रीवस्तुपालोपमः ।
यत्रेत्थं महरन्नहर्निशमहो सर्वाभिसारोङ्कुरो
येनायं विजितः कलिर्विदधता तीर्थेशयात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥
तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-
द्वाचास्माकममोघया किल यथाध्यक्षीकृतं सर्वथा ।
त्वं श्रीमदुदयप्रभ प्रथय तत् पीयूषसर्वङ्कषैः
श्लोकैर्येस्तव भारती समभव·······यते ॥ ५८ ॥
इत्युक्त्वा गतयोस्तयोरथ पथो दृष्टेः प्रभातक्षणे
विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रीभवन्मौलिना ।

प्राप्यादेशममुं प्रभोर्विरचयामासे समासेदुषा
प्रागल्भीमुदयप्रभेण चरितं निस्यन्दरूपं गिराम् ॥ ५९ ॥
किञ्च श्रीमलधारिगच्छजलधिप्रोल्लासशीतद्युते-
स्तस्यश्रीनरचन्द्रसूरिसुगुरोर्माहात्म्यमाशास्महे ।
यत्पाणिस्मितपद्मवासविकसत्किञ्जल्कसंवासिताः
सन्तः सन्ततमाश्रिताः किल मया भृङ्गयेव भान्ति क्षितौ ॥ ६० ॥
श्रीधर्माभ्युदयाह्वयेऽत्र चरिते श्रीसङ्घभर्तुर्मया
दध्रे काव्यदलानि सङ्घटयितुं कर्मान्तिकत्वं परम् ।
किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य चक्रे जग-
त्पावित्र्यक्षमपादपङ्कजरजःपुञ्जैः प्रतिष्ठास्पदम् ॥ ६१ ॥
नित्यं व्योमनि नीलनीरजरुचौ यावत्त्विषामीश्वरो
दिक्पालावलिबन्धुरे कुवलये यावच्च हेमाचलः ।
हृत्पद्मे विदुषामिदं सुचरितं तावन्नवाविर्भव-
त्सौरभ्यप्रसरं चिरं कलयतात् किञ्जल्कलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमदुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्माभ्युदयनाम्नि श्रीसङ्घपतिचरिते लक्ष्म्यङ्के महाकाव्ये श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रोत्सववर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ।

मुक्तेर्मार्गे यदेतद्विरचितमुचितं सङ्घभर्तुश्चरित्रं
सत्रं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।
अस्मिन्सौरभ्यगर्भामसमरसवतीं सत्कथां पान्थसार्थाः
प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥
श्रीशारदैकसदनं हृदयालवः के नो सन्ति हन्त सकलासु कलासु निष्णाः ।
तादृक्परस्य ददृशे सुकवित्वतत्त्वबोधाय बुद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥
नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकवश्यं
लेभे सद्योगसिद्धेः फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।
आकल्पस्थायि धर्माभ्युदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं
विश्वस्यानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

APPENDIX II.

रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिउं रेवयगिरीसकप्पंमि।
सिरिवइरसीसभणिअं जहा य पालित्तएणं च ॥ १ ॥

छत्तसिलाइसमीवे सिलासणे दिक्खं पडिवन्नो नेमी, सहसंबवणे केवलनाणं, लक्खारामे देसणा, अवलोअणं उड्ढसिहरे निव्वाणं। रेवयमेहलाए कण्हो तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसामिणी अंबादेविं च कारेइ। इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नबलाणयं रूप्पमयं चेईअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अवलोअणसिहरं बलाणयमंडवे संबो एयाइं कारेइ। सिद्धविणायगो पडिहारो; तप्पडिरूवं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण ठाविअं। तहा सत्त जायवा दामोयराणुरूवा कालमेह १ मेहनाद २ गिरिविदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिव्वतवेणं कीडणेणं खित्तवाला उववन्ना। तत्थ य मेहनादो सम्मदिट्ठी नेमिपयभत्तिजुत्तो चिट्ठइ। गिरिविदारणेणं कंचणबलाणयंमि पंच उद्धारा विउव्विआ। तत्थेगं अंबापुरओ उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा। तत्थ य उववासतिगेणं बलिविहाणेणं सिलं उप्पाडिऊण मज्झे गिरिविदारणपडिमा। तत्थ य कमपण्णासं गए बलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारूवं नमिऊण, उत्तरदिसाए पण्णासकमं बारीतिगं। पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं पविसिऊण, उपवासपंचगं भमररूवं दारुणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ अहोमुहं पविसिऊण, बलाणयमंडवे इंदादेसेण धणयजक्ककारियं अंबादेविं पूइऊण, सुवण्णजालीए ठायव्वं। तत्थट्ठिएणं सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो वंदिअव्वो। बीअवारीए एगं पायं पइत्ता, सयंवरवावीए अहो कमचालीसं गमित्ता, तत्थ णं मज्झवारीए कमसत्तसएहिं कूवो। तत्थ वरहंसट्ठिअत्तेण इहावि मूलनायगो वंदेयव्वो। तइअवारीए मूलदुवारपवेसो अंबाएसेण न अन्नहा। एवं कंचणबलाणयमग्गो। तत्थ य अंबापुरओ हत्थवीसाए विवरं। तत्थ य अंबाएसेण उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गयपंचगं अहो रसकूविआ अमावसाए अमावसाए उग्घडइ। तत्थ य उववासतिगं काऊण

अंबाएसेण धूयणेण वलिविहाणेणं गिण्हियव्वं । तहा य जुण्णकूडे उववासतिगं काऊण सरलमग्गेण बलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य चिंतिअसिद्धी दिनमेगं ठाएयव्वं । जइ तहा पचक्खो हवइ तहा रायमईगुहाए कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तयवल्ली राइमईए पडिमा रयणमया अंबाया रूप्पमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तह छत्तसिलाघंटसिलाकोडिसिलातिगं पण्णत्तं। छत्तसिलं मज्झं मज्झेणं कणयवल्ली सहस्संबवणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं लक्खारामे बावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा पण्णत्ता। कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए नईए सड्ढकमसयतिगेण उत्तरदिसाए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए णहवणं काऊण, बिए उववासपओएहिं दुवारमुग्घाडेइ। मज्झे पढमदुवारे सुवण्णखाणी, दुइअदुवारे रयणखाणी, संघहेउं अंबाए विउव्विआ। तत्थ पण कण्हभंडारो। अण्णो दामोदरसमीवे। अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पण्णत्ता।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी।
सिरिवइरोवक्खायं संघसमुद्धरणकज्जंमि॥
सस्सकडाहं मज्झे गिण्हित्ता कोडिबिंदुसंयोगे।
घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी।
विज्जापाहुडदेसाओ रेवयकप्पसंखेवो सम्मत्तो॥

APPENDIX III.

श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।
श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥
स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां बिभर्ति भुवनेष्वसौ ।
यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥
शृङ्गारयन्ति खङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।
श्रीपार्श्वस्तेजलपुरं भूषितैतदुपत्यकम् ॥ ३ ॥
योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।
पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥
सौवर्णदण्डकलशामलसारकशोभितम् ।
चारु चैत्यं चकास्त्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥
श्रीशिवासूनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।
स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥
प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।
बन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥
अत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।
जगज्जनहितैषी स पर्यणैषीच निर्वृतिम् ॥ ८ ॥
अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।
श्रीवस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥
जिनेन्द्रबिम्बपूर्णेन्द्रमण्डपस्था जना इह ।
श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥
गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।
सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नपनक्षमैः ॥ ११ ॥
शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।
ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दीश्वरस्तथा ॥ १२ ॥
सिंहयाना हेमवर्णा सिद्धबुद्धसुतान्विता ।
कम्राम्रलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सङ्घविघ्नहृत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्पद्मपूतमवलोकननामकम् ।
विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥
शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।
प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥
नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।
किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चकैः ॥ १६ ॥
सहस्राम्रवणं लक्षारामोऽन्येपि वनव्रजाः ।
मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिसुभगा इह ॥ १७ ॥
न स वृक्षो न सा वल्ली न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।
नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतिह्यविदो विदुः ॥ १८ ॥
राजीमती गुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते ।
रथनेमिर्यथोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥
पूजास्नपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।
सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥
दिग्भ्रमावपि योऽत्राद्रौ क्वाप्यमार्गेऽपि सञ्चरन् ।
सोऽपि पश्यति चैत्यस्था जिनार्चाः स्नपितार्चिताः ॥ २१ ॥
काश्मीरागतरत्नेन कूष्माण्ड्यादेशतोऽत्र च ।
लेप्यबिम्बास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥
नदीनिर्झरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि ।
विदाङ्कुरोत्यत्र सङ्ख्याः सङ्ख्यावानपि कः खलु ॥ २३ ॥
आसेचनकरूपाय महातीर्थाय तायिने ।
चैत्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैवताद्रये ॥ २४ ॥
स्तुतो मयेति सूरीन्द्रवर्णितात्तूजिनप्रभः ।
गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु वः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्जयन्तस्तवः ॥

APPENDIX VI.

श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरट्ठाविसए उज्जिंतो नाम पव्वओ रम्मो ।
तस्सिहरे आरुहिउं भत्तीए नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥
अंबाइअं च देविं ण्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं ।
पूइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥
गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणकवाडविअडकूवेहिं ।
जोएह खत्तवायं जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥
कंदप्पदप्पकप्परणकुणइविद्दवणनेमिनाहस्स ।
निव्वाणसिला नामेण अत्थि भुवणंमि विक्खाया ॥ ४ ॥
तस्स य उत्तरपासे दसधणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।
दारंमि तस्स लिंगं अवयाणे धणुह चत्तारि ॥ ५ ॥
तस्स पसुमुत्तगंधो अत्थि रसोपलसएण सयतंबं ।
विंधेहि कुणइ तारं ससिकुंदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥
पुव्वदिसाए धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जागवई ।
पाहाणमया दाहिणदिसागए बारसधणूहिं ॥ ७ ॥
दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो ।
विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥
उज्जिंते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।
दावेइ अंगुलीए फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥
सक्कावयार उज्जिंतगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।
सोवाणपंतिआए पारेवयवण्णिया पुढवी ॥ १० ॥
पंचगव्वेण बद्धा पिंडीधमिआ करेइ वरतारं ।
फेडइ दरिद्दवाहिं उत्तारइ दुक्कंतारं ॥ ११ ॥
सिहरे विसालसिंगे दीसंते पायकुट्टिमा जत्थ ।
तस्सासन्ने सिहरे कव्वडहडपासहो तारं ॥ १२ ॥
उज्जिंतरेवयवणे तत्थ य सुद्दारवानरो अत्थि ।
सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥
हत्थसएण पविट्ठो दिक्खइ सोवण्णवण्णिआ रुक्खा ।

नीलरसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूणं ॥ १४ ॥
तं गहिऊण निअत्तो हणुवंतं छिवइ वामपाएण ।
सो ढक्कइ वरदारं जेण न जाणइ जणो को वि ॥ १५ ॥
उज्जितसिहरउवरिं कोहंडिहरं खु नाम विक्खायं ।
अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥
तं अयसितिल्लमीसं धंमइ पडिवायवंगिअं वंगं ।
दोगच्चवाहिहरणं परितुट्ठा अंबिआ जस्स ॥ १७ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाइ तत्थ पाहाणा ।
तो पिंडि धमिअ संते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥
उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवण्णिआ पुढवी ।
वोकडयमुत्तपिंडी खइरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥
नाणसिलाकयपुढवी पिंडीबद्धा य पंचगव्वेण ।
दढपाए वसइ रसो सहस्सवेही हवइ हेमं ॥ २० ॥
गिरिवरमासन्नठिअं आणीयं तिलविसारणं नाम ।
सिलवड्डगादपोहे वे लक्खा तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥
सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लट्ठुअपहाणा ।
पडिवाएण य सुचं करिंति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥
विल्लक्खयंमि नयरे मउहहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।
तस्स य मज्झंमि ठिओ गणवइरसकुंडओ उवरिं ॥ २३ ॥
उववासी कयपूओ गणवइओ चल्लिऊण पवररसो ।
पामापेवी अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥
सहसासवं ति तित्थं करंजकक्केण मणहरं सम्मं ।
तत्थ य तुरयायारा पाहाणा तेमि दो भाया ॥ २५ ॥
इक्को पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंधमूसाए ।
धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुक्खकंतारं ॥ २६ ॥
अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।
सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुवं वरं हेमं ॥ २७ ॥
गिरिपज्जुन्नयवारे अंबिअआसमपयं च नामेण ।
तत्थ वि पीआ पुहवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥
नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्टिआ पीआ ।

साहामिअलेवेणं छायामुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥
उज्जिंतपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवयरिउं ।
तिण्णि धणूसयमित्ते पूईकरं जं विलं नाम ॥ ३० ॥
उग्घाडिउं विलं दिक्खिऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।
दंडंतराणि बारस दिव्वरसो जंबुफलसरिसो ॥ ३१ ॥
जउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाएण विंधए तारं ।
हेमं करइ अवस्सं हट्टं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥
कोहंडिभवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।
दीसइ अ तत्थ पडिमा सेलमया वासुदेवस्स ॥ ३३ ॥
तस्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पच्चई पडिमा ।
अवराहमुहरअंगुट्ठिआइ सा दावए विवरं ॥ ३४ ॥
नवधणुहाइं पविट्ठो दिक्खइ कूडाइं दाहिणुत्तरओ ।
हरिआलल्लक्खवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥
उज्जिंते नाणसिला विक्खाया तत्थ अत्थि पाहाणं ।
ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥
तस्स य दाहिणभाए दसधणुभूमीइ हिंगुलुयवण्णो ।
अत्थि रसो सयवेही विंधइ सुचं न संदेहो ॥ ३७ ॥
उसहरिसहाइकुंडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।
गयवरलिंडाकिण्णा मज्झे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥
जिणभवणदाहिणेणं नउई धणुहेहिं भूमिजलुअयरी ।
तिरिमणुअरत्तविद्धा पडियाए तंवए हेमं ॥ ३९ ॥
वेगवई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।
सुवस्स पंचवेहं सवंति घमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥
इय उज्जयंतकप्पं अविअप्पं जो करेइ जिणभत्तो ।
कोहंडिकयपणामो सो पावइ इच्छिअं सुक्खं ॥ ४१ ॥

श्रीउज्जयतमहातीर्थकल्पः

APPENDIX V

रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरट्ठाविसए रेवयपव्वयरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उत्तुंगसिहरं अच्छइ। तत्थ किर पुव्विं भयवओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि। अन्नया उत्तरदिसाविभूसणकम्हीरदेसाओ अजियरयणनामाणो दुन्नि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया। तेहिं रहसवसाओ घणघुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं। गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाहपडिमा। तओ अईव अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पच्चक्खाओ। इक्कवीसउववासाणंतरं सयमागया भगवई अंबिआ देवी। उट्ठाविओ संघवई। तेण देविं दट्ठूण जयजयसद्दो कओ। तओ भणिअं देवीए इमं बिंबं गिण्हिसु परं पच्छा न पिच्छिअव्वं। तओ अजिअसंघाहिवइणा एगतंतुकड्ढिअं रयणमयं सिरिनेमिबिंबं कंचणबलाणए नीअं। पढमभवणस्स देहलीए आरोवित्ता अइहरिसभरनिब्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो। ठिअं तत्थेव बिंबं निच्चलं। देवीए कुसुमवुट्टी कया जयजयसद्दो अ कओ। एअं च बिंबं वइसाहपुन्निमाए अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहं ठविअं संघवइणा। न्हवणाइमहूसवं काउं अजिओ सबंधवो निअदेसं पत्तो। कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणिऊण झलहलंतमणिमयबिंबस्स कंती अंबिआदेवीए छाइआ। पुव्विं गुज्जरधराए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहिवो ठाविओ। तेण य अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे काराविअं। मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवण्णं आमलसारं कारिअं। चालुक्कचक्किसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरट्ठदंडाहिवेण सिरिसिरिमालकुलुब्भवेण बारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ। तब्भाउणा धवलेण अंतराले पवा भराविआ। पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए लक्खारामो दीसइ। अणहिल्लवाडयपट्टणे य पोरवाडकुलमंडणा आसरायकुमरदेवितणया गुज्जरधराहिवइसिरिवीरधवलरज्जधुरंधरा वत्थुपालतेजपालनामधिज्जा दो भायरो मंतिवरा हुत्था। तत्थ तेजपालमंतिणा गिरनारतले निअनामंकिअं तेजलपुरं पवरगढमढपवामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं। तत्थ य जणयनामंकिअं आसरायविहारु त्ति पासनाहभवणं काराविअं। जणणीनामेणं च कुमरसरु त्ति सरोवरं निम्माविअं। तेजलपुरस्स पुव्वदिसाए उग्गसेणगढं

नाम दुग्गं जुगाइनाहप्पमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्जइ। तस्स य तिण्णि नामधिज्जाइं पसिद्धाइं। तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा ज्जुण्णदुग्गं ति वा। गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलड्डुअओवरिआपसुवाडयाइठाणाइं चिट्ठंति। उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो। गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ। कालमेहसमीवे चिराणुवत्ता संघस्स वोलाविआ। तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ। कमेण उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कवडिजक्खमरुदेविपासाया य काराविआ। तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं, इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ। एरावणगयपयमुद्दाअलंकिअं गइंदपयकुंडं अच्छइ। तत्थ अंगं पक्खालित्ता दुक्खाण जलंजलिं दिंति जत्तागयलोआ। छत्तसिलाकडणीए सहस्संबवणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपईवस्स सिवासमुद्दविजयनंदणस्स दिक्खानाणनिव्वाणकल्लाणयाइं संजाआइं। गिरिसिहरे चडित्ता अंबिआदेवीए भवणं दीसइ। तत्तो अवलोअणं सिहरं। तत्थट्ठिएहिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति। तओ पढमसिहरे संबकुमारो बीअसिहरे पज्जुण्णो। इत्थ पव्वए ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमयजिणबिंबाइं निचन्हविअचिआइं दीसंति। सुवण्णमेयणी अ अणेगधाउरसमेइणी दिप्पंती दीसइ। रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति। नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति। अणवरयपज्झरंतनिज्झरणाणं खलहलारावा य मत्तकोयलभमरझंकारा य सुचंति त्ति।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलवो इमो।
जिणप्पहमुणिंदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं॥

श्रीरैवतकल्पः समाप्तः

APPENDIX VI

अम्बिकादेवीकल्पः

सिरिउज्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।
कोहंडिदेविकप्पं लिहामि वुड्ढोवएसाओ ॥

अत्थि सुरट्ठाविसये धणकणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं । तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगमो वंभणो हुत्था । तस्स घरिणी अंबिणी नाम महग्घसीलालंकारभूसियसरीरा आसि । तेसिं विसयसुहमणुहवंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो बीओ बुद्ध त्ति । अन्नया समागए पिअरपक्खे भट्टसोमेणं निमंतिआ वंभणा सद्धदिणे । कत्थ वि ते वेयमुच्चारन्ति, कत्थ वि आढवन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिंति वइसदेवं च । सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कन्नमेअखीरखण्डपमुहा जेमणा । अंबिणीए अ सासुआ ण्हाणं काउं पयट्टा । तम्मि अवसरे एगो साहू मासोववास-पारणए भिक्खट्ठा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिब्भरपुलइअंगी उट्ठिआ अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिबहुमाणपुव्वं अन्नपाणेहिं भत्त-पाणेहिं । जाव गहिअभिक्खो साहू चलिओ ताव सासुआ वि ण्हाऊण रसवई-ठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा बहुआ । तीए जहट्ठिए वुत्ते अंबाडिआ सा अज्जूए । जहा पावे किमेयं तए कयं, अज्ज वि देवया न पूईआ अज्ज वि न भुंजाविआ विप्पा अज्ज वि न भरिआइं पिंडाइं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना । तउ तीए भणिओ सव्वो वि वइअरो सोमभट्टस्स । तेण संरुट्ठेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कालिआ गिहाओ । सा पडिभवदूमिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चडावित्ता चलिआ नयराओ बाहिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ । जाव सा अंसुजलपुन्नलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुक्कसरोवरं तिस्सा अणग्घेणं सीलमाहप्पेणं तक्खणं जलपूरिअं जायं । पाइआ दोन्नि सीअलं नीरं । तओ छुहिएहिं भोअणं मग्गिआ बालएहिं । पुरओ सुक्कसहयारतरू तक्खणं फलि-ओ । दिन्नाइं फलाइं । अंबिणीए तेसिं जाया ते सुत्था । जाव सा चूअछायाए वीसमइ ताव जं जायं तं निसामेह जं तीए बालयाई पढमं जेमाविआ तेसिं भुत्तु-त्तरं पत्तलीओ तीए बाहिं उज्झिआओ आसि ताओ सीलमाहप्पाकंपिअमणाए सासणदेवयाए सोवन्नकचोलयरूवाओ कयाओ । जे अ उच्छिट्ठसित्थकणा भूमीए पडिआ ते मुत्तिआइं संपाईआइं । अग्गसिहा य सिहरेसु तहेव

दंसिआ । एअमचक्खुअं सासुए दट्ठूण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा वच्छ सुलक्खणा पइव्वया य एसा वहू ता पचाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीपेरिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुयं वालेउं सोमभट्टो। तीए पिट्ठओ आगच्छन्तं दिअवरं निअवरं दट्ठूण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ मग्गकूवओ। तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तदाणं अणुमोअंतीए अप्पा कूवंमि झंपाविओ। सुहज्झवसाणेण पाणे चइऊण ऊप्पन्ना कोहंडविमाणे सोहम्मकप्पहिट्ठे चउहिं जोअणेहिं अंबीअदेवी नाम महड्ढिआ देवी। विमाणनामेणं कोहंडी वि भन्नइ । सोमभट्टेण वि तीसे महासईए कूवे पडणं दट्ठुं अप्पा तत्थेव झंपाविओ। सो अ मरिऊण तत्थेव जाओ देवो। आभिओगिअकम्मुणा सिंहरूवं विउव्वित्ता तीए चेव वाहणं जाओ । अन्ने भणंति अंविणी रेवयसिहराओ अप्पाणं झंपावित्ता तप्पिट्ठओ सोमभट्टो वि तहेव मओ । सेसं तं चेव । सा य भगवई चउब्भुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंबिं पासं च धारेइ वामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्ततकणयसवण्णं च वण्णमुव्वहइ सरीरे। सिरिनेमिनाहस्स सासणदेवय त्ति निवसइ रेवइगिरिसिहरे। मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्वंगीणाभरणरमणिज्जा पूरेइ सम्मदिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्घसंघायं । तीए मंतमंडलाईणि आराहित्ताणं भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धिओ, न पहवंति भूअपिसायसाइणीविसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्तधणधन्नरज्जसिरिओ त्ति ।

अंबिआमंता इमे ।

वयवीअसकुलकुलजलहरिद्दयअकंनपेआइं ।
पणइणिवापावसिओ अंबिअदेवीइ अह मंतो ॥ १ ॥
पुयभुवणदेवि संपुक्खिपासअंकुसतिलोअपंचसरा ।
णहसिहिकुलकलअज्झासियमायापरपणामपयं ॥ २ ॥
वागुब्भवं तिलोअं पाससिणीहाउ तइअवन्नस्स ।
कूहंडअंबिआए नमु त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अन्ने वि अंबादेवीमंता अप्पपररक्खा वि सया सुरमणा जुग्गा मग्गसेमाइगोअरा य बहवो चिट्ठंति। ते अ तहा मंडलाणि अ इत्थ न भणिआणि गंथवित्थरभएणं ति गुरुमुहाओ नायव्वाणि ।

एअं अंबियदेवीकप्पं अविअप्पचित्तविरीणं ।
पायंतसुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

इति श्रीअंबिकादेवीकल्पः।

APPENDIX VII.

श्रीगिरिनारकल्पः ।



वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।
स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥
नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।
शिश्राय शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥
स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुचशिरसि चक्राणः ।
प्रव्रावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥
यत्र सहस्राम्रवणे केवलमाप्यादिशद्विसुर्धर्मम् ।
लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥
निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बसुखमाप यन्नितम्बस्थः ।
श्रीयदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥
बुद्ध्वा कल्याणत्रयमिह कृष्णो रूप्यरुक्ममणिबिम्बम् ।
चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥
पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।
काञ्चनवलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥
तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां चकार हरिः ।
श्रीनेमेर्मूर्त्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥
स्वकृतैतद्बिम्बयुतं हरिस्त्रिबिम्बं सुराः समवसरणे ।
न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥
शिखरोपरि यत्राम्बाऽवलोकनशिरसि रङ्गमण्डपके ।
शाम्बो वलानकेऽसौ गिरि० ॥ १० ॥
यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकसुरः प्रतीहारः ।
चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥
तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।
यत्र हरिश्चक्रेऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥
तीर्थेतिस्मरणाद्यत्र यादवाः सप्त कालमेघाद्याः ।
क्षेत्रपतामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभ्रुमर्चति मेघरवो बलानकं गिरिविदारणश्चके ।
यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥
यत्र सहस्राम्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैत्यानाम् ।
चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥
द्वासप्ततिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।
सचतुर्विंशतिकासौ गिरि० ॥ १६ ॥
वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवासूनोः ।
लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥
लेपगमेऽम्बादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।
रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥
काञ्चनवलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह बिम्बमिदम् ।
रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥
बौद्धनिपिद्धः सङ्घो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।
जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥
तारां विजित्य बौद्धान्विहत्य देवानवन्दयत्संघम् ।
जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥
नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।
श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥
नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्घेन ।
यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥
दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।
प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥
राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकुण्डनागझर्यादौ ।
यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥
छत्राक्षरघण्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्यस्ति ।
कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥
याकुड्यमात्यसज्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।
नेमिभवनोद्धृतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥
कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।
यन्मेखलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥

शत्रुञ्जयसम्मेताष्टापदतीर्थानि वस्तुपालस्तु ।
यत्र न्यवेशयदसौ गिरि० ॥ २९ ॥
यः षड्विंशतिविंशतिषोडशदशकद्वियोजनाऽस्त्रशतम् ।
अरषट्क उच्छ्रितोऽयं गिरि० ॥ ३० ॥
अद्यापि सावधाना विदधाना यत्र गीतनृत्यादि ।
देवाः श्रूयन्तेऽसौ गिरि० ॥ ३१ ॥
विद्याप्राभृतकोद्धृतपादलिप्तकृतोज्जयन्तकल्पादेः ।
इति वर्णितो मयाऽसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ ३२ ॥

इति श्रीधर्मघोषसूरिकृत श्रीगिरिनारकल्प ।

APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pârsvanâtha at Cambay.

ॐ अर्हं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तभूतलश्रीअलावदीनसुरत्राणप्रतिशरीरश्रीअलपखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभोनभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसूरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसूरिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसाहजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारितश्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहकेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितसकलस्वपक्षपरपक्षचमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्र्यमुद्रापहारिगुणरत्नाकरस्य गुरुगुरुतरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशत्रुंजयोज्जयंतमहातीर्थयात्रासमुपार्जितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोद्दडिकालंकारश्रीशांतिनाथविधिचैत्यालयश्रीश्रावकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसृमरयशःसंभारेण भ्रातृसाहराजुदेवसाहबोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणधरपुत्ररत्नसाहजयसिंहसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्रभावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुश्रावकेण कोद्दडिकास्थापनपूर्वं श्रीश्रावकपोषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामिदेवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्कं यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीर्भूयात श्रमणसंघस्य । श्रीः ।

APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarâ's installation of the image of Âdiśvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रीयसा० सलषणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-आसाधरानुजेन सा०लूणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा०सहज-पालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसा०सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन निजकुलदेवी (सचि) कामूर्त्तिः करिता । यावद्व्योमनि चंद्राकौं यावन्मेरुर्म-हीतले । तावत् श्री (सच) का मूर्तिः····

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे····ज्ञातीयराणकश्रीमहीपाल-देवमूर्त्तिः····संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमदूकेशवंशे वेसटगोत्रे सा० सलषणपुत्रसा०आजडतनयसा०गोसलभार्यासा०गुणमतिकुक्षिसम्भूतेन संघ-पतिसा०आशाधरानुजेन सा०लुणसीहाग्रजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०-सहजपालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसीहसा०सांगणसा०सोमप्रभृ-तिकुटुंबसहायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआसाधरमूर्त्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं-घ०रत्नश्रीमूर्त्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुव्रहीयमाशात्रिकं पूरित········ । ····लंकृतबाहुयुगो युगादिदेवं प्रयतः प्रणौति ॥ चिरं नंदतात् ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाषसु १० गुरौ संघपतिदेसलसुतसा०समरस-मरश्रीयुग्मं सा०सालिगसा०सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरि-शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

APPENDIX X

पेथडरासः

विणयवयणि वीनवउं देवि सामिणि वागेसरि
  हंसगमणि आकाशभमणि तिहूयणि परमेसरि ।
वीरजिणिंदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंघिहिं
  कवडजक्ष जक्षाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥
कोडीघनघरनिवासिणी य वंदउं अंबिकदेवि ।
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥
रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥
निसुणउ धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।
जास वोध निरवमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥
पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसधीर ।
अकलीअ कलि जिम क्षेतरीअ गरूउ सुहिर गंभीर ॥ ५ ॥
पोरूआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।
चांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥
जिम कंचण कसवट्टीयए पामिउ बहुगुणरेह ।
बंधवि पेथपरीपीयइ बहूअ कालि घरि एह ॥ ७ ॥
वइसीय पेथड पाटे बंधव वोलावइ
  नरसीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।
मणूयजन्म अतिदुलह अनइ श्रावयजम्म
  जीव लहइ बहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥
धणकणरयणभंडार ते सवि अछइ य असार ।
संचइ मोहनबंध ते सव्वि जाणे गमार ॥ ९ ॥
लाछितणउ जउ गरव करेई लीजइ राउल छल ह धरेई ।
मणूयजनम हवं सफल करीजइ जीवियपौवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥
अथिरलाछि किम थिर ह करीजइ जिणह धंम तस ऊपम दीजइ ।
सेत्रुजि रिसहसामि वंदीजइ विविहप्रकारिइं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

मिलि वंधवि कीयउ वयण प्रमाण एकचित्ति सवि समाण जाण।
साते वंधवि कीयउ विचार सविहुं काजि लिउ नरसीअ भार ॥ १२ ॥
धम्मीय निसुणउ लोयमज्झि संघतणउ समाहउ भवीअणउ
आणूंअ दीजइ भत्तिजत्ति भवीया लहइ लाहउ धणकणउ।
पेलसि रूलीयइं रंगि रास हवं नवरस नवरंग नवीयपरे
सुणि सामहणी संघतणी जो करइं निरंतर घरेहिं घरे ॥ १३ ॥
जोइन देवालउं सामुहिउं तीहं माहि सुरेसर जिण ठवीय।
देसदेसाउर वरनयर तिहिं लेवि कंकोत्री पाठवीय ॥ १४ ॥
पाटणि पइसीय सामति तहिं कर्णनरेसर भेटीय वीनवीउ।
तीरथजात्र जीयवउं देव तहिं देसवटउ सपसाउ कीउ ॥ १५ ॥
तहिं वेगि लेउ पण आवीउ ए सयलसंघ तहिं हरसीय नीयमणि
नयर पसाइरउ कीधउ तक्खणि तहिं नाचइं कुतिगकुतिगीयां।
घरि घरि वहसीय लोय मनावीय साजणसाहसरिस संम्हावी गामागर-
पुरपाटणह ॥ १६ ॥
दूसमसमइ अहि जिम तिरीगु तारणतरंड रिसह मनि धरीय फल
लीजइ जनमहतणउं।
एकभावि नर जिणह धम्म परिरिहवरकलीय रमाउलीय ॥ १७ ॥
केवि कुतिग नर जोइं निरंतर भलां भलेरां अतिहिं वहिला रूपभवर।
कामिणि धामिणि धवल दियंती गायंती गुण जिणवरह।
अतिऊमाहु जात्र समाहउ करीयल कंनि सुणंतीहं य ॥ १८ ॥
ते चउरा रूडा तडयां ताडी नवांनवेरां दीसइं गेहणगण सयण।
ते घणाघणेरा समविसमेरा संखि न दीसइं असंखि पुण ॥ १९ ॥
देवालइ वालीय नयणि विसालीय दिंतीय ताली रंगि फिरंती हरिसभरे।
तहिं नाचइं खेला वहुयत वेला बाला भोला लउडा रसि रमइं ॥ २० ॥
अतिरंगिं पूरी दिंता भमरी नवपरि नवरंगइ तियसपरे।
परममहोच्छव कीउ देवालइ फागुणपंचमि वीतसीयालइ प्रस्थानं कीयं
पवरदिणि ॥ २१ ॥
संघपति सोहडदेउ वीनवीई तीरथजात्र जाइवउं गोसामीय।
सैलहुत सीपामणइ वहुय परघउ पणवि रहावीय।
वहथमह्ल लेउ पत्तनि आवीय संघ देवालइन रोपीउ ए ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सवि पूरीय
महोच्छव कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ फागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।
हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥
वहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइं पाघरीय ।
पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥
पहिलउं दीधी लागि जोइन देवालां संचरइं ए ।
अखंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीलूयाणइ रहीय ॥ २६ ॥
चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।
तींहं दीन्हा वास भास रास रुलीयामणां ए ।
देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥
वडराउत वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।
देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥
पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।
पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥
दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।
वेगि पहूता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥
आंगणि दीन्हा वास देवालां पायलि फिरीय ।
भविया पणमउ पास जिणह भूयण रुलीयामणउं ।
कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेषणउं ए ॥ ३१ ॥
संघह कीउं वत्सल्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।
चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥
सहू यालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।
नयणि निहालइ लोक पुणधवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥
पूजीया जिणभूयणाइं भविया मणोरह चित्ति धरे ।
कीउं पीयाणउं भावि अवलीयछीतीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥
पेथावाडइ जाइ भेटीय मंडणदेव तहिं ।
लाधउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपवरो ॥ ३५ ॥
भयु मनि करिवउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।
गिया ते जंबू जाम संघह पार न पामीय ए ।

भेटीय झलु नाम पणवि पीयाणउं धामीयहं ॥ ३६ ॥
भडकूए आवास गोहिलसंडउ धरीय मनि ।
वहुगुणवंत सुजाण राण पहूतउ तेण खणि ॥ ३७ ॥
संघह दीन्ही धीर वलीय संघपति एकमनि ।
राणपुरे संपत्त संघ कनालइन रहइ ए ॥ ३८ ॥
चलीय सरीस उपराण वसहसंड संघपति भणइ ए ।
मइं मन मेल्हि निरास प्राण राणहं मन हरेसो ॥ ३९ ॥
वइठउ संघपतिपासि रंजीय ल्लीयायत हरिसे ।
गुणगरूउ सुवराउ लोलीयाणपुरसइं घणीय ॥ ४० ॥
धरउ धर्मनउ ठाउ भवीय भाविं तीणइ वह भणीय ।
दीन्ह पीयाणनीयाण उपरिं पीपलाइभणीय ।
चउरा दीन्ह विहाण डूंगरा देषीय मनि रूलीय ॥ ४१ ॥
दीठउ डूंगर दूरिथियां चडीय सरोवरपाले ।
संघपति दईं वधामणी हरिपीऊ ए हरिपीऊ ए हरिपीउ नयणि निहाले ॥४२॥
कुंकुमि च्छडउ दिवारीउ ए तहिं पाथरीया पाट ।
चाउलि चउक पूरावीउ ए सपरिपरे सपरिपरे सपरि पढइं वहुभट ॥ ४३ ॥
पढइं भाट संघपति निसुणि पेथड पुण्यपवित्त
चंडसीहघरि अवतरीउ गुरुदेवे गुरुदेवे गुरुदेवे सुय सत्त ।
धापीउ डूंगर पण तिलउ फूलपगर ते चंग
पाउलु नाचइं रंगभर गायंती ए गायंती ए गायंती मनह सरंग ॥ ४४ ॥
कापड कंचण दिन्ह तहिं वहुगुण पूरी आस ।
संघपति करइ वधामणउं चलीऊ ए चलीऊ ए चलीउ पालीयताणइ वास॥४५॥
गंगाजल जिम निर्मलउं ललतासर सुपवित्त ।
सीधषेत्र तीरथतिलउ तिससयरे तिससयरे तिससयरे संपत्त ॥ ४६ ॥
मरुदेवि सामिणि पय नमीय संतिनाह सुरराउ ।
पालित्तसूरिप्रतिष्ठिउ ए सोलम् ए सोलम् ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥
डूंगरसिरि जे पाहरीय कवडिजक्खपडिहारो ।
संघ जि सांनिध सो करइ पहिलं ए पहिलं ए पहिलं पास जुहारे ॥ ४८ ॥
अणुपम सर देषेवि तहिं पहूंता पालिदूयारि ।
सरगारोहण दिट्ठ तहिं अहिणव ए अहिणव ए अहिणव ईणं संसारे ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोईई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।
नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥
मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोटींगणां करेउ ।
पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण देउ ॥ ५१ ॥
दीठल्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पढमजिण विमलगिरे ।
भवीयच्छुणंत सामी लागल्ला तम्ह थई नामिं नमो य नमो नमो सेत्रुजसिहरो५२
वायवद्धामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि रलीआमणुं ए
भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुध्व जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥
धुणंति दीणरीण जीण ऊतारंति जललवण नम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥
कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु
गुणनिलउ देवाधिदेव जोउ वेलवउ सेवत्रीपाडल वहल कुसुम परमल विपुल पूजहे । वायवद्धामणं ॥
भवीयमणि बहुआणंदि आरती ऊतारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसहसामि ।
तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि वद्धावीय लि । धन धामी वद्धामणउं ॥
भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुथीय जण मगण दाणु
नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवल्लि तालनिनाद सुणि पूरीय भवण । वाइवद्धामणुं० ॥
आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि सुखिवर ।
तम्हची पाय ए कमलभमर भविक जन जयउ जगनाथ तुं जगतगुरो ॥ वायवद्धाम० ॥
अखंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन मिलीउ ।
आयस मगीय जव चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि निचंतीय पेथटकंठि टोडर ढलीउ । वायवद्धामणं० ॥
आयस मगिय पेथ ज चलीउ ढलीय टोडर संघपति मोकलावए
सयलसंघो पहुत पालीताणए घरि घरि साहमीवच्छल कारए ।

वावीय वित्त तिहि सयलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं रूपावटी चलीय पीयाणए ।
वडउ संघातिपति लोक वखाणए सेलटीया संघ पहुत तहि चलयउ अखंड पीआणए ।
जाइ अमरेलीयपीयाणए पहुतउ वेगि तहिं पण विकीयाणए विसमगिरि लं-घीयउ पूरि मनि आसह ॥
तेजलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकवि भणइं गढवि स्रइंगार ।
गरूअउ दीसए पोळिपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥
मंडलकि मंडिउ वास तहिं विसमए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसयए ।
गिरि गुरूउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देव प्रसिद्धउ वहि सोवन-रेख नदी जलपूरीय ।
कालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंत्रिवाहड देवि पाज करावीय धवलीय वर परव तीण करावीय ।
विसम डूंगर गुरूउ गिरनारो चडीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो
दिनि चउपनि वरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिंद्र वर तसु सिहरे सिज्झए ॥
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहुतउ ऊलट आंगिहिं अतिघणउ देपीउ
राजलकंत । तहि नाचिनए ए सहिलडी ए लला गीय गिरिनारे
राजलिवर कलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहिं नाचिनए०॥
अंग पखालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवीत ।
इंद्रमहोत्सव आयरंभी तहिं वयठ लि बहुधणवंत । तहिं नाचिनए सहि० ॥
इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि ।
सफलमणोरह पूरीय संघपति चडीयलि इन्द्रविमानि ॥ तहिं नाचिनए० ॥
चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।
सामलसामि किरि संघपति नंदउ वहत परीस ॥ तहिं नाचिनए० ॥
गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिमीम ।
नव कलीय लि आरती उत्तारउ मंगलिक संघपति ईम ॥ तहिं ना० ॥
अंचिकि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगन्नाथ
सांबपजून उदारीय वलीयउ पेथ जन्म सुकीयाथ ॥ तहिं नासहलडी ए ल्ली-या गई गिरिनारि ॥

सोमनाथचंद्पह वंदीय देखीउ वलीउ जाम
दिउ पीयाणं हिव मन रहिसउ मंटलिक भणइ ईम ॥ तहिं ना० ॥
दिउ पीयाणं वेगि तहिं हरीयाला सूडा रे सरचाहे संपत्त मनीला सूडारे ॥

इति श्रीनागरादवंशमौक्तिकव्य० पेथडरासः समाप्तः ॥
